RNI-MPHIN/2005/14721
Po-Malwa Div/244/2020-22
Desp. 02 March, 2022

अंक – 09 (मासिक) वर्ष – 17 मार्च, 2022 मूल्य 20/–

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

हम सफल इसलिए सबल

वैवाहिक डायरेक्ट्री
श्री माहेश्वरी मेलापक 2022
का प्रकाशन प्रारंभ

Visit us @
srimaheshwaritimes.com

बात हम सबकी
सुने हर शनिवार

RR KĀBEL

MAKE THE RIGHT CHOICE FOR YOUR HOME

DO THE AKALMAND THING!

RR GLOBAL
RAM RATNA GROUP

R R KABEL LTD. Regd. Office : Ram Ratna House, Oasis Complex, P. B. Marg, Worli, Mumbai - 400 013.
T : +91 - 22 - 2494 9009 / 2492 4144 • **F** : +91 - 22 - 2491 2586 • **E** : mumbai.rrkabel@rrglobal.in
Corp. Office : 305/A, Windsor Plaza, R. C. Dutt Road, Alkapuri, Vadodara - 390 007.
T : +91 - 265 - 2321 891 / 2 / 3 • **F** : +91 - 265 - 2321 894 • **E** : vadodara.rrkabel@rrglobal.in
www.rrkabel.com • www.rrglobal.in

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

RNI-MPHIN/2005/14721

अंक-09 मार्च 2022 वर्ष-17

प्रेरणास्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री नेमीचन्द तोषनीवाल (कोलकाता)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)
श्री रामकुमार टावरी (दिल्ली)

अतिथि सम्पादक
निर्मला मल्ल, कोलकाता

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
गोविन्द मालू (इन्दौर)
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)
प्रो. कल्पना गगडानी (मुम्बई)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे),
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

▸ श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
▸ सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
■ PNB A/c. No. : 0459002100043471
IFSC- PUNB0045900
■ ICICI A/c. No. : 030005001198
IFSC- ICIC0000300

Tariff of Membership
Rs. 800/- for Three years
Rs. 3100/- for Life Time (12 Years)

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस
(8 मार्च)

जगत् की समस्त नारी शक्ति को हार्दिक बधाई, मंगलकामनाऐं एवं नमन...

श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार

स्त्री हैं तो पुरुष हैं

विचार क्रान्ति

संसार में सन्तति के विस्तार और संतुलन के लिए यद्यपि पुरुष और स्त्री दोनों की सत्ता आवश्यक है तथापि स्त्री का स्थान पुरुषों की तुलना में अधिक ऊँचा है। पुरुष प्रधान समाज की इस मान्यता से परे कि स्त्री पुरुषों के अधीन हैं, सच तो यह है कि स्त्री न हो तो पुरुष का अस्तित्व ही संकट में पड़ जाए। शास्त्र प्रमाण है कि 'स्त्रियाँ पति के आत्मा के जन्म लेने का सनातन पुण्य क्षेत्र हैं। अन्यथा ऋषियों में भी क्या शक्ति है कि बगैर स्त्री के सन्तान उत्पन्न कर सकें!'

ये अंतिम पंक्तियाँ महाभारत के आदिपर्व में देवी शकुंतला के श्रीमुख से बतौर प्रतिप्रश्न महाराज दुष्यंत से कही गई है। जो पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की महत्ता को शाश्वत रूप से सिद्ध करती है। कथा है कि दुष्यंत ने महर्षि कण्व की पालिता पुत्री शकुंतला से गन्धर्व विवाह कर लिया था। शकुंतला जन्म से महर्षि विश्वामित्र व अप्सरा मेनका की पुत्री थी। एक बार दुष्यंत शिकार खेलते हुए कण्व के आश्रम पहुँचे और शकुंतला के सौंदर्य पर मोहित हो उससे गुपचुप विवाह कर लिया। उसे अपनाने का वचन देकर दुष्यंत अपनी राजधानी लौट आए मगर राजकाज में व्यस्त होकर शकुंतला को भूल गए। कण्व के आश्रम में शकुंतला ने एक पुत्र भरत को जन्म दिया। इसी भरत के नाम पर अपना देश भारतवर्ष कहलाया। जब पुत्र को उसका यथोचित राज्य अधिकार और स्वयं के लिए पत्नी का सम्मान पाने शकुंतला अपने पति दुष्यंत के महल आई तो दुष्यंत ने उसे पहचानने तक से मना कर दिया।

कालिदास के प्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम' से इतर महाभारत की यह कथा बताती है कि दुष्यंत के इस व्यवहार से क्रोधित होकर शकुंतला ने किस प्रकार अपने राजा पति को आइना दिखाया। भरी राजसभा में अपने अधिकार के लिए पति को फटकारते हुए शकुंतला के कहे वचन स्त्री मात्र की महिमा का प्रतिपादन करने वाले हैं।

शकुंतला ने कहा कि पुरुष होने का अहंकार उचित नहीं है। इसलिए कि 'पति ही पत्नी के भीतर गर्भ रूप में प्रवेश कर पुत्र रूप में जन्म लेता है। यही जन्म देने वाली स्त्री अर्थात् जाया का जायात्व है।' आशय है स्त्री न हो तो पुरुषों का जन्म ही कैसे हो?

एक स्त्री पुत्री, पत्नी और माँ के रूपों में प्रायः तीन आयाम पर अपनी जीवन यात्रा करती है। इनमें पुरुषों द्वारा उसकी सत्ता को सर्वाधिक चुनौती प्रायः पत्नी की भूमिका में मिलती है। दुष्यंत भी यही चूक कर रहे थे। तब शकुंतला ने कहा, 'भार्यावन्तः क्रियावन्तः सभार्या गृहमेधिनः। भार्यावन्तः प्रमोदन्ते भार्यावन्तः श्रियान्वितः।।' अर्थात् स्मरण रखो कि जिनकी पत्नी है वे ही यज्ञ आदि कर्म कर सकते हैं। सपत्नीक पुरुष ही सच्चे गृहस्थ हैं। पत्नी वाले पुरुष सुखी और प्रसन्न रहते हैं। जो पत्नी से युक्त हैं, वे मानो लक्ष्मी से सम्पन्न हैं। क्योंकि पत्नी ही घर की लक्ष्मी हैं।

साधो! सार यह कि पुरुष की सत्ता सदा सर्वथा स्त्री से है। इसी कारण हमारे शास्त्रों ने स्त्री को देवी कहकर उसके सम्मान का निर्देश दिया है। जिस समाज में स्त्री सम्मानित होती है, वही उन्नति करता है और उनकी सन्तति संसार को धन्य करती है।

■ डॉ. विवेक चौरसिया

सम्पादकीय

मन से ''स्वाश्रिता''

त्वं वैष्णवी शक्तिनंतवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतु।। (दुर्गा सप्तशति)

अर्थात् तुम अनंत बल संपन्न वैष्णवी शक्ति हो। इस विश्व की बीजरूपा परा माया हो। देवी, तुमने इस समस्त जगत् को भलीभांति मोहित कर रखा है। तुम्हीं प्रसन्न होने पर पृथ्वी पर मोक्ष की प्राप्ति कराती हो।

आज विश्व में महिला को बराबरी का दर्जा देने की बात कही जाती है, लेकिन यह पाश्चात्य विचारधारा है। क्योंकि वहां महिला को सामाजिक, धार्मिक या सांस्कृतिक किसी भी स्तर पर कोई अलग से सम्मान प्राप्त नहीं है। लेकिन भारतीय संस्कृति की बात की जाए तो हमारा पूरा प्राचीन साहित्य, संस्कृति और धर्म नारी के सम्मान को सर्वोच्च मानता है। इसलिए यहां नारी को बराबरी का दर्जा देने जैसे मुहावरे का कोई औचित्य ही नहीं है। यह अलग बात है कि मध्यकाल में मुगलकाल में नारी की अस्मिता को बचाने के लिए उसकी सुरक्षा बढ़ाई गई और इस प्रयास में नारी को इतना कमजोर मान लिया गया कि वह स्वयं अपनी ताकत को भूल बैठी। उसने स्वयं को अबला मान लिया। लेकिन इस दौर में भी कई नाम हैं जो नारी शक्ति को जीवंत रखने के प्रमाण बनकर उभरे। आधुनिक भारत में एक बार फिर नारी शक्ति ने अपना औजस्व प्रखर करने की मशाल थाम ली है। इसका झंडा माहेश्वरी समाज ने उठाया। समाज के महिला संगठन की सफलताएं इसकी ध्वज पताकाएं हैं। संगठन ने अपने इस लक्ष्य को और आगे बढ़ाने के लिए नया बीड़ा उठाया है- स्वश्रिता अभियान। संगठन की महिला अधिकार, सुरक्षा और सशक्तिकरण समिति के तहत अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च से यह अभियान शुरू होगा। इसमें उन महिलाओं को अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए मदद का हाथ बढ़ाया जाएगा जिन्हें ऐसी मदद की आवश्यकता है। इस प्रोजेक्ट का दायरा बहुत बड़ा है। समाज की ऐसी महिलाओं को प्रशिक्षण व संसाधन देकर सबल बनाने के लिए महिला संगठन का यह अभियान निश्चित ही स्तुत्य है। सबसे अच्छी बात यह है कि इस अभियान को अपने लक्ष्य तक पहुंचाने में महिलाएं ही मददगार बन रही हैं। महिला संगठन का यह अभियान अपने लक्ष्य को हासिल करे, इसके लिए श्रीमाहेश्वरी टाइम्स की ओर से शुभकामनाएं।

यह अंक इसलिए महिलाओं को समर्पित करते हुए हर्ष है कि समाज की महिलाओं ने अपने आप को कभी अबला नहीं समझा। इसके दो कारण हैं, एक समाज में महिलाओं को कभी कमतर नहीं आंका गया, दूसरा महिलाओं ने अपने आप को आगे बढ़ाने के लिए स्वयं पहल की। इस अंक को हमने ऐसी ही महिलाओं पर केंद्रित किया है जिन्होंने अपने बूते समाज में अपनी अलग पहचान कायम की। जो समाज की अन्य महिलाओं के लिए सदैव प्रेरणीय बनी। जिन्होंने हार नहीं मानी और अपना मुकाम हासिल किया। अकोला की मनीषा भंसाली हो जिन्होंने राजनीति और समाजसेवा के माध्यम से अपने आप को स्थापित किया या देवास की कृष्णा देवी सिंगी जिन्होंने कृषि जैसे उद्यम में सफलता की फसल लहलहाकर यह साबित किया कि महिला के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। उषा सोमानी ने बाल साहित्य लेखन, गुवाहाटी की चंचल राठी ने अपनी विशिष्ट कला, लुधियाना की जयश्री पेडीवाल व रिंपी कोठारी ने आध्यात्मिक क्षेत्र में सफलता हासिल कर समाज को संदेश दिया कि यदि महिलाओं को मौका मिले तो वह कहीं भी कमजोर नहीं है। यह वे महिलाएं हैं जो मन से स्वाश्रिता बनीं। उन्होंने प्रयास किया और उसे सफलता तक पहुंचाया। निश्चित ही उनका व्यक्तित्व उन सभी के लिए प्रेरणास्त्रोत है जो कुछ कर दिखाने के लिए आतुर हैं। यह अंक महिला पाठकों के लिए प्रेरणीय बनें यही हमारा प्रयास है। इसके अलावा सभी स्थायी स्तंभ व आलेखों के साथ पठनीय सामग्री आपको जरूर रुचिकर लगेगी, इस विश्वास के साथ आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा है।

जय महेश!

पुष्कर बाहेती
सम्पादक

अतिथि सम्पादकीय

वृहत्तर कोलकाता प्रदेश अध्यक्ष के रूप में पहचान रखने वाली निर्मला मल्ल का जन्म कोलकाता में श्री नेमीचंद तोषनीवाल के यहाँ 24 सितंबर 1957 में हुआ। बचपन से सेवा भाव अपने पिताजी से सीखा व पढ़ाई कोलकाता में हुई। इसके बाद 13 जुलाई 1972 को श्री राम किशन मल्ल के सुपुत्र श्री मनमोहन मल्ल से विवाह बंधन में बंध गईं। सुसराल में आकर अपने पिता की तरह ही ससुर को भी समाज सेवा में तत्पर देखा तो सेवा कार्य के साथ-साथ अपने घर और व्यवसाय में भी रुचि रखी। समाज की सदस्याओं ने उनके सेवा कार्यों को देखते हुए 2017 में तीन वर्ष के लिए वृहतर कोलकाता प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन की बागडोर उनके हाथों में दी और वर्ष 2017 के सितंबर महीने में वृहत्तर कोलकाता प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्ष बनी। जबसे इस संस्था की ज़िम्मेदारी अपने हाथों में ली तब से उन्होंने इस संस्था में सेवा कार्य, राष्ट्रीय स्तर पर कई प्रतियोगिताएं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा अखिल भारतीय स्तर पर अधिवेशन आयोजित करवाऐ। जनवरी 2020 में पुनः कार्यवाहक कोलकाता प्रदेश अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी उन्हें सौंपी गई।

नारी पुरूष दोनों का योगदान समान

माहेश्वरी समाज ने हमेशा ही नारी को उन्नति का आकाश दिखाने में कभी कोई कसर नहीं रख छोड़ी। कारण यह रहा कि हमारा समाज पूर्णतः सुलझी हुई साफ-सुथरा तथा प्रगतिशील सोच वाला समाज है। हम जानते हैं कि किसी भी समाज का विकास नारी-पुरुष दोनों के योगदान के बिना अधूरा होता है। दोनों समाज रूपी रथ के पहिए हैं। किसी एक पहिये के बल पर रथ को खींचना असंभव है। अतः हमने दोनों के विकास पर ही हमेशा बल दिया है। यही कारण है कि देश में शारदा एक्ट के रूप में नारी उत्थान की शुरुआत करवाने वाला भी माहेश्वरी समाज ही है। इसी सोच का नतीजा है कि माहेश्वरी नारी देश-विदेश में लगभग हर क्षेत्र में अपनी सफलता की पताका फहरा रही है। आज माहेश्वरी नारी की क्षमता व दक्षता को सम्पूर्ण विश्व देख व समझ रहा है और उसकी प्रशंसा भी कर रहा है।

उन्नति के लिये कानूनी रूप से खुला आकाश देना तो जरूरी है, लेकिन यही मात्र काफी नहीं है। कई पारिवारिक जिम्मेदारी व आर्थिक परेशानियाँ भी उन्नति के मार्ग में रोड़ा बन जाती हैं। ऐसे में नारी को सामाजिक व आर्थिक दोनों दिशाओं में आत्मनिर्भर बनाने की जरूरत है। इसी को ध्यान में रखते हुए मैंने अपने स्तर पर तथा संगठन के माध्यम से यथोचित प्रयास किये। इसके अंतर्गत समाज में पिछड़ी महिलाओं को सशक्त बनाने का संकल्प लेते हुए परिवार चलाने वाली महिलाओं को रोज़गार उपलब्ध कराने के लिए सिलाई मशीनें प्रदान करना, अपने समाज के जरूरतमंद बच्चों की स्कूल फ़ीस, कॉलेज फ़ीस जमा करा कर उनका शिक्षा के प्रति हौसला बढ़ाना आदि जैसे प्रयास किये हैं। संस्था के माध्यम से अपने समाज की युवतियों को एवं महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हुए कई सांस्कृतिक आयोजन तथा कम्प्यूटर प्रशिक्षण, व्यक्तित्व विकास एवं जरूरतमंद बच्चों एवं परिवारों की सेवाओं के लिये काम किए जाते हैं।

मैं समाज में यही संदेश देना चाहती हूँ कि महिला और पुरुष दोनों ही समाज की धुरी हैं, एक को कमज़ोर कर संतुलित विकास हो ही नहीं सकता। जब तक देश की आधी आबादी सशक्त नहीं होगी हम विकास की कल्पना भी नहीं कर सकते। समय की माँग है और समाज की ज़रूरत भी है कि महिलाओं को भी पुरुष के समान अधिकार मिलें। वह भी उनके साथ क़दम से क़दम मिलाकर चले, ताकि हमारे समाज के सभी परिवार आर्थिक रूप से संपन्न रहे। लेकिन इसके साथ नारी से यह अपेक्षा भी है कि वह अपनी सकारात्मक सोच के साथ प्रगतिवादी हो ना कि विग्रहवादी। नारी में वह शक्ति है जो किसी भी देश व समाज को उन्नति के शिखर पर ले जा सकती है और उसकी नकारात्मक सोच पतन के गर्त में। अतः हमें अपना उद्देश्य सकारात्मक रूप में इस तरह तय करना है कि भावी पीढ़ी भी हमारा अनुसरण कर सके और हम संस्कारों की संवाहक भी बन सकें। याद रखें पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलते हुए हमें प्रकृति प्रदत्त अपने मातृत्व के कर्त्तव्य से भी दूर नहीं होना है।

निर्मला मल्ल, कोलकाता
अतिथि सम्पादक

श्री धरजल माता

राजस्थान के पोकरण में स्थित माताजी का मंदिर सभी समुदायों के लिए श्रद्धा और भक्ति का प्रमुख केन्द्र है। सालभर यात्रियों का आवागमन यहां होता है। चैत्र और शारदीय नवरात्र में विशेष आयोजन होते हैं। कुलदेवी श्रृंखला में इस बार धरजल माताजी के दर्शन कीजिए-

टीम SMT

धरजल माताजी नावंधर खांप में गांधी, धीरन, धीरानी आदि की कुलदेवी हैं।

राजस्थान के पोकरण में शहर के बीचोंबीच गांधी मोहल्ला में धरजल माताजी का भव्य मंदिर स्थित है। मंदिर का जीर्णोद्धार 50 वर्ष पूर्व किया गया है। यहाँ पर कुलदेवी की प्रतिमा लगभग 100 वर्ष पुरानी है। यहाँ माताजी की अखण्ड ज्योत के साथ प्रतिदिन दोनों समय आरती होती है। साल की दोनों नवरात्रि में नौ दिनों तक भव्य कार्यक्रमों का आयोजन होता है। अष्टमी को हवन एवं विशाल भंडारे का आयोजन किया जाता है। जिसमें सम्पूर्ण भारतवर्ष के नावंधर परिवार के लोग सम्मिलित होते हैं। मंदिर में फलों द्वारा विशेष श्रृंगार एवं विद्युत सज्जा की जाती है। यहाँ सालभर नावंधर परिवार के लोग भारतवर्ष से आते रहते हैं।

सर्वसुविधाएं उपलब्ध- धरजल माता मंदिर का सार्वजनिक ट्रस्ट है जो पूरे भारत के नावंधर परिवारों द्वारा संचालित होता है। मंदिर प्रांगण में रहने एवं खाना बनाने की बर्तनों सहित पूर्ण व्यवस्था है। मंदिर की व्यवस्था में श्री शंकर गांधी, कोषाध्यक्ष श्री जुगल गांधी एवं गांधी परिवार पोकरण का विशेष सहयोग रहता है।

अन्य तीर्थ- इसके पास ही नावंधर समाज का सुधलाई तालाब है जहाँ शिवजी का मंदिर स्थित है। तालाब पर मोर एवं पक्षियों को दाना डाला जाता है। सुबह सैकड़ों की संख्या में मोर आकर नाचा करते हैं। पोकरण से मात्र 6 कि.मी. की दूरी पर बाबा रामदेवजी का तीर्थ स्थल है।

कैसे पहुंचे- पोकरण जोधपुर-जैसलमेर लाइन पर जोधपुर से 160 कि.मी. की दूरी पर हर समय बस सेवा उपलब्ध रहती है ट्रेन भी इस लाइन पर उपलब्ध है।

महिला संगठन ने की नारी सशक्तिकरण की तैयारी

देशभर में सिलाई प्रशिक्षण के साथ सिलाई मशीन भेंटकर बनाऐंगे उन्हें आत्मनिर्भर

कोटा। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की महिला अधिकार सुरक्षा एवं सशक्तिकरण समिति 'स्वाश्रिता' ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च के लिये एक प्रोजेक्ट के रूप में हर एक नारी को "स्वाश्रिता" बनाने का संकल्प लिया है। इस प्रोजेक्ट के अंतर्गत हर उस महिला को सिलाई मशीन के साथ स्वाश्रिता बनाने की कोशिश होगी जो सही मायने में पति की साथी बनकर या उसकी अनुपस्थिति में अपने घर की रीढ़ बनकर अपने घर को चलाने की कोशिश कर रही है। उक्त जानकारी आशा माहेश्वरी (अध्यक्ष), मंजू बांगड़ (महामंत्री), गिरिजा सारडा (प्रभारी प्रमुख), उषा मोहंता (समिति प्रभारी) आदि ने देते हुए बताया कि अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की महिला अधिकार सुरक्षा एवं सशक्तिकरण समिति ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च 2022 के लिए एक नया प्रॉजेक्ट तैयार किया है, 'स्वाश्रिता' "चलिए मिलकर सिलते हैं सपना हर एक नारी को - हर एक बहन को स्वाश्रिता बनाने का, एक ऐसी महिला जो खुद पर आश्रित है किसी और पर नहीं।" इस प्रोजेक्ट के अंतर्गत हर उस महिला को सिलाई मशीन के साथ स्वाश्रिता बनाने की कोशिश होगी जो सही मायने में अपने घर को चलाने की कोशिश कर रही है। इसके लिए सिंगर की सिलाई मशीनें 30 प्रतिशत डिस्काउंट पर ग्रास रूट तक अवेलेबल कराने का निश्चय किया गया है।

देश भर में चलेंगे प्रशिक्षण केंद्र

जिन महिलाओं को सिलाई नहीं आती है उन्हें सिंगर इंडिया से एफिलिएटेड करीब 100 सेंटर जो भारत भर में फैले हैं उनमें बहुत कम शुल्क पर प्रशिक्षण, चाहे वह तीन महीने का बेसिक कोर्स हो या 6 महीने का डिप्लोमा कोर्स, प्रदान किया जायेगा। इन सेंटर्स में सिंगर का करिकुलम और सर्टिफिकेट प्रदान किया जाता है। यदि समाज की महिलाऐं चाहें तो अपने ही जिले तहसील या प्रदेश में कम-से-कम दस मशीन के साथ अपने सिलाई सिखाने के सेंटर को सिंगर से रजिस्टर करवा सकती हैं। इसके अंतर्गत प्रदेश सेंटर खोलना चाहता है तो 6 मशीन वे लगायेंगे तो अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन 4 मशीन का सहयोग हर सेन्टर को भेजेगा। अब तक 14 सेंटर खुलने की तैयारी चुकी है।

ऐसे होगी प्रोजेक्ट की तैयारी

यह 3 सूत्री कार्यक्रम लेकर सभी पदाधिकारी व सदस्या अपने आसपास की माहेश्वरी महिलाओं को प्राथमिकता देते हुए हर सदस्या को स्वाश्रिता यानि आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रतिबद्धता जाहिर करने के लिए इस प्रोजेक्ट में हिस्सा बनेंगे। इसके लिए जल्द से जल्द पदाधिकारियों को जिला और तहसीलों से लिस्ट भेजनी होगी कि किस जिले को कितनी मशीनें चाहिए ताकि मशीनों का आर्डर कर सकें। सहयोग राशि के रूप में

आशा माहेश्वरी
अध्यक्ष

मंजू बांगड़
महामंत्री

गिरिजा सारड़ा
प्रभारी प्रमुख-स्वाश्रिता

आप प्रति व्यक्ति 2100 रुपए /3100 रुपए भी इकट्ठा कर सकते हैं। जो सदस्यायें पूरी मशीन अपने या अपने किसी परिजन के नाम पर देना चाहती हो तो उसका नाम लिखवा कर दे सकते हैं। महाराष्ट्र में करीब 6000 किसानों ने कर्ज से तंग आकर आत्महत्या कर ली थी। उनके परिवारों की सहायता के उद्देश्य से व विधवा महिलाओं के लिए और तेलंगाना में जिन परिवारों में कन्या अधिक हैं, पड़ोसी राज्यों से आए हुए मजदूर उन से विवाह कर बाद में उन्हें वहीं छोड़ गए ऐसी कुमारी माताओं के लिए अपना घर चलाने के उद्देश्य से 10-10 मशीन के साथ सिलाई सिखाने के सेंटर खोलना भी हमारा उद्देश्य होगा। यह दो सेंटर अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के दिन हमारे समाज की तरफ से महिलाओं को समर्पित होंगे। इसमें 50रुपए से लेकर 50 मशीनों तक का सहयोग महिलाओं से प्राप्त हो रहा है।

साँप के दाँत में, बिच्छू के डंक में और
इंसान के मन में कितना जहर है
बता पाना मुश्किल है।

श्री माहेश्वरी टाईम्स के स्वामित्व के बारे में जानकारी देखें
नियम - 4

प्रकाशक का नाम	श्री माहेश्वरी टाईम्स (मासिक)
भाषा	हिन्दी
प्रकाशन की अवधि	2 तारीख (हर माह की अंग्रेजी)
प्रकाशक का नाम	सरिता बाहेती
मुद्रक का नाम	सरिता बाहेती
संपादक का नाम	पुष्कर बाहेती
क्या भारत का नागरिक है?	हाँ
मुद्रक	ऋषि ऑफसेट, गोलामंडी, उज्जैन (म.प्र.)
प्रकाशन का स्थान	ऋषि ऑफसेट, गोलामंडी, उज्जैन (म.प्र.)

उन व्यक्तियों के नाम व पते जो सरिता बाहेती समाचार पत्र के स्वामी हो तथा पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हो।

मैं सरिता बाहेती एतद् द्वारा घोषित करती हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य है।

महिला संगठन की द्वितीय बैठक ऑनलाईन सम्पन्न

जूम पर पहुँचे घर-घर, पीपीटी से योजनाओं की दी जानकारी

कोटा। महिला संगठन की द्वितीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक 'भाव योग' 2022 कोविड की तीसरी लहर के कारण उत्पन्न हुई परिस्थितियों में गाइडलाइन का पालन करते हुए पूर्व प्रस्तावित महिला महा अधिवेशन को स्थगित करके जूम सभागार में ही गत 7-9 जनवरी तक आयोजित की गई। प्रथम दिवस 7 जनवरी को दीप प्रज्वलन के साथ उद्घाटन सत्र का शुभारंभ हुआ। महामंत्री मंजू बांगड़ ने चिर परिचित काव्यात्मक शैली में सभी का स्वागत अभिनंदन करते हुए संचालन सूत्र आंचलिक सह प्रभारी दिल्ली प्रदेश की उर्वशी साबू को सौंपा। राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी ने सभी आमंत्रित अतिथिगण, पदाधिकारी गण, पूर्व अध्यक्ष, संरक्षक मंडल, समिति प्रभारी, कार्यसमिति, प्रदेश अध्यक्ष, मंत्री एवं सभी कार्यकारिणी सदस्यों का अभिवादन किया। आपने कहा कि जीवन में सबसे बड़ा योग कर्म योग है। जब अर्जुन के मन में विक्षोभ हुआ तब श्री कृष्ण ने मोहभंग कर राह दिखाई। कोविड-19 की विपत्तियां आशीर्वाद बनी और टेक्नोलॉजी के रूप में कंप्यूटर समिति ने सभी को टेक्नो फ्रेंडली शिक्षित किया जिससे संगठन के कार्यकलाप गांव-शहर तक भी पहुंचे जो जागृति का परिचायक बन संगठन की सफलता का सूत्र बने। संगठन के 1 वर्ष के सेवा कार्यों का खूबसूरत संकलन पीपीटी के माध्यम से महामंत्री मंजू बांगड़ ने प्रस्तुत किया जिसकी पूरे सदन ने एवं सभा में आमंत्रित सभी अतिथियों ने मुक्त कंठ से सराहना की।

भूतड़ा का किया अभिनंदन

हाल ही में अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी सेवा सदन पुष्कर के निर्विरोध निर्वाचित अध्यक्ष (पूर्व में भी अध्यक्ष पद की जिम्मेदारियों का कुशलतापूर्वक निर्वाह करने वाले) रामकुमार भूतड़ा का अभिनंदन संगठन द्वारा किया गया। आपने अपने उद्बोधन में महिला संगठन की पूर्व अध्यक्षों के योगदान का स्मरण करते हुए कोविड-19 में भी संगठन द्वारा क्रियाशील रहकर कार्य करते रहने की विशेष रुप से सराहना की। महासभा के सभापति श्याम सोनी ने कहा कि आपदा को अवसर में परिवर्तित करने का कार्य सभी को महिला संगठन ने सिखाया है। महिलाओं को प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त है कि वे विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेती हैं। मुख्य अतिथि न्यायाधिपति उमेश माहेश्वरी उप लोकायुक्त मध्य प्रदेश ने अपने उद्बोधन में कहा कि नारी में अद्भुत शक्ति है। सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा के रूप में ज्ञान, धन, बाहुबल सभी नारी शक्ति को प्राप्त हैं और समस्त संसार में परिवार का संचालन इन्हीं शक्तियों से होता है। प्रत्येक महिला 5 गुणों से संपन्न होती है आत्मविश्वास, महत्वाकांक्षा, निर्भयता, स्वाभिमान, उदार हृदय व इन्हीं से परिवार व समाज में कार्य करती है। लव जिहाद का कारण समाज का भौतिक व रसायन शास्त्र का बिगड़ना है इसे भी महिलाएं ही ठीक कर सकती हैं।

सशक्त महिला सम्मान से नवाजा

महिला सशक्तिकरण की प्रतीक डॉक्टर एकता केला, रूपल मोहता, अंजलि तापड़िया, सोनाली भूतड़ा व चंचल राठी को अपने-अपने क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट प्रतिभा दिखाते हुए माहेश्वरी समाज को गौरवान्वित करने पर "सशक्त नारी सम्मान" से सम्मानित किया गया। मध्यांचल की गीता भूतड़ा व रचना कलंत्री द्वारा स्वरचित एवं मधुर स्वरों में प्रेरणा गीत प्रस्तुत किया गया। राष्ट्रीय महामंत्री मंजू बांगड द्वारा कृतज्ञता ज्ञापन के साथ उद्घाटन सत्र संपन्न हुआ।

आगामी कार्यक्रम भी ऑनलाईन

द्वितीय तथा तृतीय दिवस को राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा महेश्वरी ने वर्तमान स्थितियों को देखते हुए सभी प्रदेशों को ऑनलाइन प्रादेशिक कार्यक्रम आयोजित करने का निर्देश दिया। उन्होंने प्रादेशिक अधिवेशन में कहा कि ग्रास रूट तक की बहनों को जोड़ें तथा प्रतिभाओं को सम्मानित करें एवं कौन बनेगी मणिकर्णिका के लिए भी प्रतिभागी चयन करें। संपर्क एप की जानकारी दें तथा सोशल इकोनामिक डाटा अपनाने हेतु अपने-अपने क्षेत्र के माहेश्वरी परिवारों को बताएं। महिला महाअधिवेशन शंखनाद 2022 की भावी सूचना देते हुए बताया कि अब यह 9-10-11 अक्टूबर 2022 को कोटा में संपन्न होगा। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ज्योति राठी ने वार्षिक आय व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया। संगठन की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोरमा लड्ढा के 75 में जन्म दिवस पर राष्ट्रीय संगठन की ओर से उन्हें अभिनंदन पत्र प्रदान कर अमृत महोत्सव मनाया गया। मुख्य अतिथि के रूप में सभा को संबोधित करते हुए निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पना गगरानी ने भाव योग का बहुत सुंदर विश्लेषण किया तथा पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष शोभा सादानी ने अपने उद्बोधन में चरित्र, संवाद, एकाग्रता, योग्यता, उदारता, जोश, पहल, शक्ति, विवेक और समर्पण जैसे गुणों की व्याख्या की। महिला सेवा ट्रस्ट की सचिव ललिता मालपानी तथा कार्यवाहक अध्यक्ष गीता मूंदड़ा ने उन स्वावलंबी सदस्याओं से वार्तालाप करवाया जो ट्रस्ट की सहायता से आगे बढ़ी और आज अपने सफल व्यवसाय को चला रही हैं। माहेश्वरी महिला पत्रिका की जानकारी पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सुशीला काबरा ने पीपीटी द्वारा प्रस्तुत की। दसों समिति के साथ सभी 27 प्रदेशों की वार्षिक रिपोर्ट भी पीपीटी द्वारा ही प्रस्तुत की गई जो प्रतियोगिता मूलक थी तथा उन्हें भी डायमंड, गोल्ड तथा सिल्वर कैटेगरी प्रदान कर मूल्यांकन किया गया। संगठन मंत्री शैला कलंत्री ने आभार प्रकट किया।

जरूरतमंद परिवारों की सहायता हो या निःशक्तों की सेवा अथवा गौसंरक्षण ऐसे सेवा कार्यों की जब बात होती है, जो अमरावती (महा.) के निवासी स्व. श्री घनश्यामदास-हीरालाल कासट (पोहिवाले) का नाम अत्यंत सम्मान से लिया जाता है। दुर्भाग्य से श्री कासट 1 वर्ष पूर्व अपनी सेवा गतिविधियों को परिवार को सौंपकर स्वर्गारोही हो चुके हैं।

समाज सेवा के भूषण थे
श्री घनश्यामदास कासट

''जीव दया ही ईश सेवा'' को आधार मानकर जरूरतमंद परिवारों की सेवा एवं गोरक्षा, अपंग सेवा को ही जीवन का ध्येय मानकर कार्य करने वाले वरिष्ठ समाजसेवी स्व. श्री घनश्याम-हीरालाल कासट (पोहिवाले) महाराष्ट्र-अमरावती के भूषण थे। महाराष्ट्र के अकोला जिले के पोही नामक छोटे से गाँव में जन्मे श्री कासट अब हमारे बीच नहीं रहे। आप वर्ष भर अनेक शैक्षणिक, सामाजिक, धार्मिक एवं पारिवारिक कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन अपने परिवारजन व मित्र परिवारों के सहयोग से करते थे। मूकबधिर छात्रों के सहयोग, अंधजनों के सामूहिक विवाह व आदिवासी छात्रों की शिक्षा में आपकी रूची रही। वृद्धाश्रम के वृद्धजनों का अमृत महोत्सव आपने धूमधाम से मनाया। आपने माहेश्वरी वरिष्ठ नागरिक सभा के अध्यक्ष रहते हुए अनेक सुविधाजनक यात्राओं का आयोजन किया। वरिष्ठजनों के सम्मान में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये।

हिराका सेवा के शुभारम्भ कर्ता

माहेश्वरी आधार समिति का गठन किया जिसके द्वारा माहेश्वरी समाज के अत्यल्प आय वाले जरूरतमंद परिवारों को 6-7 वर्षो से समिति की ओर से वार्षिक 7-8 लाख की सहायता राशि का वितरण किया जाता है। अपने माता पिता की स्मृति में हिराका सेवा नाम से माहेश्वरी आधार समिति अंतर्गत करीब 60 परिवारों को वार्षिक 10,000 रुपए वरिष्ठ पेंशन हर वर्ष दी जाती है। इसके लिये समिति में राशि उपलब्ध करायी गयी है। बीमार व अस्पताल भर्ती रोगी को आर्थिक सहायता, मृत्युपरांत गरीब माहेश्वरी परिवार को क्रियाकर्म हेतु आर्थिक सहयोग, कन्या विवाह व कन्यादान हेतु आर्थिक सहयोग समिति द्वारा दिया जाता है। कासट परिवार बिना किसी के आर्थिक सहयोग के एक गौशाला का संचालन भी कर रहा है।

श्रद्धा सुमन

स्व. श्री घनश्यामदासजी हिरालालजी कासट (अमरावती)

(स्वर्गवास 05-03-2021)

''जीवदया ही ईश सेवा'' के जीवन मूल्यों को अंगीकार कर जरूरतमंद, वृद्धजन, अपंग सेवा, गोरक्षा में कार्यरत, श्रेष्ठम पारिवारिक मूल्यों के धनी, दानशुर, माहेश्वरी समाज के भूषण, जेष्ठ समाज सेवी, माहेश्वरी आधार समिति के संस्थापक आपकी अविरत सेवामयी जीवन यात्रा को नमन करते हुऐ श्रद्धासुमन अर्पण

श्रद्धावत

श्रीमती पुष्पादेवी कासट

राजेश-डॉ. अर्चना कासट, विपीन-कंचन कासट

निर्मला-महेन्द्र चितालांगे, पश्यती, मोहक, ईशान, पार्थ

मुख्यमंत्री ने किया पुस्तक का विमोचन

भोपाल। गत 1 फरवरी 2022 मौनी अमावस्या के दिन शिवराज सिंह चौहान मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश ने ''राम वन गमन पथ पुनरावलोकन'' पुस्तक का अपने निवास में अभिजित मुहूर्त में विमोचन किया। मुख्यमंत्री ने पुस्तक के लेखक डॉक्टर रामगोपाल सोनी सेवानिवृत्त अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक भारतीय वन सेवा, और इस पुस्तक के प्रकाशक पुष्कर बाहेती (ऋषि-मुनि प्रकाशन उज्जैन) को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी।

यह भी अलौकिक संयोग ही था कि आज के ही दिन मौनी अमावस्या पर संवत् 1607, सन् 1550 को चित्रकूट में तुलसीदास को प्रभु राम के दर्शन हुए थे। इस पुस्तक में वाल्मीकि रामायण, तुलसीदास की रामचरित मानस व विभिन्न पुराणों के आधार पर राम वन गमन के वास्तविक पथ को गूगल नक्शे पर चिन्हित किया गया है। मार्ग के स्थानों के अक्षांश और देशांतर भी दिए गए हैं। लेखक की हार्दिक इच्छा है कि मध्यप्रदेश सरकार और केंद्र सरकार प्रभु राम के वन गमन पथ का समुचित विकास करेगी, जिससे आध्यात्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। लेखक ने मार्ग में मिलने वाले ऋषि-मुनियों के बारे में और प्रभु राम की लीला का विस्तृत वर्णन किया है। उम्मीद की जाती है कि शीघ्र ही नर्मदा परिक्रमा की तरह राम वन गमन पथ की यात्राएं भी शुरू होंगी। तुलसीदास जी ने लिखा है कि आज भी जो स्वप्न में भी पथिक राम लक्ष्मण और सीता के दर्शन कर लेता है उसे राम की कृपा मिल जाती है। उल्लेखनीय है कि इस पुस्तक ने पहली बार सही राम वन गमन पथ को दर्शाया है, जो आज तक देश में किसी को नहीं मालूम था।

राजा बाबू को गद्य में पहला स्थान

बीकानेर। देशव्यापी किसान आंदोलन के बीच हिंदी लेखन को बढ़ावा,कोपलों को प्रोत्साहन और मातृभाषा हिंदी के सम्मान की दिशा में ''हिंदीभाषा डॉट कॉम'' परिवार ने प्रयास सतत जारी रखते हुए इसी निमित्त 'मेरे देश का किसान' (अंतरराष्ट्रीय किसान दिवस) विषय पर स्पर्धा आयोजित की। इसमें प्रथम स्थान गद्य में गोवर्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू'(राजस्थान) को मिला है।

प्रत्येक लिखी हुई बात को प्रत्येक पढ़ने वाला नहीं समझ सकता क्योंकि लिखने वाला भावनाएँ लिखता है और लोग केवल शब्द पढ़ते हैं।

महेश दर्पण पत्रिका विमोचित

जयपुर। जिला माहेश्वरी सभा समिति द्वारा अपने स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में 'महेश दर्पण' पत्रिका का विमोचन किया गया। इस अवसर पर कैलाश सोनी-संयुक्त मंत्री अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा, राम अवतार आगीवाल-प्रदेश मंत्री पूर्वोत्तर राजस्थान प्रदेश माहेश्वरी सभा, जिला अध्यक्ष नवल झंवर, जिला मंत्री सुरेन्द्र बजाज, अर्थ मंत्री महेश (गोविन्द) परवाल, प्रधान संपादक बृजेश लड्ढा, विज्ञापन समिति समन्वयक किशन अजमेरा, विज्ञापन समिति संयोजक गोपाल तामडी आदि उपस्थित थे।

टीकाकरण शिविर का हुआ आयोजन

कोलकाता। (प. बंगाल)। माहेश्वरी क्लब (अंतर्गत माहेश्वरी सभा) एवं लायंस क्लब इंटरनेशनल 3222 के तत्वाधान में स्थानीय विधायक विवेक गुप्त की अनुप्रेरणा एवं स्वयं प्रकाश पुरोहित के सहयोग से एक वैक्सीनेशन कैंप का आयोजन माहेश्वरी भवन में आयोजित हुआ। कैंप का उद्घाटन विधायक श्री गुप्त के कर कमलों से संपन्न हुआ। इस कैंप में साठ से ऊपर के व्यक्तियों को बूस्टर डोज एवं अठारह साल की आयु वर्ग के ऊपर के व्यक्तियों को वैक्सीन की प्रथम एवं द्वितीय डोज लगाई गई। कैंप में दोनो प्रकार की वैक्सीन कोविशील्ड एवं कोवैक्सीन की पर्याप्त व्यवस्था थी। कार्यक्रम को सफलता पूर्वक आयोजित करने में लायंस क्लब की तरफ से संयोजक मनोज नथानी, सुरेश कोठारी एवं शशि तापड़िया और हरिनारायण भट्टड़ सक्रिय आदि शामिल थे। माहेश्वरी सभा के उपसभापति किशनलाल सोनी ने वैक्सीन लगवा कर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। कार्यक्रम में क्लब की ओर से संयोजक सभा मंत्री पुरूषोत्तम मूंधड़ा, क्लब मंत्री नरेंद्र करनानी, क्लब कार्यकारिणी सदस्य नंदू सादानी, शैलेश डागा, सभा उपमंत्री अशोक चांडक, मंत्रीगण महेश दम्मानी, अशोक डागा आदि निरंतर सक्रिय थे। हरिदास कोठारी, सुशील गांधी, प्रमोद डागा, किशन तापड़िया, गज्जू चाँडक, जुगल राठी एवं मन्नू व्यास का विशेष सहयोग रहा। यह जानकारी माहेश्वरी क्लब के सभापति घनश्याम करनानी द्वारा प्राप्त हुई।

योगा गर्ल रिद्धि ने लहराया चंद्रशिला पर तिरंगा

रतलाम। समाज की योगगर्ल के रूप में प्रतिष्ठित रिद्धि माहेश्वरी ने 8 फरवरी 2022 को हिमालय की लगभग 13500 फीट ऊंची चोटी तुंगनाथ से भी ऊपर चंद्रशिला पर तिरंगा फहरा कर रतलाम जिले का नाम रोशन किया है। 10 सदस्यीय दल के साथ रिद्धि ने अपनी चढ़ाई प्रारंभ की थी, जिनमें से मात्र 5 सदस्य ही चंद्रशिला चोटी तक पहुंचे। इनमें एकमात्र लड़की सदस्य रिद्धि थी। उन्होनें ऋण 12 डिग्री तापमान एवम् 15 से 20 फीट बर्फ में अपना रास्ता खुद बनाया और हार न मानकर साहसिक कदम उठाते हुए चंद्रशिला चोटी पर तिरंगा फहरा कर गौरवान्वित किया है। रिद्धि ने वर्ष 2021 में पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार से योग में गोल्ड मेडलिस्ट के रूप में ग्रेजुएशन भी किया है।

सिद्धि बनी RIFF सलाहकार

जोधपुर। वीर भूमि राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र के जोधपुर की बहू सिद्धि जौहरी को 8वें राजस्थान अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव, RIFF 2022 के लिये सलाहकार नियुक्त किया गया है। श्रीमती जौहरी मिसेज इंडिया इंटरनेशनल, मिसेज गैलेक्सी क्वीन इंडिया, महिला सशक्तिकरण हेतु राष्ट्रीय ब्रांड एंबेसडर, समाजसेवा, कला और संस्कृति, संगीत और सिनेमा के प्रचार में भारत की राष्ट्रीय स्वास्थ्य शैक्षिक राजदूत के रुप मे विगत कई वर्षो से सेवारत हैं।

दिल्ली प्रादेशिक महिला संगठन की सेवा गतिविधि

दिल्ली। कर्म सारथी राष्ट्रीय वर्चुअल क्विज प्रतियोगिता में सखियों ने उत्साह से भाग लिया और दूसरे राउंड तक की विजय यात्रा पूर्ण की। हर सीट हॉट सीट फास्टेस्ट फिंगर फर्स्ट में दिल्ली प्रदेश ने जोरदार परचम फहराया। प्रदेश प्रथम, द्वितीय,तृतीय स्थानों पर विजयी रहा। संक्रांति के पुण्यमय पर्व पर गौशाला के लिए उदार मन से महिलाओं ने दान राशि दी। ग्रेस केयर चाइल्ड फाउंडेशन में 15000 रुपये की खाद्य सामग्री भेंट करी। 11000 की राशि से खिचड़ी वितरित की गई। मालिनी काबरा ने प्रदेश में 20,000 रुपये की राशि भेंट की। बैकुंठ एकादशी पर वृद्ध बेसहारा महिलाओं को स्वेटर वितरित किए गए। 26 जनवरी के दिन सूर्य नमस्कार से राष्ट्र वंदना में अर्घ्य चढ़ाया गया। राष्ट्रीय बाल प्रतियोगिता Best from the waste में बाल वृंद ने भाग लिया। 3 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी ''भाव योग बैठक'' में PPT रिपोर्ट के लिए दिल्ली प्रदेश को गोल्डन कैटेगरी प्राप्त हुई। दिल्ली प्रदेश से विवाह संबंध सहयोग गठबंधन समिति प्रभारी शर्मिला राठी व साहित्य चिंतन मनन समिति प्रभारी मंजु मांधना को Excellent कैटेगरी प्राप्त हुई। विवाह संबंधों की 10 जोड़ियां बन कर तैयार हैं। राष्ट्रीय ट्रस्ट में मालिनी काबरा ने 51000 रुपये की राशि भेंट की। उक्त जानकारी अध्यक्ष- श्यामा भांगडिय व सचिव- प्रभा जाजू ने दी।

राठी दम्पत्ति को पुनः प्रथम टीओटी सम्मान

रायपुर। समाज सदस्य मनोज राठी व शीतल राठी को भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा पुनः 2021-2022 के लिए प्रथम टीओटी का सम्मान प्राप्त हुआ है। गौरतलब है कि मनोज ने अब तक 9 एमटीआरटी एवं शीतल ने 7 एमडीआरटी प्राप्त कर छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश में पुनः प्रथम उपाधि प्राप्त की। पूरे मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में भारतीय जीवन बीमा निगम के इतिहास में यह उपलब्धि किसी भी अन्य दम्पत्ति ने प्राप्त नहीं की है। इसके लिए राठी दंपत्ति को यूएएस में होने वाले बीमा सम्मेलन में सम्मानित किया जायेगा। उक्त सम्मान बीमा क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर का सर्वोच्च सम्मान है।

दीप्ति को वुमन ऑफ़ द फ्यूचर अवार्ड

उदयपुर। ह्यूमन केयर सोसाइटी की ओर से देशभर की 50 सर्वश्रेष्ठ महिलाओ में वुमन ऑफ़ द फ्यूचर अवार्ड हेतु उदयपुर की दीप्ति असावा समदानी-धर्मपत्नी गिरीश समदानी का भी चयन हुआ है। सोसाइटी की ओर से लेखिका नंदिता ओमपूरी ने विजेताओं की घोषणा की जिसमे दीप्ति का नाम भी सम्मिलित था। पिछले काफी समय से दीप्ति सीए की प्रैक्टिस कर रहीं है। ग्रहणी होने के साथ ही वे सीए व सीएस की तैयारी कर रहे स्टूडेंट्स को पढ़ाने सहित कई समाजसेवी संस्थाओ में सक्रिय रूप से सेवाएं भी दे रही हैं। उन्होंने सीए व सीएस स्टूडेंट्स के लिए 4 पुस्तके भी लिखी हैं। श्रीमती असावा सीएमए इंटरमीडिएट में आल इंडिया पहली रैंक हासिल कर गोल्ड मैडल प्राप्त कर चुकी हैं। कोरोना के चलते सोसाइटी की ओर से यह अवार्ड 2 साल बाद दिया गया है। इससे पहले भी दीप्ति को कई अवार्ड्स व सम्मान प्राप्त हुए है।

फूंक मारकर हम दीए को बुझा सकते हैं पर अगरबत्ती को नहीं क्योंकि जो महकता है उसे कौन बुझा सकता है और जलता है वह खुद बुझ जाता है।

हल्दी-कुमकुम का किया आयोजन

अमरावती। गत 3 फ़रवरी को लक्ष्मी विहार स्थित हनुमान मंदिर मे अध्यक्ष दुर्गा हेड़ा, सचिव साधना गट्टानी, उपाध्यक्ष संध्या राठी, दुर्गा जाजू, नेतल राठी, ममता मुंधड़ा, सुषमा राठी, सुषमा भुतडा, राधा करवा, पल्लवी नावंदर की टीम ने हल्दी कुमकुम का आयोजन किया। भूमि राठी ने गणेश वन्दना कर के कार्यक्रम की शुरुआत की। शानदार लावणी और नाटिका का आयोजन भी हुआ। सभी पूर्व अध्यक्ष लीला राठी, उमा राठी, किरण राठी, उर्मिला गाँधी, रश्मि मुंधड़ा, गौरी राठी, संगीता राठी, विजया राठी, हीरा चांडक और वर्षा जाजू को पौधे दे कर वर्तमान कार्यकारिणी ने उनका स्वागत किया। मुख्य अतिथि के रूप मे अर्चना लाहोटी को आमंत्रित किया गया था। सभी को हल्दी कुमकुम लगा के तिल गुड़ और वान दिए गए। अंत में स्वरूचि भोज का सभी ने आनंद लिया। कार्यक्रम में मंडल की सरला गाँधी, रेखा राठी, सुमन लड्ढा, तारा टवानी, लीना राठी, श्रद्धा राठी, ज्योति राठी, अलका जाजू, संगीता मुंधड़ा, ज्योति भंडारी, इंदिरा सारडा, दीपा मुंधड़ा आदि उपस्थिति थीं।

स्व. श्री बंग की प्रतिमा का अनावरण

जोधपुर। माहेश्वरी समाज के तत्वावधान में समाज रत्न एवं नगर सुधार न्यास के पूर्व अध्यक्ष स्व. श्री दामोदर लाल बंग की मूर्ति का अनावरण समारोह गत 26 जनवरी दोपहर 12.15 बजे महंत श्री अचलानंद गिरीजी महाराज व रामस्नेही संत श्री रामप्रसाद महाराज के सान्निध्य एवं राज्यसभा सांसद राजेंद्र गेहलोत, नगर निगम उत्तर महापौर कुंती देवड़ा, पूर्व सांसद जसवंत सिंह विश्नोई, उपमहापौर दक्षिण किशन लड्ढा, आदि की उपस्थिति में संपन्न हुआ।अतिथियों का शॉल ओढ़ाकर एवं पुष्पों द्वारा जिला माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष किशनलाल राठी सचिव विष्णु डागा, कोषाध्यक्ष शंकरलाल राठी, उपाध्यक्ष प्रहलाद बजाज, संजय टावरी, दिनेश सोनी, किशन गोपाल बंग, राजेश लोहिया, पूर्व पार्षद ओमप्रकाश राठी, अशोक बंग एवं रामधन डागा ने स्वागत किया। इस अवसर पर कई गणमान्यजन उपस्थित थे।

सूर्य नमस्कार से की राष्ट्र वंदना

उज्जैन। श्री माहेश्वरी सभा महिला मंडल गोलामंडी द्वारा अखिल भारतवर्षीय महिला संगठन के अन्तर्गत 75 करोड़ सूर्य नमस्कार से राष्ट्रवंदना के कार्यक्रम के महायज्ञ में अपनी ने भी अपनी आहुति दी। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान महेश के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्जवलित कर महेश वंदना से किया गया। संस्था अध्यक्ष हेमलता गाँधी के नेतृत्व में तेरह बार सूर्य नमस्कार माहेश्वरी भवन में किया गया। इसमें रुचि गाँधी, उषा सोडानी, संगीता भूतड़ा, ज्योति राठी, रेखा मंत्री, माधुरी राठी, सीमा पलोड़, शीतल मूंदडा, निशा मूंदडा, सीमा मूंदडा आदि सदस्याओं ने सामूहिक रुप से सूर्य नमस्कार मे अपनी सहभागिता निभाई।

पुण्यतिथि पर हुआ स्मृति सभा का आयोजन

मथुरा। समाचार पत्र अमर उजाला के सह संस्थापक स्वर्गीय श्री मुरारीलाल माहेश्वरी की 33 वीं पुण्य तिथि पर स्मृति सभा का आयोजन माहेश्वरी परिवार-मथुरा द्वारा किया गया। इस दौरान उनका भावपूर्ण स्मरण करते हुए उनको श्रद्धांजलि दी गई। माहेश्वरी परिवार के रितेश माहेश्वरी एडवोकेट ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वर्गीय मुरारी लाल जी माहेश्वरी के निर्देशन में उनकी अथक मेहनत व प्रयास से जो एक पौधा लगाया गया था वह आज वट वृक्ष बन चुका है। अमर उजाला समाचार पत्र समूह ने पत्रकारिता जगत में एक बहुमूल्य कीर्तिमान स्थापित किया है। स्मृति सभा में एडवोकेट रितेश माहेश्वरी, कृष्ण कुमार माहेश्वरी, राजकुमार माहेश्वरी, संजीव कुमार माहेश्वरी, मंतोष कुमार माहेश्वरी, अंकित माहेश्वरी, संतोष कुमार माहेश्वरी आदि ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपने विचार रखें।

डॉ. माहेश्वरी को साहित्य साधक सम्मान

अलीगढ़। माहेश्वरी साहित्यकार मंच द्वारा आयोजित आलेख प्रतियोगिता ''पुरवाई त्यौंहारों की'' में उर्जावान सहभागिता हेतु साहित्यकार डॉ. आभा माहेश्वरी, को ''साहित्य साधक सम्मान'' से सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि इस संस्था के संस्थापकों में श्याम सुंदर माहेश्वरी, सतीश लाखोटिया, कलावती करवा, मधु भूतड़ा व स्वाति जैसलमेरिया आदि शामिल हैं।

वेद पढ़ना आसान हो सकता है लेकिन जिस दिन आपने किसी की वेदना को पढ़ लिया तो समझो जीवन सफल हो गया।

भूतड़ा समिति की साधारण सभा सम्पन्न

जोधपुर। भूतड़ा समिति की साधारण सभा व पारितोषिक वितरण समारोह गत 2 जनवरी को माहेश्वरी जनउपयोगी भवन रातानाडा में आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि नंदलाल बोथरा व विशेष अतिथि भागीरथ भूतड़ा, प्रचार मंत्री पुष्कर सेवा सदन सूरत थे। पूजा अर्चना सचिव ओमप्रकाश भूतड़ा द्वारा गत साधारण सभा के मिनट्स पढ़कर सदन को सुनाए गए। कोषाध्यक्ष राजेंद्र भूतड़ा ने 2 वर्ष का लेखा-जोखा सदन में पेश कर ध्वनि मत से पास करवाया। आनंद भूतड़ा, विजयलक्ष्मी भूतड़ा, कुमुद भुतड़ा की टीम द्वारा भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। उसके बाद 70 छात्र-छात्राओं को पारितोषिक वितरण दानदाता नंदलाल भूतड़ा की तरफ से कर कक्षा दसवीं से कॉलेज तक विद्यार्थियों को मोमेंटो व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। डॉ. भंवरलाल भूतड़ा की तरफ से दसवीं के छात्र-छात्राओं को केलकुलेटर व 12वीं के छात्रों को पेन सेट देकर सम्मानित किया गया। इसी कड़ी में वरिष्ठजन, कन्या जन्म पर दम्पत्ति तथा नवदंपत्ति का भी सम्मान किया गया।

शिप्रा तट पर मनाया बसंत पंचमी पर्व

उज्जैन। श्री माहेश्वरी सभा महिला मंडल गोलामंडी की सदस्याओं ने पुण्य सलिला माँ क्षिप्रा किनारे नृसिंह घाट पर एक जैसे परिधान पहनकर वासंती कलर में सजधज कर सर्व कामना सिध्दी का पर्व बसंत उत्सव उल्लास के साथ मनाया। कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती व महेश वंदना के साथ किया गया। इसके बाद बसंत उत्सव पर आधारित गेम खिलाये गये। श्री वेंकटेश मंदिर में भजन कीर्तन व आरती के बाद भोजन प्रसादी के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर संस्था अध्यक्ष हेमलता गाँधी, सचिव मनोरमा मंडोवरा, तेजूदेवी तोषनीवाल, सुधा बाहती, पुष्पा मंत्री, विमला कासट, सुभद्रा भूतड़ा, संध्या हेड़ा, आशा तोतला, मनोरमा दाड़, सीमा परवाल आदि मोजूद रहीं।

व्यापार संघ के चुनाव में माहेश्वरी

बिराटनगर (नेपाल)। मोरंग व्यापार संघ की 33 वी कार्य समिति का चुनाव सम्पन्न हुआ। झारखंड बिहार प्रदेश माहेश्वरी सभा के सह मीडिया प्रभारी राजकुमार लढ़ा ने बताया कि इसमें बिराटनगर माहेश्वरी समाज से आठ (8) सदस्यों का निर्विरोध चयन हुआ। जिसमें अनुपम राठी (वरिष्ठ उपाध्यक्ष), अनिल सारड़ (महासचिव), पवन राठी (सदस्य), मनीष मारू-(सदस्य), अमित सारडा-(सदस्य), आशिष जाजू-(सदस्य), श्याम राठी-(सदस्य) व अमित राठी-(सदस्य) शामिल हैं।

टवाणी की पुस्तक का विमोचन

किशनगढ़। गत 25 जनवरी को साहित्यकार कृष्णचंद्र टवाणी लिखित "जीवन सागर के मोती" पुस्तक का लोकार्पण जगदगुरू डॉ. जयकृष्ण देवाचार्य जी महाराज पीठाधीश्वर निम्बार्क काचरिया पीठ किशनगढ़ के कर कमलों द्वारा कोरोना काल के निर्देशानुसार हुआ। श्री टवाणी ने पुस्तक का परिचय देते हुए बताया कि जीवन के अनुभवों द्वारा अर्जित ज्ञान को पुस्तक में निबद्ध करते हुए इसमें भारतीय संस्कृति के पवित्र मूल्यों की पुनस्थार्पना हेतु युवावर्ग से विशेष आग्रह किया गया है। बालमुकुन्द शास्त्री संपादक अध्यात्म अमृत ने इस अवसर पर अपने उद्बोधन में कहा कि हमें चिंतन कर हमारे घरों में भारतीय संस्कारित जीवन की पुर्नस्थापना करनी अनिवार्य है तभी भारत पुनः गौरव को प्राप्त कर सकता है। महाराजश्री ने भी अपने आर्शीवचन दिये। कार्यक्रम में बालमुकुन्द सेवदा, घनश्याम अग्रवाल, रामकिशोर बाहेती, किशनगोपाल मालपानी, पवन जोशी, अनुज टवाणी, लक्ष्मीनारायण शर्मा, घनश्याम चौहान आदि उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का संचालन अनुज टवाणी द्वारा किया गया।

एक समझदार व्यक्ति वहीं है जो दूसरों को देख कर उनकी विशेषताओं से सीखता है। उनसे तुलना और ईर्ष्या नहीं करता।

शिक्षण व खाद्य सामग्री वितरण

उदयपुर। संस्था माहेश्वरी महिला गौरव द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय साकरोदा मावली में बसंत पंचमी पर बच्चों की जरूरत का सामान भेंट किया गया। सचिव सीमा लाहोटी ने बताया कि इसमें स्कूल बेग, दरी, स्टेशनरी व खाने का सामान आदि भेंट किया गया। अध्यक्ष आशा नरानीवाल ने बताया कि कार्यक्रम संरक्षक कौशल्या गट्टानी व संगठन मंत्री सरिता न्याती के सान्निध्य में आयोजित हुआ। जिला सचिव रेखा असावा, शांता सोमानी आदि उपस्थित थीं। इससे 200 से 250 बच्चे लाभान्वित हुए। आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर बच्चों ने सूर्य नमस्कार भी किया।

बसंत पंचमी पर शिक्षण सामग्री वितरण

जोधपुर। सरस्वती माता को सुबुद्धि एवं विद्या की देवी भी कहते हैं इसीलिए बसंत पंचमी के उपलक्ष में महिला संगठन पूर्वी क्षेत्र द्वारा छोटे-छोटे विद्यार्थियों को बिस्किट, चिप्स, ड्राइंग बुक्स, पेंसिल, रबड़ सेट एवं चॉकलेट भेंट किये गये। अध्यक्ष सुशीला बजाज ने कहा कि सभी ने पीले वस्त्र पहन कर मां सरस्वती की पूजा एवं अर्चना की ताकि बच्चों में भारतीय संस्कारों का समावेश हो। इस मौके पर प्रदेश सचिव कमला मूंदड़ा, संजू सोनी, अनीता सोनी, संगीता भट्टर आदि उपस्थिति थीं।

सोनी बने अभिभाषक संघ के उपाध्यक्ष

गुलाबपुरा। अभिभाषक संघ गुलाबपुरा (रजि.) के 24 जनवरी को चुनाव सम्पन्न हुए। इसमें महावीर सोनी उपाध्यक्ष पद पर निर्विरोध निर्वाचित हुए। सोनी के उपाध्यक्ष बनने पर समाज बंधुओं ने हर्ष व्यक्त किया और शुभकामनाएं प्रेषित की। श्रीसोनी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे अभिभाषकों के हितों के लिए हमेशा तैयार रहेंगे।

स्कॉलरशिप से स्वेटर वितरण

बरेली। जिला माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष के.के. माहेश्वरी के पुत्र डॉ. प्रमेन्द्र माहेश्वरी की पुत्री अपूर्वा माहेश्वरी को एम. बी. बी. एस के द्वितीय वर्ष में मेडीकल कालेज की ओर से दो लाख रुपये की स्कालरशिप मिली है। अपूर्वा ने इसमें से पचास हजार रुपये से सरस्वती शिशु मन्दिर बरेली के सभी सौ बच्चों को स्वेटर वितरित किए। सरस्वती शिशु मन्दिर की प्रबन्ध समिति ने अपूर्वा माहेश्वरी एवं सभी परिवारजनों का आभार प्रकट किया। अपूर्वा की माता भी एक प्रसिद्ध डॉक्टर हैं।

पुण्य स्मृति में हुआ रक्तदान

शाजापुर। वैश्य महासम्मेलन मध्यप्रदेश के संस्थापक नारायणप्रसाद गुप्ता (नानाजी) की पुण्य स्मृति में शाजापुर ज़िला वैश्य महासम्मेलन द्वारा ज़िला चिकित्सालय में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें वैश्य समाज के सदस्यों द्वारा रक्तदान किया गया। जिला अध्यक्ष कमल माहेश्वरी, जगदीश माहेश्वरी, सदस्य गुलाब गुप्ता, गोपाल, राजेश, मनीष माहेश्वरी, अमृतलाल गुप्ता एवं महिला इकाई और स्वास्थ्य विभाग का सक्रिय सहयोग रहा।

सेवा सदन की प्रबंधकारिणी घोषित

पुष्कर। गत 5 जनवरी को श्री अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन के अध्यक्ष रामकुमार भूतड़ा ने वर्तमान सत्र 2021-2025 हेतु प्रबंधकारिणी-समिति के सदस्यों के मनोनयन की घोषणा की। इसमें मधुसूदन मालू कार्यालय मंत्री भी चयनित हुए। उपरोक्त कार्यकारिणी सदस्यों के अतिरिक्त श्यामसुंदर सोनी नागपुर (सभापति-अ.भा.माहेश्वरी महासभा), संदीप काबरा जोधपुर (महामंत्री-अ.भा. माहेश्वरी महासभा), राजकुमार काल्या गुलाबपुरा (अध्यक्ष अ.भा. माहेश्वरी युवा संगठन), आशा माहेश्वरी कोटा (अध्यक्षा-अ.भा.माहेश्वरी महिला संगठन), श्यामसुंदर बिड़ला मेड़तासिटी (भूतपूर्व अध्यक्ष-श्री अ.भा.माहेश्वरी सेवा सदन), किशन गोपाल गोकटा विजयनगर (मुख्य चुनाव अधिकारी-सत्र 2021-2025), पुरुषोत्तम कलंत्री नाशिक (नाशिक भूमि दानदाता), माणकचंद माहेश्वरी (अम्बर वाले) कटक/भूवनेश्वर (विशिष्ठ भामाशाह) को सम्मानीय विशेष आमंत्रित सदस्यगण के रूप में मनोनीत किया गया। उक्त जानकारी महामंत्री रमेशचंद्र छापरवाल ने दी।

माहेश्वरी साहित्यकार मंच द्वारा आलेख प्रतियोगिता आयोजित

संगरिया। माहेश्वरी साहित्यकार मंच द्वारा मकर सक्रांति के अवसर पर ''पुरवाई त्योहारों की'' विषयक आलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी, विशिष्ट अतिथि माहेश्वरी के संपादक राकेश भैया व कार्यक्रम अध्यक्ष लेखिका राजश्री राठी रहे। मंच के प्रभारी श्यामसुंदर माहेश्वरी छिंदवाड़ा, सतीश लखोटिया नागपुर, मधु भूतड़ा जयपुर, कलावती करवा कूचविहार व स्वाति जैसलमेरिया जोधपुर ने बताया कि इस प्रतियोगिता का उद्देश्य त्योहारों के प्रति कम होते आकर्षण को पुनः जागृत करने का था। इसके माध्यम से बड़ी संख्या में समाज

बंधुओं ने इसमें सक्रिय रूप से भाग लिया। प्रतियोगिता के 10 फरवरी को घोषित परिणाम में सुनीता माहेश्वरी नासिक व सुमन माहेश्वरी फरीदाबाद प्रथम, विनीता काबरा जयपुर द्वितीय, पूजा नबीरा काटोल तृतीय स्थान को सर्वोत्कृष्ट कलमकार पुरस्कार व उपहार से सम्मानित किया गया। घनश्याम राठी बूंदी, पुष्पा बल्दवा ठाणे, सुनीता मल्ल आमगांव, मनीष राठी उज्जैन को बेहतरीन आलेख के लिए उत्कृष्ट कलमकार सम्मान से सम्मानित किया गया। कपिल करवा संगरिया ने बताया कि प्रतियोगिता में सहभागिता करने वालो को साहित्य साधक सम्मान से पुरस्कृत किया गया। विशेष योगदान के लिए शशि लाहोटी को मां भारती सम्मान व राजदीप पेड़ीवाल को साहित्य निष्ठ सम्मान से पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में किरण कलंत्री व रेखा सोनी का विशेष सहयोग रहा।

माहेश्वरी समाज भी लगाएगा महाशिवरात्रि पर 21 हजार दीपक

उज्जैन। महाशिवरात्रि के महामहोत्सव में माहेश्वरी समाज भी 21 हजार से अधिक दीपक लगाएगा। इस अभियान में माहेश्वरी समाज के 800 से 1 हजार के लगभग परिवार शामिल हैं, जो प्रत्येक परिवार से कम से कम 21 दीपक लगाकर उज्जैन को शिवमय बनाने का संकल्प साकार करेंगे। अ.भा. माहेश्वरी महासभा प्रतिनिधि लक्ष्मीनारायण मूंदड़ा, जिलाध्यक्ष महेश लड्ढा, माहेश्वरी सभाध्यक्ष भूपेन्द्र भूतड़ा, माहेश्वरी समाज अध्यक्ष सुरेश काकाणी, माहेश्वरी समाज महिला मंडल

अध्यक्ष रेखा लड्ढा, माहेश्वरी सभा महिला मंडल अध्यक्ष हेमलता गांधी, ट्रस्ट अध्यक्ष राजेन्द्र समदानी, कैलाश माहेश्वरी तथा माहेश्वरी समाज के अन्य पदाधिकारी वीणा सोमानी, उषा सोड़ानी, मनोरमा मंडोवरा, कैलाशनारायण राठी, भूपेन्द्र जाजू, महेश चांडक, अशोक माहेश्वरी, जयप्रकाश राठी, कैलाश डागा, शैलेष राठी, नवल माहेश्वरी, शरद चिचाणी आदि ने माहेश्वरी समाज के सभी बंधुओं से आग्रह किया है कि माहेश्वरी समाज भगवान महेश की संतान हैं। अतः महाशिवरात्रि के अवसर पर दिवाली की तरह दीपोत्सव मनाकर शहर को शिवमय बनाए। यह भी आवाहन किया गया है कि सभी अपने निवास, प्रतिष्ठान एवं अपने क्षेत्र में स्थित शिवालयों को भी दीपों से सुसज्जित करें।

सेवा ट्रस्ट गणतंत्र दिवस पर सम्मानित

फरीदाबाद। सेवा ट्रस्ट फरीदाबाद को समाज में उत्कृष्ट सेवाओं हेतु वल्लभगढ़ प्रशासन द्वारा गत 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य पर सम्मानित किया गया। इसमें प्रशंसा पत्र संस्था के अध्यक्ष महेश कुमार गट्टानी एवं कोषाध्यक्ष दुर्गा प्रसाद मूंधड़ा को प्रदान किया गया। इस उपलब्धि पर माहेश्वरी मण्डल के अध्यक्ष नारायण प्रसाद झंवर ओमप्रकाश पसारी, सुशील नेवर, परशुराम साबु, रमेश झंवर आदि कई गणमान्यजनों ने हर्ष व्यक्त किया।

बसंत पंचमी उत्सव का किया आयोजन

नागदा। माहेश्वरी महिला मंडल ने वसंत पंचमी उत्सव बड़े उत्साह से मनाया। सभी ने माता सरस्वती की पूजा अर्चना कर सरस्वती वंदना की। मंडल के सभी सदस्यों ने पीले परिधान पहने। सभी सदस्यों ने वसंत पंचमी पर आधारित तंबोला, मनोरंजक खेल आदि का आनंद लिया और सहभोज किया। इस अवसर पर महिला मंडल अध्यक्ष प्रीति मालपानी, जिला सचिव सीमा मालपानी, सीमा लड्ढा, उषा राठी, हेमा मोहता, ज्योति गगरानी, किरण बजाज, रिषिता खटोड़, रेणु राठी, वर्षा झंवर, सीमा राठी, वंदना मोहता आदि मौजूद थीं।

युवक-युवती परिचय सम्मेलन

19 एवं 20 मार्च को दस्तुर गार्डन इंदौर में

इंदौर। श्री महेश सामाजिक एवं पारिवारिक संस्था इंदौर द्वारा आगमी 19 एवं 20 मार्च को दस्तुर गार्डन इंदौर में माहेश्वरी समाज के विवाह योग्य युवक-युवती एवं विशिष्ट प्रत्याशियों का सम्मेलन का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे पवन लढा, मुख्य अतिथि होंगे लखनलाल नागौरी तथा विशेष अतिथि बब्बू कोठारी व राधेश्याम मालानी होगे। यह जानकारी देते हुऐ संयोजक डॉ. रविन्द्र राठी एवं मीडिया प्रभारी अजय सारड़ा ने बताया कि इस सम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक अपने पुत्र-पुत्री के संबंध में प्रविष्ठियां 10 मार्च 2022 के पूर्व तक डॉ. रविंद्र राठी इंदौर को प्रेषित कर सकते हैं।

आलेख प्रतियोगिता के परिणाम घोषित

जयपुर। जिला माहेश्वरी सभा समिति एवं जयपुर जिला माहेश्वरी महिला सगठन द्वारा आयोजित अखिल भारतीय आलेख प्रतियोगिता 'वर्तमान समय में सगाई/विवाह उपरांत अपेक्षाऐ/शिकायतें व समस्याएं-कारण व निवारण' के परिणाम निर्णायक जुगलकिशोर सोमानी, (कार्य समिति सदस्य अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा) ने घोषित किया। इसमें प्रथम- सरस्वती बिड़ला, (हिम्मत नगर), द्वितीय- दमयंती लोहिया, (भीलवाड़ा), तृतीय- दीप्ति तोतला, (किशनगढ़) रहीं। सांत्वना पुरस्कार- विनीता मूंदडा (गुवाहाटी), विनीता काबरा (जयपुर), गायत्री नवाल (जयपुर), कल्पना राठी (नागपुर) तथा कृष्णा बागड़ी (यवतमाल) को प्राप्त हुए।

अभिनंदन समारोह का आयोजन

हैदराबाद। माहेश्वरी महिला मंडल, दोमलगुडा हिमायतनगर (तेलंगाना) ने गत 16 जनवरी 2022 को अभिनंदन समारोह आयोजित किया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में हरिनारायण राठी तथा विशेष अतिथि एवं वक्ता के रूप में रमेश परताणी उपस्थित थे। इस अवसर पर किरण अनिल बजाज, शशिलता मधुसूदन डालिया, अरुणा अनिल मालपानी, डॉ. राजश्री, डॉ. राजेश सोनी, उर्मिला विनोद बंग, शीला राजगोपाल तापड़िया, रीना सुमित बल्दवा, सविता राधेश्याम मूंदड़ा, अंजना अजय अटटल, शिखा राम राठी आदि उपस्थित थीं।

'ओपन' और 'क्लोज' दोनों विरोधी शब्द हैं लेकिन मजे की बात 'ओपन' उसी के सामने होता है जो हमारे 'बहुत' क्लोज हैं।

सशक्त महिला सम्मान से सम्मानित हुई आशा माहेश्वरी

कोटा। लायंस डिस्ट्रिक्ट गवर्नर संजय भंडारी द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी को "सशक्त महिला सम्मान" से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान क्लब की आधिकारिक यात्रा में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने व स्वरोजगार के लिए सहयोग देने, डिजिटली साक्षर बनाने की दिशा में एवं बाल संस्कार, संस्कृति संरक्षण के लिए किए जा रहे कार्यो के लिए और सक्रिय लायन सदस्य के रूप में सेवा कार्यो के लिए प्रदान किया गया। इसके साथ ही वर्ष पर्यन्त किये गए बेहतर सेवाकार्यो एवम बेस्ट MOC के लिए क्लब सेक्रेटरी मधु-ललित बाहेती को भी इससे सम्मानित किया गया।

डॉ. मोदानी को बेस्ट ग्लोबल चेप्टर अवार्ड

जयपुर। दी इंडस एंटरप्रेन्योरर्स सिलिकॉन वेली tia ने अपने राजस्थान चैप्टर को 15 देशो और 61 चैप्टर्स में से सर्वश्रेष्ठ चैप्टर घोषित किया गया है। इसके लिए अध्यक्ष डॉ. रवि मोदानी ने अवार्ड प्राप्त किया। दुबई में आयोजित हुए tia ग्लोबल सम्मिट 2021 और tia एनुअल चैप्टर एक्सीलेंस अवार्डस के अवार्ड समारोह में यह सम्मान प्राप्त किया।

एकादशी मेला महोत्सव की तैयारी

चान्दारुण। स्थानीय श्याम मंदिर में आगामी 14 मार्च को आयोजित होने वाले फाल्गुन मेला महोत्सव की तैयारियों जोरो पर चल रही है। श्याम सेवा समिति के अध्यक्ष द्वारकाप्रसाद हेडा ने बताया कि आने वाले 14 मार्च को बाबा श्याम मन्दिर प्रागंण मे विशाल भण्डारा, अलौकिक श्रृंगार, अखण्ड ज्योत, पुष्प वर्षा, इत्र वर्षा, महाआरती व विशाल भजन संध्या का आयोजन रखा गया है। मंदिर प्रागंण मे शनिवार को श्री श्याम फाल्गुन एकादशी मेला महोत्सव के पोस्टर का विमोचन भी किया गया।

उत्कल प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन की सेवा यात्रा

बालेश्वर। उत्कल (उड़ीसा) प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा नवंबर, दिसंबर-जनवरी व फरवरी में सतत सेवा गतिविधियों का आयोजन हुआ। इसमें महिला अधिकार, उत्थान, सुरक्षा एवं सशक्तिकरण समिति द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित स्पर्धा 'स्वनियोजिता' के लिए राष्ट्रीय, आंचलिक, प्रादेशिक मीटिंग व वर्कशाप आयोजित की गई, जिसमे उत्कल (उडीसा) प्रदेश ने पूर्वांचल में द्वितीय स्थान हासिल किया। 'दादी-नानी का पिटारा सीरीज' के अंतर्गत इस माह उत्कल प्रदेश को अवसर मिला। मकर संक्रांति पर बने इस खूबसूरत वीडियो को संपूर्ण 'भारत और नेपाल चैप्टर' में प्रसारित किया गया। ग्रामीण विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति द्वारा संबलपुर जिले मे बसंत पंचमी के अवसर पर 150 लोगो को पुडी, सब्जी, बुंदिया दिया गया। गौशाला में गायों की संख्या मे वृद्धि की गई, नियमित रुप से चारा तथा अन्य खाद्य-रसद की व्यवस्था की गई। स्वाध्याय एवम अध्यात्म समिति द्वारा बालेश्वर जिला में मल मास में कन्या आश्रम में 135 कन्याओं को शॉल एवम 150 फूड पैकेट्स भेंट किए गए। गौशाला हेतु एक ई रिक्शा भी खरीदा गया। स्वास्थ्य एवम पारिवारिक समरसता समिति द्वारा झारसुगुडा में सर्दी खांसी इत्यादि रोगों के लिए होमियोपैथिक दवाइयां बांटी गई। नव वर्ष में योगाभ्यास तथा 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के दिन योगा ट्रेनर द्वारा सूर्य नमस्कार सिखाया गया। पर्व एवं सांस्कृतिक समिति द्वारा जूम सभागार मे रंजीता लड्ढा द्वारा डांडिया की कार्यशाला ली गई। माहेश्वरी समाज में मकर सक्रांति के अनेक नेगचार होते हैं, उन्हीं नेगचारों को एक वीडियो के माध्यम से दिखाया। गणतंत्र दिवस पर स्पोर्ट्स इवेंट का आयोजन भी करवाया। विवाह संबंध सहयोग समिति- 'गठबंधन' द्वारा अभिभावकों से बायोडाटा का आदान प्रदान किया गया। साहित्य एवं चिंतन मनन समिति के प्रयास से राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता 'हर सीट हॉट सीट' में बालेश्वर जिला से मनीषा सोमानी ने द्वितीय स्थान हासिल किया। व्यक्तित्व विकास समिति अंतर्गत बच्चों में खेलों के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए स्पोर्ट्स इवेंट का आयोजन किया गया। उक्त जानकारी अध्यक्षा- सुनीता राठी व सचिव- संगीता मारू ने दी।

श्रद्धांजलि

श्रीमती कला काकाणी

इंदौर। समाज सदस्य श्रीकृष्णगोपाल काकाणी की धर्मपत्नी व रचना तथा विनीत की माताश्री समाज की वरिष्ठ श्रीमती कला काकाणी का गत 12 फरवरी को देहावसान हो गया। आप अत्यंत धार्मिक एवं समाज सेवा में रत रही है । श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार की विन्रम श्रद्धजंली भरा पूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गईं है।

श्री मालचंद गट्टाणी

टीटाबर (जोरहाट)। वरिष्ठ समाजसेवी दानवीर परिवार के मुखिया श्री मालचंद गट्टाणी का 75 वर्ष की आयु में गत 24 जनवरी को जोरहाट (आसाम) में लम्बी बीमारी के बाद देहावसान हो गया। स्वर्गीय श्री गट्टाणी टीटाबर और जोरहाट की अनेक शैक्षणिक, सामाजिक, व्यावसायिक और औद्योगिक संस्थाओं में सक्रिय भूमिका निभा रहे थे। पिछले कई वर्षों से स्वर्गीय श्री गट्टाणी के पुत्र रमेश और भतीजे दिलीप, बांगड़ मेडिकल और जाजू ट्रस्ट के सहयोगी सदस्य हैं।

श्री चंद्रनारायण मानधन्या

कमलापुर (देवास)। कमलापुर जिला देवास के क्षेत्र में नगर सेठ के नाम से प्रख्यात रहे श्री चंद्रनारायण मानधन्या का गत 9 फरवरी को देहावसान हो गया। आप राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक कार्यों में हमेशा बढ़-चढ़कर भाग लेते थे। उन्नत कृषक के साथ-साथ व्यापार जगत में भी आपका नाम हमेशा मार्गदर्शक के रुप में लिया जाता रहा है। आप मध्यप्रदेश शासन की बागली तहसील की 20 सूत्रीय क्रियान्वयन समिति के सदस्य के साथ-साथ ग्राम पंचायत कमलापुर के निर्विरोध पंच तथा जिला माहेश्वरी सभा के कार्यसमिति के सदस्य के साथ-साथ देवास जिला माहेश्वरी सभा के उपाध्यक्ष भी में रहे हैं। आप अपने पीछे दो पुत्र गोविंद एवं सचिन का भरापूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गये है।

श्री विपिन मानधन्या

इंदौर। कमलापुर के युवा समाजसेवी श्री विपिन मानधन्या का विगत 6 फरवरी को गंभीर बिमारी के चलते निधन हो गया है। श्री मानधन्या सक्रिय समाजसेवी एवं राजनीतिज्ञ के रूप में अपने क्षेत्र में लोकप्रिय थे। आप अपने पीछे भरा पूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गये हैं।

सीमा को पीएच.डी. उपाधि

राँची। सीमा चितलांगिया धर्मपत्नी- डॉ. आनन्द कुमार चितलांगिया और पुत्रवधू - स्व. श्रीमती गायत्री देवी - स्व. श्री हरिप्रसाद चितलांगिया को राँची विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में रसायन शास्त्र (केमिस्ट्री) में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त हुई। इसमें उनके रिसर्च का विषय था- 'Preparation and Characterization of Host-Guest Complexes of Transition Metal Ions with Crown Ethers'।

पार्थ सीए फाउंडेशन उत्तीर्ण

दुर्ग (छ.ग.)। समाज सदस्य दीपक व मंगला भूतडा के सुपुत्र पार्थ ने कुल 308 अंको के साथ विशेष योग्यता सहित सीए फाउंडेशन की परीक्षा उत्तीर्ण की।

कुणाल बने सीए

हैदराबाद (तेलंगाना)। समाज सदस्य- जुगलकिशोर-जयश्री के सुपुत्र कुणाल मुंदड़ा ने सीए की परीक्षा श्रेष्ठ अंकों से उत्तीर्ण की।

गोविंद बने सीए

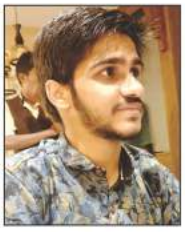

वरंगल (तेलंगाना)। समाज सदस्य सत्यनारायण सोनी के सुपौत्र तथा चंपालाल तथा शशिकला के सुपुत्र गोविंद सोनी ने सीए की परीक्षा में सफलता प्राप्त की।

हर्षित बने सीए

मालेगावं (नाशिक)। माहेश्वरी समाज सदस्य कैलाश व सरिता बाहेती के सुपुत्र हर्षित बाहेती ने सीए फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण की। इस उपलब्धि पर समस्त स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया है।

रौनक बने सीए

राजसमन्द। श्री महेश प्रगति संस्थान राजसमन्द राजस्थान के पूर्व अध्यक्ष एवं राजसमंद जिला माहेश्वरी सभा के पूर्व सचिव भगवती लाल असावा एवं महेश महिला प्रगति संस्थान की अध्यक्षा सीमा असावा के पुत्र रौनक असावा ने सी ए की फाइनल परीक्षा उत्तीर्ण की। श्री महेश प्रगति संस्थान उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

वीणा माहेश्वरी को गोल्ड

राँची। वीणा माहेश्वरी ने 1986 में ग्रेजुएशन करने के 33 साल बाद पढ़ाई प्रारंभ कर एमए ज्योर्तिविज्ञान विषय में राँची विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। वीणा माहेश्वरी रांची के प्रसिद्ध समाजसेवी स्व. श्री बाबुलाल काबरा की सुपुत्री है।

यूजीसी नेट परीक्षा में भावना को 99.72

राँची। झारखंड बिहार प्रदेश माहेश्वरी सभा के पूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय मोहनलाल सोमानी की सुपौत्री एवं रेखा-श्रीराम सोमानी की सुपुत्री भावना सोमानी ने यूजीसी नेट की परीक्षा 99.97 पर्सेंटाइल के साथ उत्तीर्ण कर असिस्टेंट प्रोफेसर की पात्रता तथा जूनियर रिसर्च फेलोशिप हासिल की है।

आदिति को पीएच.डी. उपाधि

आमगाँव। समाज सदस्य सौरभ डांगरा की धर्मपत्नी, उमा-जयंत डांगरा की पुत्रवधू तथा वैजयंती राजेंद्र माहेश्वरी की सुपुत्री अदिति को आर.एस.टी.वि.वि. नागपुर द्वारा पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। इन्होंने इसके लिये 'Performance analysis of women enterpreneur in self help groups' विषय पर शोध कार्य पूर्ण किया था।

सर्वेश कास्ट मैनेजमेंट में टॉपर

राँची (झारखंड)। कॉस्ट एंड मैनेजमेंट एकाउंटेंट (सीएमए) दोनों ग्रुप की इंटरमीडिएट परीक्षा रांची निवासी अरुण साबू व रंजना साबू के सुपुत्र सर्वेश साबू ने ऑल इंडिया टॉपर के रूप में उत्तीर्ण की। इसमें उन्होंने कुल 800 में से 619 अंक हासिल किये हैं।

तन्मय बने सीए

उज्जैन। समाज के वरिष्ठ सुशीला-पुरूषोत्तम सोमानी के सुपौत्र तथा अनुराधा-राजीव सोमानी के सुपुत्र तन्मय सोमानी ने सीए फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण कर समाज को गौरवान्वित किया।

कपड़े व्यक्ति को ढकते हैं और बातचीत व्यक्तित्व को, शब्दों का इस्तेमाल सोच समझकर करिए क्योंकि आपकी बातचीत ही आपके संस्कारों का दर्पण है।

मन में यदि दृढ़ इच्छा शक्ति हो तो कठिन से कठिन राह भी आसान हो जाती है। इसका ही उदाहरण हैं उदयपुर निवासी डॉ. श्रद्धा गट्टानी, जिन्होंने न सिर्फ पुरूषों के वर्चस्व वाले होटल व्यवसाय में भी शिखर की ऊँचाई को छुआ बल्कि समाजसेवी के रूप में ३ हजार से अधिक ऐसे वरिष्ठों की मुस्कुराहट का सबब भी बनीं, जिन्हें अपनों ने भी अकेला छोड़ दिया था। उनकी पहचान प्रथम हॉस्पिटेलिटी बिजनेस वूमन के रूप में भी है। अपने चिरपरिचित मुस्कुराहट भरी शैली के साथ डॉ. श्रद्धा गट्टानी श्री माहेश्वरी टाईम्स के यूट्यूब चेनल पर प्रति शनिवार को स्तम्भ ''बात हम सबकी'' के माध्यम से मार्गदर्शन दे रही है।

''मुस्कुराती'' प्रखर-वक्ता डॉ. श्रद्धा गट्टानी

उदयपुर में जब किसी के सामने श्रद्धा गट्टानी का जिक्र होता है, तो सहज ही उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति के सामने हर कोई नत मस्तक हुए बिना नहीं रहता। आखिर इसे उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति न कहें तो क्या कहें कि उन्होंने वर्ष 1993 में शादी के एक वर्ष पश्चात लगभग 19 वर्ष की अवस्था में ही न सिर्फ पुरूषों के वर्चस्व वाले होटल व्यवसाय में कदम रखा बल्कि उसे सफलतापूर्वक शिखर की ऊँचाई भी दी। उदयपुर के सुभाष नगर क्षेत्र में 16 कमरे से शुरू किये आरियंटल पैलेस होटल को अपनी मेहनत और इच्छाशक्ति से वर्ष 1998 में ही 50 कमरों के होटल तक बढ़ा ही दिया। इतना ही नहीं समाजसेवा के क्षेत्र में स्थापित उनका मुस्कान क्लब भी 3 हजार से अधिक वरिष्ठों की मुस्कान का सबब बन चुका है।

विवाह पश्चात भी चली उच्च शिक्षा

पढ़ाई और गायन की प्रतिभा से अपने स्कूली समय में हमेशा अव्वल रहने वाली डॉ. गट्टानी का जन्म अजमेर में डॉ. विनोद सोमानी व विद्या सोमानी के यहां हुआ और अपनी प्रारंभिक शिक्षा वहीं से पूरी करने के बाद 18 वर्ष की उम्र में उदयपुर के नीरज गट्टानी से आपकी शादी हो गई। विवाह के बाद आपने अपनी पढ़ाई को जारी रखते हुए मीरा गर्ल्स कॉलेज से कला में बीए तक की शिक्षा पूरी की और लगातार शिक्षा से जुड़े रहते हुए बिजनेस मैनेजमेंट कोर्स किया। उस वक्त मन में एक सपना संजोया था कि घर की चार दीवारी में ही ना रहते हुए बिजनेस वूमन के रूप में अपनी पहचान बनानी है। अपने इस सपने को पूरा करने के लिए शादी के बाद श्रीमती गट्टानी ने होटल व्यवसाय करने की मंशा जाहिर की। इस दौरान स्वयं में व्यापारिक क्षमताओं के विकास के लिए डिप्लोमा इन बिजनेस मैनेजमेंट के साथ मार्केटिंग में 1 साल का कोर्स करते हुए वर्ष 1999 में एमबीए भी पूर्ण किया। इसके पश्चात मार्केटिंग मैनेजमेंट में पीएच.डी. भी पूर्ण किया।

मुस्कान का सबब ''मुस्कान क्लब''

अपने से बड़ों को विशेष सम्मान और आदर भाव देने वाली डॉ. श्रद्धा गट्टानी ने समाज सेवा के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व कार्य करते हुए वरिष्ठ नागरिकों के लिए ऑरियंटल पैलेस रिपोर्ट में ही मुस्कान क्लब की स्थापना नवंबर 2002 में की। क्लब गठन के पहले ही दिन 500 वरिष्ठजन इस क्लब से जुड़े। वर्तमान में यहाँ 3 हजार से अधिक वरिष्ठ सदस्य हैं। यह देश का एकमात्र ऐसा वरिष्ठ क्लब है, जिसके द्वारा विभिन्न मनोरंजक गतिविधियों के साथ ही विदेश भ्रमण का भी वरिष्ठ सदस्यों के लिये आयोजन किया जाता है। स्थिति यह है कि यहाँ के वरिष्ठ विभिन्न देशों के ऐसे कई स्थानों का भ्रमण कर चुके हैं, जिनका वे सपना देखते थे। इसमें डांसिंग, मिमिक्री, खेल, योगा-ध्यान सहित कई गतिविधियाँ डॉ. श्रद्धा गट्टानी के मार्गदर्शन में आयोजित होती हैं।

परिवार की जिम्मेदारी का भी सफल निर्वहन

एक सफल बिजनेस वुमन व समाजसेवी के रूप में पहचान रखने वाली डॉ. गट्टानी अपने घर की चारदीवारी के लिये एक सफल गृहणी भी हैं। वे अपने पति सौम्या इनर्जी प्रा. लि. के डायरेक्टर नीरज गट्टानी को कंधे से कंधा मिलाकर यथा संभव सहयोग देती हैं। उनके परिवार में पुत्री श्रेया तथा पुत्र शौर्य शामिल हैं। पुत्री श्रेया का विवाह बैंगलौर के एक ख्यात बिजनेजमेन से हुआ है। पुत्र शौर्य वर्तमान में ऑस्ट्रेलिया से पढ़ाई कर लौट आये हैं तथा स्वयं का स्टार्टअप प्रारम्भ किया है। शौर्य वर्तमान में SIP Tea Coffee Premix मिनरल वाटर का उत्पादन कर रहे हैं। अपने पुत्र-पुत्री को वे उनके कैरियर के साथ-साथ व्यक्तिगत जीवन में भी उचित मार्गदर्शन देने में पीछे नहीं रहतीं।

सेवा ने दिलाया सम्मान

डॉ. गट्टानी मुस्कान सीनियर सिटीजन ग्रुप की डायरेक्टर, उदयपुर होटल एसोसिएशन की एक्जिक्युटिव, पीएचडी चेम्बर ऑफ राजस्थान की सदस्य, अनुपम महिला क्लब सचिव, रोटरी महिला क्लब की असिस्टेंट गवर्नर, माहेश्वरी महिला क्लब की एक्जिक्युटिव असिस्टेंट, मातुश्री महिला क्लब की डायरेक्टर, माहेश्वरी महिला गौरव तथा माहेश्वरी सेवा सदन की एक्जिक्युटिव मेम्बर, पीटी स्टूडियो की संस्थापक तथा अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन की एक्जिक्युटिव सदस्या भी हैं। अपनी सेवाओं के लिये डॉ. गट्टानी आऊटस्टेन्डिंग अवार्ड, भामाशाह अवार्ड, लाईफ फुलफिलिंग अवार्ड, मोस्ट हार्डवर्किंग वुमन अवार्ड सहित सुपर वुमन ऑफ उदयपुर, बेस्ट बिजनेस वुमन, बेस्ट सोश्यल वर्कर ऑफ उदयपुर तथा रोटरी क्लब एक्सीलेंस अवार्ड आदि से सम्मानित हो चुकी हैं। इनके अतिरिक्त वे उनके जीवन काल में बेस्ट ऑल राउण्डर स्टूडेंट, बेस्ट स्टूडेंट कोकिला, उदयपुर आयकॉन, टाईम्स ऑफ इंडिया द्वारा वुमन एक्सीलेंस, हिन्दुस्तान टाईम्स द्वारा वुमन इन्टरप्रेन्योर, रोटरी द्वारा आऊटस्टेंडिंग असिस्टेंट गवर्नर जैसे सम्मान के साथ माहेश्वरी महिला गौरव अवार्ड से भी सम्मानित हो चुकी हैं।

जब हौंसले हों बुलंद तो उन्नति के पथ की ओर बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। इन्हीं पंक्तियों को चरितार्थ करते हुए अपने कला के शौक को अपना कॅरियर बनाकर न सिर्फ ख्यात कलाकार बल्कि कलागुरू के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाकर अपना योगदान दे रही हैं, गुवाहाटी (आसाम) निवासी चंचल राठी।

लोक कला गुरू
चंचल राठी

गुवाहाटी (आसाम) निवासी चंचल राठी की पहचान न सिर्फ क्षेत्र बल्कि प्रदेशों की सीमाओं से भी परे एक ऐसे कलाकार के रूप में हैं, जिन्होंने नारी की सृजनात्मक क्षमता को पंख लगाने में सतत रूप से एक कलागुरू के रूप में अपना योगदान दिया है। वे न सिर्फ आर्ट एण्ड क्रॉफ्ट बल्कि विभिन्न क्षेत्रों की लोककलाओं की 22 से अधिक शैलियों में न सिर्फ महारथ हासिल कर चुकी हैं, बल्कि इनका प्रशिक्षण भी देकर नारी शक्ति के सशक्तिकरण में अपना योगदान दे रही हैं। श्रीमती राठी फेसबुक https://www.facebook.com/chanchalsomanirathi/ व यूट्यूब चैनल https://www.youtube.com/channel/UChojR-dbVolR-_QGJr5wX2w आदि द्वारा भी अपनी सजीव प्रस्तुति से नवागत कलाकारों की कला को हीरे की तरह तराश कर नगीना बना रही हैं।

परम्परागत परिवार में लिया जन्म

श्रीमती राठी का जन्म 18 अप्रैल 1985 को एक छोटे से गाँव जसवंतगढ़, जिला नागौर (राज.) में पवन कुमार व मंजुला देवी सोमानी के यहाँ 4 भाई-बहनों से भरे पूरे परिवार में हुआ था। ग्रामीण परिवेश के कारण कामर्स में द्वितीय वर्ष तक ही शिक्षा प्राप्त कर पाई लेकिन कला उन्हें ईश्वर प्रदत्त रूप से प्राप्त हुई। स्वयं श्रीमती राठी बताती हैं, "मुझे बचपन से ही पढ़ाई के साथ आर्ट एंड क्राफ्ट, साहित्य और अध्यात्म में रुचि थी। पर उस समय गांव में इतनी सुविधा नहीं थी और ना ही इनके प्रशिक्षण की कोई व्यवस्था। मैंने जो भी सीखा है अपने शौक और सीखने की लगन से ही सीखा है। आज तक मैंने किसी चीज की कोई क्लास नहीं की और मैं सबको यही बताना चाहती हूं कि अगर कुछ सीखने का मन हो तो किसी चीज का अभाव आप को रोक नहीं सकता।

समाजसेवा के साथ चली कला यात्रा

श्रीमती राठी का विवाह सुजानगढ़ (चुरु डिस्टिक राजस्थान) निवासी श्री अशोक कुमार राठी के पुत्र अनिल कुमार राठी से हुई। अभी वे गुवाहाटी (आसाम) शहर में रहती हैं। उनके दो बच्चे हैं आयुषी राठी, शौर्य राठी। वर्तमान में गुवाहाटी माहेश्वरी महिला समिति की सदस्य, पूर्वांचल माहेश्वरी महिला संगठन की सदस्य और राष्ट्रीय साहित्य समिति गुवाहाटी की संयोजिका भी हैं। समाज सेवा के साथ निःशुल्क कला प्रशिक्षण से उनकी कलागुरू के रूप में जो यात्रा प्रारम्भ हुई तो थमीं नहीं। कोरोना काल में गत 2 वर्ष पूर्व उन्होंने राष्ट्र स्तर पर निःशुल्क ऑनलाईन कला प्रशिक्षण क्लास प्रारम्भ की जो आज भी सतत जारी है। इनकी इन क्लास में आमतौर पर 500-700 प्रशिक्षु शामिल रहते हैं। इनमें वे आर्ट व क्रॉफ्ट के क्षेत्र में ड्राईंग, डेकोरेशन, राखी मेकिंग, प्रेजेंटेशन टेक्निक, लड्डू गोपाल ड्रेस तैयार करना, ज्वेलरी मेकिंग विद डेकोरेशन, पूजा थाली व बंदनवार सजावट आदि का प्रशिक्षण दे रही हैं। कोरोना काल में न सिर्फ स्वयं ने ऑनलाईन क्लासेस लीं बल्कि उन्होंने जरूरतमंद बच्चों के लिए निःशुल्क विभिन्न ऑनलाईन क्लासों के संचालन के लिये अन्य लोगों को भी प्रेरित किया। साहित्य सृजन के क्षेत्र में श्रीमती राठी ने विभिन्न विषयों पर कई कविताऐं लिखी हैं और विभिन्न प्रतियोगिताओं में भागीदारी भी की। कुछ समाजसेवी संस्थाओं के बारे में उनके क्रियाकलापों पर भी लेखन किया।

कला साधना ने दिलाया सम्मान

अपने निःस्वार्थ कला प्रशिक्षण प्रदान करने के इस प्रयास ने महिलाओं के बीच श्रीमती राठी को अत्यधिक सम्मान प्रदान करवाया जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी। देश के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न संस्थाओं द्वारा आयोजित आर्ट व क्रॉफ्ट स्पर्धाओं में श्रीमती राठी निर्णायक के रूप में अक्सर आमंत्रित की जाती रही हैं। उन्होंने "सबसे छोटी छप्पन भोग प्लेट" का निर्माण व सजावट कर वर्ल्ड रिकार्ड बनाया जो गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स तथा इन्टरनेशनल बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में दर्ज है। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा "सशक्त नारी" के सम्मान से भी सम्मानित किया गया। श्रीमती राठी को "वुमन आयकॉन अवार्ड 2022" भी प्राप्त हो चुका है। इस बार सीआईएलआर फाऊण्डेशन द्वारा "इन्टरनेशनल इन्स्पायरेशन वुमन अवार्ड 2022" से भी सम्मानित किया जा रहा है।

चिकित्सा का क्षेत्र तो वैसे ही मानवता की सेवा का क्षेत्र ही है। इसमें भी इंदौर निवासी ख्यात रेडियोलॉजिस्ट डॉ. वर्षा भंडारी (सोडानी) ने अपने इस व्यवसाय को मानवता को ऐसा समर्पित किया कि यह मानवता की पूजा ही बन गया।

मानवता की पुजारी

डॉ. वर्षा भंडारी (सोडानी)

इंदौर ही नहीं बल्कि पूरे म.प्र. में डायग्नोस्टिक्स के क्षेत्र में संपूर्ण सोडाणी डायग्नोस्टिक्स सेंटर एक अत्यंत प्रतिष्ठित नाम बन चुका है। इसका संचालन वृहद रूप में ख्यात रेडियोलॉजिस्ट डॉ. राजेन्द्र सोडानी एवं परिवार कर रहे हैं। इसकी सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में वर्तमान में लगभग 19 शाखाऐं हैं। कोरोना काल के दौरान भी उनके इस सेंटर ने मानवता को समर्पित वह सेवा दी, जो मानव सेवा की मिसाल बन गई। गत दिसम्बर 2021 में उनके सोडानी डायग्नोस्टिक क्लिनिक को केंद्रीय मंत्री ने मुश्किल दौर में मानवता की सेवा के लिये पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित भी किया था।

ऐसे बढ़े चिकित्सा की ओर कदम

डॉ. सोडानी का जन्म 27 सितम्बर 1988 को सारवाड़ (राज.) में सूरत निवासी श्याम व वंदना भंडारी के यहाँ हुआ था। बचपन से ही मानवता की सेवा संस्कारों के रूप में प्राप्त हुई। माता-पिता ने एक आदर्श को अपना कर उनकी शिक्षा दीक्षा में कोई कसर नहीं रख छोड़ी कि ''अगर आप एक औरत को शिक्षित करते हैं, तो आप एक पूरी पीढ़ी को शिक्षित करते हैं।'' इसी सोच के साथ आगे बढ़ी डॉ. वर्षा पढ़ाई के साथ साथ पेंटिंग, डांसिंग, आर्ट्स में भी उतनी ही रुचि रखती है। स्मीमर मेडिकल कॉलेज, सूरत से अपना एमबीबीएस पूरा किया और वर्ष 2012 में अनुराग सोडानी से विवाह के पश्चात से इंदौर में निवास कर रही हैं। विवाह पश्चात 6 महीने लीलावती हॉस्पिटल मुंबई में ट्रेनिंग ली । फिर 2016 से 2019 में रेडियोलॉजी में उज्जैन के आरडी गार्डी मेडिकल कालेज से पीजी करके वापस इंदौर आ गई। 2021 में 1 प्यारी सी बिटिया - वाणी को जन्म दिया।

मानवता की सेवा में बाल भी दान

विवाह के बाद पति व सास-ससुर का अपार सहयोग मिला जिसके कारण उनके कदम सफलता की ओर सतत बढ़ते ही चले गये। वर्तमान में उनके संपूर्ण सोडानी डाइग्नोस्टिक सेंटर के नाम से पूरे म.प्र. में 19 ब्रांच चलती हैं। डॉ. वर्षा, संपूर्ण सोडाणी डायग्नोस्टिक्स क्लिनिक, इंदौर में पिछले 3 वर्षो से अपनी सेवाए दे रही है। वैसे तो हम सब ही दान पुण्य करते रहते है परंतु एक अनोखा दान डॉ. वर्षा ने किया है, बालो का दान। कैंसर से पीड़ित मरीजों को कीमोथेरेपी इलाज के दौरान बाल गवाने पड़ते हैं, जिससे उनका मनोबल और टूट जाता है। इन मरीजों का दर्द कम करने की कोशिश में ये एक अनूठा कदम है। इसमें वे भेंट करती हैं, असली बालो का विग वह भी बिना किसी शुल्क के। असली बालों का विग बनाने के लिए उन्होंने स्वयं पहले बाल लंबे किये और 30 सेमी. लंबे बालों को दान कर दिया।

इरादे बुलंद हों और सभी को साथ लेकर चलने की क्षमता हो तो कठिन राह भी आसान बन जाती है। इन्हीं पंक्तियों को चरितार्थ कर रही हैं, दिग्रस निवासी राखी बंग, जो पुरूषों के वर्चस्व वाले ज्वेलरी व्यवसाय में विश्वास का नया नाम बनकर उभरती जा रही हैं।

ज्वेलरी व्यवसाय में उभरता नाम
राखी बंग

दिग्रस में हर कोई ज्वेलरी शॉप फर्म हीरालाल-मोतीलाल पर ग्राहकों की भीड़ से घिरी राखी बंग को देखकर आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रहता। कारण यह है कि अन्य सोने-चांदी की दुकानों पर आमतौर पर पुरूषों का ही वर्चस्व है लेकिन यहाँ की जिम्मेदारी राखी ने सम्भाल रखी है। वैसे पति अजय बंग भी इस व्यवसाय में उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर सहयोगी बने हुए हैं।

परिवार का मिला सम्बल

नंदुरबार (महाराष्ट्र) के प्रतिष्ठित समाजसेवी रमेश बांगड़ की सुपुत्री, दिग्रस (महाराष्ट्र) के पूर्व नगराध्यक्ष समाज सेवी विजय बाबू बंग की कुलवधु तथा सहृदय व्यवसायी अजय की जीवनसंगिनी राखी, विदर्भ ही नहीं अपितु पूरे महाराष्ट्र में ज्वेलरी की दुनिया में चिरपरिचित नाम बन चुकी हैं। गौर करने लायक यह भी है कि संस्कारों से परिपूर्ण राखी में अपनी सहजता, सरलता, कार्यकुशलता से सभी का मन जीत लेने के गुण के साथ उनमें कुछ करने का जज्बा भी है। कई प्रकार के विचारों के पश्चात स्व. श्री माणिकलालजी बंग द्वारा स्थापित तकरीबन 150 साल पुरानी प्रतिष्ठित फर्म हीरालाल मोतीलाल (सोने-चाँदी की दुकान) को और नया कलेवर देकर संभालने का प्रस्ताव परिजनों ने राखी के सामने रखा था।

व्यवसाय के गुर को गहराई से समझा

आमतौर पर ज्वेलरी हर भारतीय नारी की पहली पंसद रहती हैं। राखी भी उनमें से एक हैं। अतः उनका नारी होना उनके लिये सहयोगी सिद्ध हुआ। उन्हें परिजनों का साथ मिला और देखते ही देखते उन्होंने लंबी उड़ान भर ली। वाकपटुता में माहिर राखी ग्राहक की नब्ज पकड़कर अपनेपन और आत्मविश्वास के साथ पुराने और नए उम्दा एंटीक आभूषणों को बाजार से कम दामों में देकर उनकी अच्छी खासी बचत भी कराती हैं। यही कारण है कि बड़े-बड़े शहरों के लोग आभूषणों की खरीदी के लिए दिग्रस की ओर रूख कर लेते है। यह वाकई में अविश्वसनीय, मगर शत् प्रतिशत सच बात है।

पूरा परिवार भी साथ-साथ

उनकी पारिवारिक सुप्रसिद्ध हीरालाल मोतीलाल फर्म की बागड़ोर संभालने में सहयोग दे रहे उनके पति अजय के साथ पाँचवी पीढ़ी के युवा उनके पुत्र विराज भी बडी शिद्दत से विरासत को नए आयाम देने का दायित्व बखूबी निभा रहे हैं। पूजा पाठ से लेकर हर कार्य दक्षता से करने में निपुण, राखी अपनी सफलता का श्रेय सभी परिजनों के साथ को देकर यही कहती हैं, मैं भाग्यविधाता की शुक्रगुजार हूँ कि मायका और ससुराल इतना बेहतरीन देकर मुझ पर उपकार किया। वर्तमान में आपका सम्पूर्ण परिवार सहित पुत्र विराज व पुत्री ऐश्वर्या भी इसमें सहयोगी बने हुए हैं।

किसी सफल व्यक्तित्व की सफलता की कहानी सीधी सहज नहीं होती बल्कि उस सफल आयाम को पाने के पीछे छिपे होते हैं अथक प्रयास, मेहनत एवं तपस्या। ''स्वयं के लिए जिए, तो क्या गजब किए, परंतु अपने जीवन में किसी और के लिए/समाज के लिए जगमगाए दीये तो गजब किए।'' ऐसी ही समाजसेवी व्यक्तित्व की धनी हैं- पूर्वी म. प्रदेश मा. महिला संगठन अध्यक्षा अनिता जावंधिया।

समाजसेवा के पथ की पथिक
अनिता जावंधिया

पूर्वी मध्य प्रदेश महिला संगठन अध्यक्षा अनिता जावंधिया का जन्म नागदा निवासी दामोदर दास व स्नेहलता राठी के यहां चार भाई व पांच बहनों के हंसते - खेलते प्रतिष्ठित परिवार में बड़ी बेटी के रूप में हुआ। अनिता का विवाह अठारह वर्ष की आयु में राजेश जावंधिया पुत्र श्री तेजपाल/चंदादेवी जावंधिया बनखेड़ी के साथ सम्पन्न हुआ। आपके परिवार में एक पुत्री निधि जावंधिया एवं पुत्र सीए वैभव जावंधिया हैं। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को बखूबी निभाते हुए समाज की गतिविधियों में भी रूचिपूर्ण हिस्सा लेती रहीं। श्रीमती जावंधिया अपने मधुर व्यवहार के साथ कई कलाओं जैसे नृत्य, नाटिका आदि में भी पारंगत हैं। संगीत में तो समय-समय पर जिला, प्रदेश एवं राष्ट्रीय स्तर पर स्वयं को सिद्ध करने में कोई भी कसर नहीं छोड़ी।

ऐसे बढ़े समाजसेवा की ओर कदम

वर्ष 1986 से सामाजिक कार्यों में संलग्न श्रीमती जावंधिया ने स्थानीय इकाई की सचिव पद पर कार्यरत होने के पश्चात, नवचेतना मंडल की अध्यक्षा पद पर भी कार्य किया। फिर सीढ़ी दर सीढ़ी विभिन्न पदों पर रहकर अपनी कार्यशैली की छाप छोड़ी। जैसे स्थानीय संगठन के बाद जिले की सचिव संगठन और उसके बाद जिला सचिव पद को प्राप्त कर होशंगाबाद-हरदा जिलों के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्यों को अंजाम दिया। इसके पश्चात प्रदेश प्रतिभा विकास समिति का कार्य आपको सौंपा गया, जिसके अंतर्गत सदैव ही आपने छोटी-छोटी जगहों से नवीन प्रतिभाओं को न केवल खोजा वरन् उन्हें मंच भी प्रदान कर नई पहचान दिलवायी। इसके पश्चात प्रदेश कोषाध्यक्ष रहते रिकार्ड तोड़ कोष के साथ संगठन को और सुदृढ़ बनाया। आपके समर्पण और योगदान का नतीजा है कि आपने पू.म. प्रदेश के सचिव पद को अपनी मेहनत से शोभायमान किया। सभी को साथ लेकर चलने का आपका व्यवहार और पद का गुमान न करने का सरल व्यवहार ही आपकी पहचान है। आप वर्तमान में पू.म. प्रदेश महिला संगठन के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रही हैं।

सेवा ने दिलाया सम्मान

हमेशा ही टीम वर्क में विश्वास रखने वाली श्रीमती जावंधिया को सदैव ही सभी को जोड़ कर कार्य करने में महारथ हासिल है। अपने इसी

कार्यशील व्यवहार से सदैव सुचारू कार्य कर जटिल कार्यों को भी सरलता और सुंदरता से अंजाम देती हैं और इसीलिए इनकी सफलता का आयाम उच्च है। उनका ध्येय यही रहा कि कोई छोटा नहीं, कोई बड़ा नहीं होता। सिर्फ सकारात्मक एवं सटीक दृष्टिकोण आपकी पहचान है जो भीड़ में भी आपका स्थान तय करता है, न कि भीड़ का हिस्सा बनती हैं। इसी श्रृंखला में समाज के प्रति आपके उत्कृष्ट कार्यों की सराहना स्वरूप आपको कई अवार्ड्स से नवाजा गया, जिसमें नारी रत्न, समाज रत्न एवं राष्ट्रीय मंच से सर्वश्रेष्ठ सचिव का अवार्ड तक मुख्यतः मिले।

योगदानों पर एक नजर

प्रदेश में घर से व्यापार करने वाली 700 सदस्याओं की चेन बनाई। कोरोना काल में 100 गाँवों को सेनेटाइज किया गया साथ ही पूरे प्रदेश की सदस्याओं द्वारा जगह-जगह टिफिन सेंटर लगाए गए। कोरोना की पहली लहर में उनके अनूठे प्रयास से एक रात में ही 2 घंटे में 5100/- रुपए की राशि इकट्ठा कर आपदा फंड में भेजी गई। प्रदेश में हरियाली कार्यक्रम के तहत 11000 पौधारोपण कर उन्हें पेड़ बनाने का सफल संकल्प लिया गया, जिन्हें आज हम मुस्कुराता हुआ देख रहे हैं, जो भविष्य में फलदायी होंगे। आपने अपने प्रयासों से छोटे-छोटे गाँवों को संगठन से जोड़ने का सफलतम कार्य कर 20 गाँवों को मुख्य धारा से जोड़ा। ट्रस्ट के माध्यम से 11 महिलाओं को आर्थिक सहायता दिलवा कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का कार्य किया। निःशुल्क विवाह संबंध सहयोग समिति ''शुभ विवाह समिति'' द्वारा 1500 संबंध तय किए गये।

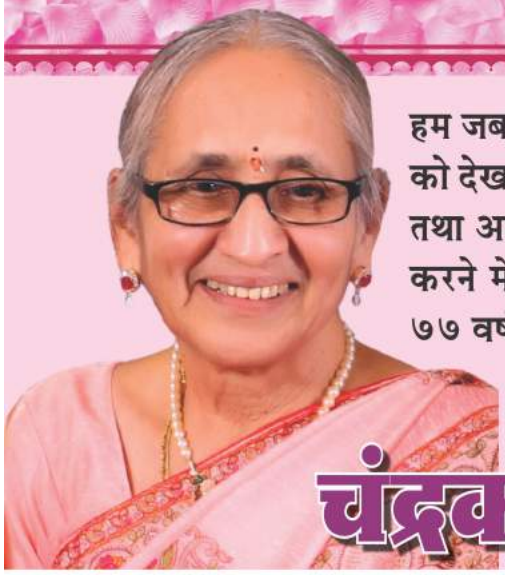

हम जब भी नारी शक्ति के मान सम्मान की बात करते हैं, तो विभिन्न घटनाओं को देखकर तमाम दावे झूठे से महसूस होते हैं। कारण है नारी में आत्मनिर्भरता तथा अपने अधिकारों की जानकारी की कमी। इन्हीं को लेकर जागृति उत्पन्न करने में अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित करती चली आ रही हैं, लातूर निवासी ७७ वर्षीय समाज सेवी चंद्रकला भार्गव (मणियार)।

नारी सशक्तिकरण की ज्योति जगाती चंद्रकला भार्गव (मणियार)

हम लातूर निवासी चंद्रकला भार्गव की जब बात करते हैं, तो लगता है कि जैसे वे माहेश्वरी नहीं हैं। हकीकत में देखा जाऐ तो भार्गव उनके पूर्वजों को संगीत के क्षेत्र में योगदान को लेकर मिली उपाधि है, जो अभी तक परिवार उपनाम के रूप में लगाता आ रहा है। वास्तव में आप मूल रूप से मणियार माहेश्वरी हैं। गत 45 वर्षों से श्रीमती भार्गव नारी के सर्वांगीण विकास, समानता व उसके सशक्तिकरण से सतत रूप से जुड़ी हुई हैं। युवावस्था से प्रारम्भ आपका यह अभियान उम्र के 77वें पड़ाव पर भी उसी तरह जारी है।

पति से मिली समाजसेवा की प्रेरणा

श्रीमती भार्गव का जन्म देश की आजादी के भी पूर्व 27 जनवरी 1945 को सोलापुर में स्व. श्री पन्नालाल व श्रीमती पार्वतीबाई डागा के यहाँ हुआ था। बचपन से तो धार्मिक माहौल मिला लेकिन लातूर निवासी श्री नंदकिशोर भार्गव के साथ परिणय सूत्र में बंधने के पश्चात ऐसा समाजसेवी माहौल मिला कि स्वयं के कदम भी समाजसेवा की ओर बढ़ चले। लगभग 11 वर्ष पूर्व दिवंगत हो चुके आपके पति स्व. श्री नंदकिशोर भार्गव ख्यात समाजसेवी संस्था रोटरी क्लब से तो सदस्य के रूप में सम्बद्ध थे ही, साथ ही कई अन्य समाजसेवी संस्थाओं में भी अपना योगदान दे रहे थे। आपने एक मूकबधिर विद्यालय स्थापित किया था, जो वर्तमान में मानसिक रूप से पिछड़े बच्चों को भी सेवा दे रहा है। इसके साथ ही आपने एक प्रतिष्ठित मराठी माध्यम विद्यालय श्री किशन सोमानी हाईस्कूल की भी स्थापना की थी। इन दोनों ही संस्थान से वर्तमान में श्रीमती भार्गव सदस्या के रूप में सम्बन्ध हैं।

ऐसे बढ़े नारी सशक्तिकरण की ओर कदम

एम.ए. अंग्रेजी, पी.जी. डिप्लोमा इन टीचिंग इंग्लिश तथा स्पेशलाईजेशन इन फोनेटिक्स एण्ड लिंग्विस्टिक्स तक उच्च शिक्षित श्रीमती भार्गव ने 12 वर्षों तक एस.पी. महाविद्यालय पुणे व दयानंद महाविद्यालय लातूर में अध्यापन किया। इसके बाद अपने पति द्वारा स्थापित विद्यालयों को समर्पित हो गईं। नवान्वेषण के अंतर्गत वर्ष 2019-20 में श्री किशन सोमानी विद्यालय के बच्चों के लिये 11 हजार इंग्लिश शब्दों के सही उच्चारण की स्वयं की आवाज में रिकार्डिंग की, जिसका विद्यार्थियों को बहुत लाभ मिल रहा है। इसके साथ ही वर्ष 1983 से नारी प्रबोधन मंच लातूर के माध्यम से नारी के सर्वांगीण विकास के लिये कार्य प्रारम्भ किया। यह संस्था में वर्ष 1985 से 1999 तक आपके अध्यक्षीय मार्गदर्शन में कार्यरत रहीं। उसी समय से आदर्श महिला गृह उद्योग लातूर इस संस्था की अध्यक्षा के रूप में काम चल रहा है।

देश की सीमाओं से बाहर तक जनजागरण

श्रीमती भार्गव संस्था आदर्श महिला गृह उद्योग की अध्यक्ष के रूप में नारी के सर्वांगीण विकास तथा सशक्तिकरण के लिये सतत रूप से कार्य कर रही हैं। यह संस्था 152 ग्रामों में अपनी सेवा दे रही है। इसी के अंतर्गत 650 महिला बचत गट के माध्यम से 7500 से अधिक महिलाओं को रोजगार प्रदान किया, जिनमें अधिकांश गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाली महिलाऐं शामिल हैं। संस्था ने 9 करोड़ रुपये का ऋण स्वरोजगार के लिये लिया था, जो वह शत प्रतिशत उतार चुकी है। वे इनरव्हील क्लब लातूर, महाराष्ट्र स्त्री अभ्यास व्यासपीठ महाराष्ट्र तथा माहेश्वरी महिला मंडल लातूर से भी सम्बद्ध हैं। सामाजिक जागृति तथा महिला अधिकारों को लेकर वे अभी तक 2 हजार से अधिक उद्बोधन विभिन्न आयोजनों में दे चुकी हैं। इसी से संबंधित नाटिका "मुलगी झाली हो" की पूरे महाराष्ट्र में 150 से अधिक प्रस्तुति दे चुकी हैं। इसी नाटिका की एकल पात्र के रूप में 42 से अधिक प्रस्तुति भी श्रीमती भार्गव ने दी हैं, जिसमें से 7 से अधिक प्रस्तुति तो अमेरिका में दी हैं। आपके पुत्र मनोज भार्गव तथा पुत्री अनुपमा-संदीप धूत अमेरिका में ही निवास कर रही हैं। अतः उन्होंने भी वहाँ इनकी प्रस्तुति में सहयोग प्रदान किया। बेटे संजीव भार्गव लातूर में ही निवास कर रहे हैं और अपनी माता श्रीमती भार्गव को समस्त गतिविधियों में सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

सेवा के वृहद आयाम

श्रीमती भार्गव की समाजसेवा यहीं तक ही नहीं थमी। आपके लिखे कई आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। अभी तक लगभग 13 हजार से अधिक महिलाओं को उन्होंने व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करवाया है। "जिज्ञासा" और "दीपशिखा" जैसे कई आयोजन किशोर

लड़के-लड़कियों के लिये विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में किये। पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में पौधारोपण, केमिकल रहित कृषि आदि के साथ ही कोविड-19 के दौरान राशन वितरण तथा चिकित्सा सेवा में योगदान भी दिया। 20 ग्राम पंचायतों में जनजागृति उत्पन्न कर बिना दहेज के विवाह सम्पन्न करवाये। इतना ही नहीं वर्ष 1995 में आयोजित बीजिंग अंतर्राष्ट्रीय महिला परिषद में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए वहाँ नाटक ''शांतता'' की प्रस्तुति भी दी। आपके द्वारा लिखित 500 माहेश्वरी महिलाओं के साक्षात्कार पर आधारित पुस्तक ''कठपुतली'' भी प्रकाशित हो चुकी है। एचआईवी एड्स तथा टीबी के प्रति भी आप जनजागृति उत्पन्न कर रही हैं। अपने यूट्यूब चेनल ''ओंकार थेरेपी'' से लोगों को मार्गदर्शित कर शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास के लिये कार्यरत हैं।

सेवा ने दिलाया सम्मान

''अर्थ-फाउंडेशन मुंबई द्वारा तेजस्विनी पुस्कार 2021, 'महेश गौरव पुरस्कार-2021' (महेश प्रोफेशनल फोरम और महेश प्रोफेशनल चैरिटेबल ट्रस्ट, पूना), 'जिजाऊ समाजरत्न पुरस्कार' - 2021, आईसीएआई की ओर से महिला सक्षमीकरण पुरस्कार, व्यवसायिक उत्कृष्टता पुरस्कार 2019-20 (रोटरी क्लब ऑफ श्रेयस लातूर), महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा 'समर्पिता' पुरस्कार-2016, ''आई वालंटियर्स'' संस्था व महाराष्ट्र फाउंडेशन, (अमेरिका) आदि सहित विभिन्न संस्थाओं से लातूर गौरव पुरस्कार, अहिल्यादेवी होलकर पुरस्कार आदि से आप सम्मानित हो चुकी हैं। 1996-1997 में सरकार की तरफ से शराब बंदी के काम के लिए सम्मानित हुई। इसके अतिरिक्त महिला और ग्रामीण विकास के लिए जिला पुलिस अधीक्षक और 'युनिसेफ' की तरफ से भी सम्मानित हुई। अटलांटा (अमेरिका) निवासी लेखिका जया कमलानी ने अपनी- "To India With Tough Love" पुस्तक में एक पूरा चेप्टर उनके काम पर लिखा है। इस किताब को 'भारत सम्मान पुरस्कार', 'हिंद रतन पुरस्कार' व महात्मा गांधी पुरस्कार मिला है। वक्ता के रूप में Indian Development Services, Chicago, India Development Coalition America (IDCA), महाराष्ट्र फाऊंडेशन, अमेरिका, प्रिन्स्टन युनिव्हर्सिटी अमेरिका आदि द्वारा अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर निमंत्रित और सम्मानित हुई।

आमतौर पर कृषि को एक ऐसा श्रमसाध्य व्यवसाय माना जाता है, जिससे कतिपय शिक्षित वर्ग भी घबराता है। यही कारण है कि यह पुरुष प्रधान क्षेत्र ही रहा है। ऐसे क्षेत्र में नारी शक्ति का परचम लहराकर ''धरती भूषण'' सम्मान से सम्मानित होने वाली ''माहेश्वरी शक्ति'' हैं, ग्राम कांटाफोड़ जिला-देवास (म.प्र.) निवासी कृष्णादेवी सिंगी।

''धरती भूषण'' से सम्मानित
कृष्णादेवी सिंगी

कांटाफोड़ जिला देवास (म.प्र.) निवासी कृष्णा सिंगी एक ऐसी आदर्श कृषक हैं जिन्होंने पति के देहावसान के बाद न सिर्फ कृषि को अपनी आजीविका बनाया बल्कि उससे अन्यों को रोजगार भी दिया। इतना ही नहीं वे अपनी आदर्श कृषि से ''धरती भूषण'' का सम्मान प्राप्त कर सम्पूर्ण प्रदेश के लिये सम्माननीय बनी हुई हैं। धरती भूषण से सम्मानित आप एक सरल सहृदया व सादगी से परिपूर्ण महिला है एवं एक कर्म योगी के रूप में अपना जीवन निर्वाह कर रही हैं।

पति की विरासत को दी ऊँचाई

श्रीमती सिंगी का जन्म श्री लक्ष्मीनारायण व लीलादेवी राठी के यहां राहुरी जिला अहमदनगर में 31 अक्टूबर 1950 में हुआ। आप चार भाई व तीन बहनों में दूसरे नंबर की हैं। आपने दसवीं तक स्कूली शिक्षा प्राप्त की और आपका विवाह 1968 में कांटा फोड़ निवासी श्री छगनलाल सिंगी के साथ संपन्न हो गया। 40 वर्ष वैवाहिक जीवन व्यतीत करने के बाद अचानक जीवनसाथी का देवलोक गमन हो गया। इस दुःख को आपने भगवान की देन मानते हुए अपने आपको इस तरह तैयार किया कि श्री सिंगी द्वारा जो 16 एकड़ खेती की जाती थी उसे ही अपना जीवन जीने का जरिया बना लिया और स्वयं उस खेती को करने लगीं। इसमें गेहूं, चना, मक्का और सोयाबीन की फसल आपके द्वारा ली जाती है।

आधुनिक तकनीकों का भी साथ

आपकी दो बेटियां हैं अनीता मूंदड़ा व दूसरी छोटी बेटी मनीषा। आपकी भगवान में अटूट आस्था है। उनके आशीर्वाद एवं विश्वास से ही आज उनकी कृषि भूमि पर फ़सल लहलहा रही हैं। समय की ज़रूरत को समझ, अपने कृषि कार्य को सुचारु सम्पन्न करने के लिए इन्होंने मोबाईल की तकनीकों को भी सीखा। अब अपने इस ज्ञान से खाद, बीज, दवाइयाँ, ट्रेक्टर के लिए स्वयं ही व्यवस्था करती हैं। सहकारी संस्था और बैंक से क्रॉप लोन लेकर आप अपनी खेती का संचालन करती हैं। अन्य लोगों को रोज़गार मिले इसके लिए खेतिहर मजदूरों द्वारा भी कटाई, निंदाई के कार्य करवाती हैं। कृषि कार्य की समस्त व्यवस्थाओं का संचालन बखूबी स्वयं ही करती हैं। अपने मोबाईल से सभी परिजनों के सम्पर्क में रह खुशहाल जीवन जी रही हैं।

वर्तमान दौर में व्यस्तता के कारण घटते सम्पर्कों की स्थिति में दाम्पत्तय के रिश्ते तय करना एक अत्यंत कठिन कार्य बनता जा रहा है। इस समस्या का वाट्सअप ग्रुप के रूप में अत्यंत सरल समाधान कर ३ हजार से अधिक रिश्ते जोड़ने का कीर्तिमान बना चुकी हैं, शिवपुरी निवासी रेखा लड्ढा।

दाम्पत्य के रिश्तों की सूत्रधार

रेखा लड्ढा

सफल वैवाहिक रिश्ते ही सुखी जीवन की प्रथम सीढ़ी है। लेकिन वर्तमान दौर में रिश्तों की सफलता व असफलता तो बाद की बात है रिश्ते जोड़ना ही एक बड़ी चुनौती बन गया है। कारण है, व्यक्तिगत व्यस्तता के कारण अब कोई किसी को संबंधों की जानकारी नहीं देता। ऐसी ही समस्या के समाधान में जुट कर समाज सेवा में अपना अमूल्य योगदान दे रही हैं, रेखा लड्ढा। तब मन में विचार आया कि कुछ कर सकती हैं, इस समस्या के निदान के लिए और उन्हें अवसर मिला। प्रदेश में कार्य करने के लिए विवाह सहयोग समिति में राष्ट्रीय अध्यक्ष व प्रदेश अध्यक्ष के साथ मिलकर, उनके मार्गदर्शन में कार्य प्रारंभ किया। धीरे-धीरे पूरा ऑल वर्ल्ड जुड़ता गया। इसके लिये अब तक वाट्सएप पर 22 ग्रुप बन चुके हैं। संगठन ने गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड भी हासिल किया 3110 संबंध बनाकर। आज की तारीख में 4000 संबंध 4 साल में तय हो चुके हैं।

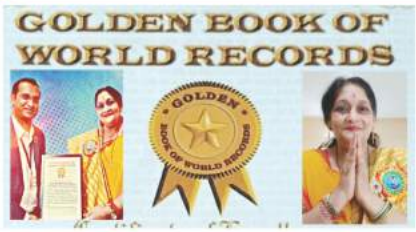

इस तरह हुई शुरुआत

श्रीमती लड्ढा का जन्म 16 जून 1965 में इंदौर में सिंगी परिवार कांटा फोड़ वालों के यहां श्री प्रेम नारायण व पुष्पा देवी सिंगी की पुत्री के रूप में हुआ। शिक्षा बीए तक प्राप्त की व 18 वर्ष की उम्र में विवाह शिवपुरी के हरिमोहन लड्ढा के साथ हो गया। संपन्न परिवार, घर का ही बिजनेस, तीन ननद की शादी, दो बेटों की जिम्मेदारी के बाद भी उन्हें लगा कि उन्हें कुछ करना चाहिए। कारण सभी की शादियों के समय संबंध तय करने में व देखने में बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ा। राष्ट्रीय महामंत्री और प्रदेश अध्यक्ष शिवपुरी पधारे, तो इस समस्या के बारे में उन लोगों से चर्चा की। उन्होंने यह कार्यभार श्रीमती लड्ढा को सौंपा। बस फिर उन्होंने राष्ट्रीय अध्यक्ष कल्पना गगरानी के साथ और सहयोग से इस समस्या का हल ढूंढते हुए माहेश्वरी परिवार के बायोडाटा एकत्रित करना शुरू कर दिया। इसमें सरस्वती मालू, मीना चौधरी, दर्शना जाजू, मीना बड़ौदा, सुचिता राठी, कमल, सुरूचि, मधु, संगीता, अर्चना, सुनीता, सरोज, शिल्पा आदि साथियों का सहयोग सतत् प्राप्त होता रहा।

एक माह की मेहनत रंग लायी

स्वयं श्रीमती लड्ढा बताती हैं कि बहुत मुश्किलों के बाद मुझे एक हजार बायोडाटा 1 महीने में मिले। बायोडाटा एकत्रित हो जाने के बाद मुश्किल यह थी कि इनके आपस में मिलान कैसे हों, वे एक दूसरे तक कैसे पहुंचे? बस इसी के लिये व्हाट्सएप ग्रुप बनाएं व सभी के नंबरों को जोड़ना शुरू किया। नंबर मिलना भी बहुत मुश्किल काम था, कोई व्हाट्सएप पर थे, कोई नहीं थे। सभी को समझाकर ग्रुप बनाएं, एक दूसरे के बायोडाटा एक दूसरे को दिए, लोगों से बात की। संबंध आगे बढ़ाने के लिए, इस कार्य में पहले बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा, लेकिन जब सभी को बात समझ में आने लगी तो हर जगह के बायोडाटा मिलने शुरू हो गये। सभी को संबंध देखने और करने में आसानी महसूस होने लगी क्योंकि कोई किसी को संबंध बताना नहीं चाहते। हमने व्हाट्सएप द्वारा एक दूसरे को मिलाया। घर परिवार की जिम्मेदारी के साथ मुझे इस कार्य में बहुत परेशानी हुई लेकिन मन बना लिया था कि मुझे यह कार्य करना ही है, संबंध कराने ही हैं। माहेश्वरी परिवार के बच्चों के संबंध माहेश्वरी में ही हों यही इच्छा मन में थी और वह कर भी लिया।

रिश्ते जोड़ने में भी वर्ल्ड रिकॉर्ड

रोज संबंध होने लगे ऑल वर्ल्ड जुड़ चुका, प्रदेश जोड़ना था, लेकिन संबंध प्रदेश में नहीं हो सकते थे। बहुत दिक्कतों के बाद श्रीमती गगरानी के साथ सहयोग से आगे बढ़ती चली गई। 3 वर्ष में 3000 संबंध का रिकॉर्ड बनाया। नम्बर के साथ फाइल तैयार की, सभी को सबूत दिए, सोमनाथ में सम्मान हुआ और फिर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया 3110 संबंध का। वहां भी उन्होंने सारे नम्बर के साथ सबूत दिए, हर कार्य बहुत आसान लग रहा है। श्रीमती लड्ढा कहती हैं शुरू में बहुत दिक्कतें आई समय भी बहुत देना पड़ा और परिवार को भी समझाना पड़ा लेकिन परिवार का साथ और सहयोग होने से मैं इस कार्य को आसानी से कर पाई।

बोनसाई अर्थात् छोटे रूप में बड़े पेड़ों को गमलों में लगाना वास्तव में यह कला हमारे ही देश की प्राचीन कला है। पौराणिक प्रमाण के आधार पर इस कला को विश्व स्तर पर स्थापित करती हुई सर्वाधिक बोनसाई वृक्षों के प्रदर्शन के लिये ''गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड'' में अपनी नाम दर्ज करवा चुकी हैं, बोनसाई मास्टर पुणे निवासी प्राजक्ता काले।

बोनसाई आर्ट की वर्ल्ड रिकार्डधारी कलाकार

प्राजक्ता काले

समाजसेवी गिरधारी काले (काल्या) की धर्मपत्नी प्राजक्ता काले की पहचान न सिर्फ पुणे शहर या महाराष्ट्र प्रदेश तक सीमित है बल्कि उनकी ख्याति सम्पूर्ण विश्व में उनकी उपलब्धियों की पताका फहरा रही हैं। इसमें उनके परिवार की वेदशास्त्र तथा आयुर्वेद के प्रति रूचि सहयोगी बनी। श्रीमती काले गत 36 वर्षों से इन्टरनेशनल बोनसाई मास्टर व डायरेक्टर के रूप में कृषकों, स्व सहायता समूहों तथा ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के बेरोजगार युवाओं के लिये संस्था ''बोनसाई नमस्ते'' का संचालन करते हुए इस कला को विश्व स्तर पर भी प्रतिष्ठित कर रही हैं। उन्होंने 10 एकड़ क्षेत्र में विश्व का सबसे बड़ा ''बोनसाई गार्डन'' तैयार किया है, जो पर्यटकों के लिये आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। यह गार्डन ''बोनसाई आर्ट'' को लेकर आयोजित वर्कशॉप, सेमिनार व प्रशिक्षण का केंद्र भी बना हुआ है।

प्राचीन वामन वृक्ष कला को किया प्रतिष्ठित

इस कला के प्रोत्साहन के पीछे श्रीमती काले का लक्ष्य प्राचीन भारत की ''वामन वृक्ष कला'' को पुनः प्रतिष्ठित करना है, जो वर्तमान में विश्व स्तर पर बोनसाई आर्ट के रूप में जानी जाती है। वे अपने प्रयास के अंतर्गत विश्व के सबसे बड़े ''इंटरनेशनल बोनसाई कन्वेंशन और प्रदर्शनी'' का पुणे में आयोजन कर चुकी हैं। इसमें 2 लाख से अधिक लोगों ने शामिल होकर ''बोनसाई आर्ट'' के बारे में जाना व देखा। उन्होंने अंग्रेजी तथा मराठी में एक पुस्तक 'Bonsai, India's Ancient Art of Vaman Vriksha ' लिखी है, जो इस कला के बारे में जागरूकता उत्पन्न करती है। राहुरी कृषि विद्यापीठ के सहयोग से उन्होंने ''बोनसाई आर्ट'' में डिप्लोमा सर्टीफिकेट कोर्स भी स्कील इंडिया मिशन के अंतर्गत सृजनात्मकता के विकास के लिये तैयार किया है। श्रीमती काले की विशेषता यह है कि वे अपने समस्त बोनसाई वृक्षों की देखभाल गत 36 वर्षों से बच्चों की तरह कर रही हैं।

क्या है आखिर बोनसाई

आयुर्वेद में हमारे ऋषि मुनि अलग-अलग प्रकार के वृक्षों के पत्तों व जड़ से दवा बना करके देते थे। एक ही जगह पर बैठकर हमारे ऋषियों को सभी को दवा देना संभव नहीं हो रहा था, एकजगह से दूसरी जगह जाना और उसी प्रदेश में ठीक उसी गुण का पेड़ मिलना संभव नहीं होता था इसलिए उन्होंने वृक्षों को गमले में लगाना शुरु किया। हर बार दवाई के लिये उस पेड़ के अलग-अलग हिस्से को काटकर निकालते थे। एक जगह से दूसरी जगह पर छोटे-छोटे पोधे ले जाते थे। हर बार दवाई के लिये काटने कि वजह से पौधा छोटा रहता था। इसे सब वामनवृक्ष कहने लगे और यह बोनसाई याने वामन वृक्ष कला कहलाई। कहा गया है वही कला भारत से विदेशों में चली गई और उसका नाम बोनसाई हो गया। यह कला पौराणिक प्रमाण के आधार पर हमारे देश की कला है, इस कला को विस्तार करने के लिए स्थापित करती हुई सर्वाधिक याने 3333 वामन वृक्षों का प्रदर्शन आयोजित करने के लिए गिनीज बुक वर्ल्ड रिकॉर्ड दर्ज करने का सम्मान बोनसाई मास्टर पुणे निवासी प्राजक्ता काले को मिला है।

सम्मान की वृहद श्रृंखला

श्रीमती काले अपने इन योगदानों के लिये वर्ष 2018 में ''गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड'' से सम्मानित होने का गौरव भी प्राप्त कर चुकी हैं। इसके साथ ही वे कई अंतर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित हो चुकी हैं। इनमें द यूरोपियन इन्टरनेशनल युनिवर्सिटी पेरिस (फ्रांस) द्वारा ''प्रोफेशनल डॉक्टोरल सर्टीफिकेट'', इन्डोनेशिया बोनसाई सोसायटी द्वारा ''ग्रांड मास्टर'', इन्टरनेशनल बोनसाई क्लब की प्रतियोगिता की विजेता सहित 17 अंतर्राष्ट्रीय मास्टर्स सम्मान से वे सम्मानित हो चुकी हैं। बोनसाई यूरोप द्वारा ''बोनसाई एंजेल'', वर्ल्ड बोनसाई फ्रेंडशिप फेडरेशन द्वारा ''आऊटस्टेडिंग बोनसाई अवार्ड'', बोनसाई क्लब इंटरनेशनल द्वारा ''द एक्सीलेंट अवार्ड' तथा इंडोनेशिया बोनसाई सोसायटी द्वारा ''दी जुरी अवार्ड'' से सम्मानित किया जा चुका है। उनके ''बोनसाई नमस्ते इन्टरनेशनल कान्वेंशन'' की सफलता के लिये ''हो ची मिन्च सिटी बोनसाई एसोसिएशन'' द्वारा भी सम्मानित किया गया था। राष्ट्रीय स्तर पर सिक्किम के राज्यपाल द्वारा ''पुणे प्राइड अवार्ड'', सश्यबंधु अवधूत दत्ता पीठम मैसूर द्वारा ''स्पेशल अवार्ड'', नेशनल वुमन्स सम्मिट 2018 नईदिल्ली द्वारा ''एक्सीलेंस अवार्ड'', माहेश्वरी समाज के अंतर्राष्ट्रीय महाधिवेशन जोधपुर में ''प्रतिभा सम्मान अवार्ड'' तथा महाराष्ट्र सरकार द्वारा ''जीजा माता कृषि भूषण अवार्ड-2018'' आदि से सम्मानित हो चुकी है। पूर्व राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल ने भी उनके योगदानों को सराहा था।

राजस्थान के राजनगर जिला राजसमंद में १६ जुलाई १९६२ को श्रीकृष्ण झंवर एवं कंचन देवी के यहाँ जन्मीं चित्ताड़गढ़ निवासी उषा सोमानी पत्नी राजेन्द्र सोमानी ने जीवन की तीसरी पारी में एक बाल कहानीकार के रूप में अपनी पहचान बनायी है। बाल साहित्य में कहानी, आलेख, आत्म कथा, कविता व पहेली विधा में सृजन कर बाल साहित्य को समृद्ध करने में अमूल्य योगदान दिया है। आइए जानें उषा सोमानी से उन्हीं की जुबानी उनकी साहित्यिक यात्रा की कहानी।

बाल साहित्य की सृजनकर्ता

उषा सोमानी

मेरी गुरू माँ विमला दीदी ने खुशखबरी के साथ बधाई दी। उन्होंने बताया कि मुझे अखिल भारतीय आत्मकथा लेखन प्रतियोगिता के लिए प्रथम पुरस्कार की विजेता होने का सौभाग्य मिला है। जीवन के 60 साल के पास पुरस्कार पाकर ऐसा लगा मानो वृद्धावस्था में तरुणाई आ गयी। लगा कल की ही तो बात थी- अतीत की यादें मानस पटल पर आकाश में चमकती बिजलियों सी चमकने लगी।

मैं अर्थशास्त्र में एम. ए. करने के बाद प्रशासनिक सेवा में जाना चाहती थी, परंतु विधि का विधान, शादी कर शहर से गाँव में आ गई। एकल परिवार से संयुक्त परिवार के साथ सामंजस्य बिठाते हुए, खट्टे-मीठे अनुभवों से गुजरते हुए, समय पंख लगाकर बीत गया। बेटा और बेटी के जन्म से मातृत्व सुख का आनंद पाया। उनके अच्छे स्कूल और शिक्षा के लिए चित्तौड़गढ़ बसने का निर्णय लिया। धीरे-धीरे बच्चों के आत्मनिर्भर होने से दिन बड़े लगने लगे और खाली समय काटने लगा। तभी मन में विचार आया और बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना शुरू किया। ये सफर भी बहुत शानदार था। बच्चों का साथ बहुत आनंद और अनुभव दे गया।

मैंने सामाजिक गतिविधियों में भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। मुझे माहेश्वरी महिला संगठन चित्तौड़गढ़ के नगर व जिला सचिव पद पर एवं राजस्थान प्रदेश की सांस्कृतिक सचिव पद पर कार्य करने का अवसर मिला। फिर अचानक एक दिन जीजाजी का फोन आया। कॉमर्स कॉलेज में गेस्ट फैकल्टी के रूप में अर्थशास्त्र पढ़ाने का प्रस्ताव मिला। प्रस्ताव सुनकर बहुत खुश हुई, परंतु इतने लंबे समय के अंतराल से अपने विषय को लेकर मन में विचारों कि उथल-पुथल मच गई। दिल के एक कोने से आवाज आई, 'तुम कर सकती हो।' मैंने वह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। शिक्षिका के रूप में कॉलेज का पहला दिन, जीवन का बहुत सुखद अनुभव रहा। उस दिन एहसास हुआ कि हौसले बुलंद हों तो कोई राह मुश्किल नहीं। बच्चों को कुछ चुनिंदा टॉपिक पढ़ाने थे। मुझे कोर्स पूरा होने के साथ बहुत दुःख हुआ कि ये सफर इतना छोटा था।

अगले सेशन के लिए चित्तौड़ के मैनेजमेंट कॉलेज से गेस्ट फैकल्टी के रूप में फिर से प्रस्ताव आया। मुझे तो घर बैठे ही मन की मुराद मिल गई। मैंने तुरंत हाँ कर दी और दूसरे दिन कॉलेज जॉइन कर लिया।

BBA, MBA और MIB को पढ़ाना, कोई खेल नहीं था। उन्हें पढ़ाने के लिए शुरू के कुछ समय तक मुझे भी प्रतिदिन 3-4 घंटे पढ़ाई करनी पड़ी। इसी बीच बेटे की डॉक्टरी पढ़ाई पूरी हो गई और उसने चित्तौड़ ही प्रैक्टिस करने का निर्णय लिया। उसकी शादी हुई और घर में एक नन्हें फरिश्ते के आने की दस्तक हुई। नई जिम्मेदारियों के साथ 10 वर्ष के इस अलबेले अनुभव के साथ कॉलेज को फिर अलविदा कहना पड़ा।

एक नया सफर शुरू हुआ, नन्हीं आरोही के साथ। उसकी किलकारियों से घर आँगन में रौनक छा गई। समय अपनी गति से बढ़ता गया और बेटी सीए हो गई। उसका विवाह कर, उसे अपने आंगन से विदा कर दिया। आरोही स्कूल जाने लगी। उसकी बाल सुलभ जिज्ञासा भरपूर मनोरंजन करती। इसी बीच मेरे आंगन में नन्हें कुशाग्र और दृष्टी की किलकारियाँ गूंजी। दादी-नानी बनकर फूली न समाई।

जीवन में नया दौर फिर से शुरू हुआ। खाली समय काटने लगा, समय की उपादेयता मन पर प्रश्नचिन्ह लगाने लगी। इसी कशमकश में एक दिन विमला दीदी ने कहा, 'तुम पोती-नाती को रोज कहानी सुनाती हो। तुम इन्हीं कहानियों को लिखती क्यों नहीं?'

मैंने आश्चर्य से पूछा, 'कैसे लिखूं और लिखकर क्या करूँगी?'

दीदी मुस्कराकर बोली, 'साहित्य का सृजन होगा, प्रकाशन होगा और मन ऊर्जान्वित होगा।'

दीदी ने मुझे वॉट्सएप ग्रुप पर चलने वाले बाल साहित्य कार्यशाला पटल से जोड़ा, जिसकी वे संयोजिका हैं। यहाँ से शुरू हुई मेरी साहित्यिक यात्रा। बच्चों का साहित्य सृजन, बच्चों का खेल नहीं है। यह मुझे तब पता चला, जब मैंने पहली कहानी कार्यशाला पटल पर पोस्ट की। अपनी रचना के लिए पटल पर प्रतिक्रिया मिली, 'इसमें कहानी कहां है, मैं ढूंढ रहा हूं।' ऐसी तीखी प्रतिक्रिया पाकर, मैं विचलित हो गयी।

मैंने दीदी को फोन लगाया और बोली, 'आपका बाल साहित्य कार्यशाला पटल छोड़ रही हूँ। मुझे नहीं लिखना। मेरी कहानी सुनकर पोती-नाती को बहुत आनंद आता है। मेरे लिए वहीं पर्याप्त है।' दीदी हंसकर बोली, 'डरकर भाग लेने वाले कायर होते हैं। तुम्हारे में सामर्थ्य हैं और तुम कर सकती हो।

दीदी की बातों से मन की डगमगाती कश्ती को इरादों का माँझी मिल गया और पूरे मनोबल के साथ लेखन का कार्य करने लगी। मैंने वॉयस टाइप करना और मेल करना सीखा। मैं अथक मेहनत करती रही। मेरी लगन रंग लाई। एक ही वर्ष में मेरी रचनाएँ देश की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी। यह प्रकाशन देख कर मन प्रफुल्लित हो गया। इस एक वर्ष की साहित्यिक यात्रा में मेरी लिखी बाल कविता और कहानियों के तीन संग्रह प्रकाशन में आए। पहला बाल काव्य संग्रह 'पंख मुझे मिल जाते'। दूसरा, 'जादुई बगीचा' बाल कहानी संग्रह, जिसे राजस्थान साहित्य अकादमी से प्रकाशन हेतु अनुदान भी मिला। तीसरा, बाल कहानी संग्रह 'मस्ती की पाठशाला'।

जब ये पुस्तकें प्रकाशित होकर आयी तो घर में नवजात शिशु के जन्म पर होने वाले उत्सव सी खुशियां छा गई। सभी अपने हाथ में लिए, उन्हें उलट पुलट कर देख, मुस्करा रहे थे। मेरी पुत्रवधू बोली, 'ये संग्रह आने वाली पीढ़ी के लिए आपकी तरफ से अनुपम उपहार है।'

'पंख मुझे मिल जाते' और 'जादुई बगीचा' पुस्तकों के प्रकाशन के लिए, मुझे श्रीनाथद्वारा साहित्य मंडल से भगवतीप्रसाद देवपुरा स्मृति 'बाल साहित्य भूषण' की मानद उपाधि से अलंकृत किया गया। चार पीढ़ियों के आनंद के साथ जिंदगी के इन पड़ावों से गुजरते हुए, जीवन की तीसरी पारी की इतनी सुंदर उपादेयता पा कर आज बहुत प्रफुल्लित हूँ। यहाँ पर एक महत्वपूर्ण बात और साझा करना चाहूंगी, इन सफलताओं तक पहुँचने के लिए, मेरे जीवन साथी ने अच्छे सलाहकार के रूप में हमेशा मेरे कमजोर होते आत्मविश्वास को हौसला दिया।

वैसे अकोला निवासी मनीषा भंसाली की पहचान एक राजनेत्री के रूप में है, लेकिन उनके कोमल मन की भावनाओं ने उन्हें समाजसेवा का वह पथ दिखाया, जिस पर राजनीति में भी सतत रूप से सेवायात्रा जारी रही। यदि उनकी सेवा ने कई समाजसेवी संस्थाओं को पोषित किया, तो राजनीति में महानगर पालिका में सभापति जैसे पद की जिम्मेदारी निभाने में भी वे पीछे नहीं रहीं।

समाजसेवी राजनेत्री
मनीषा भंसाली

महिलाओं के दर्द व उनकी समस्याओं का अहसास होने पर, यदि आप उन समस्याओं के समाधान का रास्ता तलाशते हों, तो उसके लिए किया गया कार्य भी सेवा बन जाता है और इस सेवाकार्य में यदि परिवार का साथ मिल जाय तो, यह सेवा कार्य सहज संभव होता है। इन्हीं पंक्तियों को अपनी कथनी और करनी दोनों से चरितार्थ कर रही हैं, अकोला निवासी मनीषा भंसाली। वे विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं से तो सम्बद्ध रही ही हैं, साथ ही राजनीति में भारतीय जनता पार्टी से सम्बद्ध हो राजनीति के माध्यम से भी मानवता की सेवा कर रही हैं। भाजपा की ओर से श्रीमती भंसाली महानगर पालिका में सभापति पद पर सेवा दे चुकी हैं। माहेश्वरी महिला मंडल अकोला एवं विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की कार्यकारिणी के माध्यम से विगत 15 सालों से चल रहा सेवाकार्य अविरत चल रहा है। इसमें पति रवींद्र भंसाली का सामाजिक कार्य करने में सतत रूप से सहयोग प्राप्त हो रहा है।

पूरे परिवार का मिला साथ

वाशिम जिले के मालेगांव का मायका और अकोला का ससुराल का परिवार दोनो तरफ़ समाजसेवा एवं उद्योग-व्यवसाय की पार्श्वभूमि रही। एक ओर, भाई गिरीश भगवानदास लाहोटी ने अपनी मेहनत से वाशिम में तिरुपति ग्रुप की शुरुआत करते हुए वाशिम शहर के विकास में भी अपना योगदान दिया है। वहीं दूसरी ओर पति रवींद्र भंसाली महानगर के सफल व्यावसायी हैं। पश्चिम विदर्भ में उनका पोकलेन, जेसीबी मशीन एवं स्पेअर पार्टस का व्यवसाय है। परिवार मे मिले शैक्षणिक, सामाजिक और सकारात्मक वातावरण की वजह से मनीषा को समाज सेवा की प्रेरणा मिली। विवाह उपरांत पति रवींद्र ने भी कभी रोक टोक नहीं की। इसीलिए माहेश्वरी महिला मंडल के माध्यम से सामाजिक सेवा सतत जारी रही। बिटिया श्रद्धा, नागपूर के प्रख्यात 'व्हीएनआयटी' कॉलेज से शिक्षा प्राप्त कर आर्किटेक्ट बनी हैं। श्रद्धा को गीत गायन पसंद है। कई प्रदेश एवं राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में प्रतिष्ठित पुरस्कार हासिल करने से उसकी समाज में 'मिनी लता' के नाम से श्रद्धा की पहचान बनी है। साथ ही पुत्र संकेत नागपूर के रामदेव बाबा इंजीनियरिंग महाविद्यालय से बी.ई. सिविल की पढ़ाई कर रहे हैं।

भाजपा के विश्वास पर उतरी खरी

वर्ष 2017 के महानगर पालिका के आम चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की ओर से चुनाव लड़ने का प्रस्ताव आया। राजनीति का कोई भी अनुभव ना रहते हुए भी पति रवींद्र के साथ की वजह से भाजपा का प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार कर लिया और विजयी हुई। जुलाई 2019 में पार्टी ने विश्वास जताते हुए महानगर पालिका में महिला एवं बाल कल्याण समिति सभापति की कमान सौंपी। काम करने का अवसर मिलने से नई ऊर्जा के साथ कार्य किया। श्रीमती भंसाली का कहना है कि सामाजिक कार्य करने के लिए मुझे प्रेरित करने वाले मेरे परिवार के मुखिया मुरलीधर भंसाली, सुभाष भंसाली, प्रकाश भंसाली समेत पूरे परिवार का हमेशा साथ मिलने से उनके कदम सतत आगे बढ़ते चले गये। इस पद पर रहते हुए श्रीमती भंसाली ने प्रभाग में रास्ते, एलईडी स्ट्रीट लाईट, नालियाँ, पेव्हर ब्लॉक के काम पूरे कर सामान्य इंसान का जीवन आसान करने का प्रयास किया है। दो उद्यान के निर्माण के साथ वॉकिंग ट्रेक समेत ओपन जिम उपकरण भी लगाये। प्रभाग में लगभग 25 जगह पर दिशा दर्शक फलक भी उन्होंने लगवाए।

समाजसेवा में भी सतत सक्रिय

माहेश्वरी महिला मंडल के माध्यम से विविध जगह के अनाथ आश्रम, वृद्धाश्रम एवं बालिका आश्रम में मदद की जाती है। महिला एवं बाल कल्याण समिति द्वारा महानगर की जरुरतमंद युवतियों एवं महिलाओं को विविध योजनाओं का लाभ मिले, इसीलिए भी वे सतत प्रयत्नशील हैं। ज़रूरतमंद महिलाओं को सिलाई मशीन के वितरण के उपरांत अब फ़ोर व्हिलर गाड़ी प्रशिक्षण, ब्युटी पार्लर प्रशिक्षण का लक्ष्य भी बनाया है। महानगर पालिका स्कूल के बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिये क्रीड़ा सामग्री, क्लास रूम में पंखे, लाइट, स्वच्छता गृह आदि उपलब्ध करवाने हेतु सफल प्रयत्न किए। दूर दराज के बच्चे स्कूल आ सकें इसलिए सायकल वितरण, दिव्यांग छात्रों के लिए ज़रूरत का सामान, शुद्ध पानी के लिए आरओ मशीन स्थापना, छात्राओं को हायजिन किट वितरण के साथ विविध योजनाओं का लाभ मिले इस हेतु भी श्रीमती मनीषा भंसाली

हमेशा प्रयासरत रहती हैं। साथ ही प्रभाग में विविध योजनओं के माध्यम से सभी प्राथमिक सेवा और सुविधाओं को पूर्ण कर सामान्य जनता का जीवन आसान करने का प्रयास किया है।

वर्तमान दौर में जहाँ अर्थोपार्जन की ओर भागते लोग संस्कार व धार्मिक गतिविधियों से दूर भागने की कोशिश करते हैं। ऐसे भौतिकवादी दौर में भी आने वाली नयी युवा पीढ़ी को अपनी सनातन संस्कृति से जोड़े रखने का कार्य कर रही हैं, लुधियाना की जयश्री पेड़ीवाल अपनी साथी भटिंडा की रिंपी कोठारी के साथ मिलकर। आईये जानें इस धर्म सेवा में वे कर क्या रही हैं?

जयश्री पेड़ीवाल

श्रीमद् भागवत रसिक कुटुम्ब के माध्यम से सनातन संस्कृति से परिचय कराती

जयश्री पेड़ीवाल रिंपी कोठारी

रिंपी कोठारी

लगभग 8-9 वीं शताब्दी के दौरान जब वेद शास्त्र अपनी कठिन भाषा के कारण आम व्यक्ति की समझ से दूर हो गये थे और जैन तथा बौद्ध धर्म अपने सिद्धांतों के साथ सनातन धर्म को अपने अंदर आत्मसात करने के लिये उतारू थे। ऐसे समय में पुराण हिन्दु धर्म में अंधकार में प्रकाश की ज्योति बनकर सामने आये। इसके अंतर्गत वर्तमान में कुल 18 पुराण प्रतिष्ठित हैं, जो सनातन धर्म की पताका को फैला रहे हैं। ये पुराण अपनी सरल भाषा के कारण आम व्यक्ति के लिये वेदों की सरल व्याख्या के साथ धर्म का आधार बने हुए हैं। लेकिन विडंबना है कि आधुनिक दौर में युवा पीढ़ी इनसे भी दूर होती जा रही है।

श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब की स्थापना

भागवत महापुराण हिंदुओं के 18 पुराणों में से एक मुख्य पुराण है। इसके प्रचार-प्रसार एवं भगवद् भक्ति जागृत करने हेतु संस्था श्रीमद्भागवत रसिक कुटुंब को जून 2021 में लुधियाना की जयश्री पेड़ीवाल एवं भटिंडा की रिंपी कोठारी द्वारा स्थापित किया गया। इसमें भागवत महापुराण के कुछ प्रमुख स्तोत्र जिनमें गजेंद्र मोक्ष, नारायण कवच, गोपी गीत, रुद्र गीत तथा भीष्म स्तुति की नियमित रूप से ऑनलाइन संथा वर्ग ली जाती है। यह सेवा पूर्णतः निःशुल्क एवं निःस्वार्थ भाव से की जा रही है। अब तक लगभग 15000 साधक इन कक्षाओं के माध्यम से स्तोत्रों का सही उच्चारण सीख कर आनंद उठा चुके हैं। लगभग 200 कार्यकर्ता इस कार्य में निरंतर जुटे रहते हैं।

अन्य धर्म शास्त्रों की भी शिक्षा

पांच स्तोत्रों के साथ समय-समय पर अन्य महत्वपूर्ण स्तोत्रों का उच्चारण भी सिखाया गया है। इनमें कार्तिक मास में दामोदर अष्टकम्, गोविंद दामोदर स्तोत्र, तुलसी स्तुति, दीपावली पर कनकधारा स्तोत्र, नव वर्ष के अवसर पर राधा कृपा तथा कृष्ण कृपा कटाक्ष स्तोत्र, मकर संक्रांति पर आदित्य हृदय स्तोत्र, बसंत पंचमी पर सरस्वती सहस्त्रनाम, गणेश चतुर्थी पर अथर्व शीर्ष तथा गणपति सहस्त्रनामावली एवं अन्य इस प्रकार के कई कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित किए जाते हैं। गणतंत्र दिवस पर "मैं भारत हूं फाउंडेशन" के साथ बच्चों का बहुत ही सुंदर प्रेरणास्पद कार्य जूम के माध्यम से आयोजित किया गया। हरियाणा पंजाब प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन के साथ मिलकर बच्चों के लिए तीन दिवसीय सारंग वात्सल्य शिविर भी आयोजित किया गया। इस शिविर में वैदिक मैथ्स, बच्चों के लिए उपयोगी योगासन, पेपर क्विलिंग तथा अभिनय कला को उभारने के लिए विशेष सत्रों का आयोजन भी किया गया। विजयी बच्चों को श्रीमद् भगवद् गीता भेंट स्वरूप दी गई।

कानून तो कई बनते हैं, लेकिन उनका जरूरतमंदों को सही लाभ तभी मिल पाता है, जब उन तक जानकारी पहुंचती है। यही स्थिति सामाजिक न्याय तथा मानवाधिकारों के मामले में भी है। यवतमाल (महाराष्ट्र) निवासी समाजसेवी नीलिमा मंत्री इन्हीं आवश्यकताओं को समझती हुई मानवाधिकारों के प्रचार-प्रसार में अपना बहुमूल्य योगदान दे रही हैं।

मानवता का पाठ पढ़ाती नीलिमा संजय मंत्री

समाजसेवा के क्षेत्र में यवतमाल (महा.) निवासी नीलिमा मंत्री एक ऐसा प्रतिष्ठित नाम है, जो मानवता की सेवा में प्रतिष्ठित कई समाजसेवी संस्थाओं के माध्यम से मानवाधिकार, सामाजिक न्याय तथा नारी के सशक्तिकरण में अपना योगदान दे रही हैं। पति के रूप में संजय मंत्री का जो साथ मिला तो उनकी यह समाजसेवी की यात्रा पंख लगाकर तेजी से चल पड़ी। वर्तमान में पुत्र अनुराग तथा साकेत भी उनका संबल बने हुए हैं। सासू माँ प्रिया मंत्री भी श्रीमती मंत्री की प्रेरणा बनी हुई हैं।

लायंस क्लब से लम्बा जुड़ाव

वर्ष 1993 में संत गाडगे बाबा युनिवर्सिटी से बी.कॉम. कर श्रीमती मंत्री ने कोई भी नौकरी न करते हुए स्व-व्यवसाय तथा समाजसेवा को ही अपना जीवन समर्पित कर दिया। लायंस क्लब से श्रीमती मंत्री लंबे समय से सम्बद्ध रहते हुए योगदान दे रही हैं। इसके अंतर्गत वर्ष 2018-19 में लायनेस क्लब डिस्ट्रिक्ट 3234-एच-1 की डिस्ट्रिक्ट प्रेसिडेंट, तथा वर्ष 2021-2022 में लायंस क्लब यवतमाल में गोल्डन जुबली वर्ष में अध्यक्ष रही हैं। वर्तमान सत्र 2022-23 में ऑल इंडिया लायनेस क्लब में वुमन इम्पॉवरमेंट की प्रोजेक्ट डायरेक्टर के रूप में अपना योगदान दे रही हैं।

सेवा के वृहद आयाम

वर्ष 1999 से दीनदयाल बहुउद्देश्यीय प्रसारक मंडल की डायरेक्टर के रूप में पारधी जाति तथा कृषकों के हित में कार्य कर रही हैं। इसके साथ ही स्वयंसिद्धा शेतकरी महिला विकास प्रकल्प से अध्यक्ष, वर्ष 2003-2016 तक सखी मंच जिला यवतमाल से डायरेक्टर, यवतमाल जिला माहेश्वरी कोऑपरेटिव बैंक से 2 सत्र में डायरेक्टर तथा संस्कार कलश एकता ग्रुप यवतमाल से टीम लीडर के रूप में सम्बद्ध रही हैं। समाज संगठन अंतर्गत वर्ष 2010 - 2013 में माहेश्वरी महिला मंडल की जिला सचिव, विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी महिला मंडल की प्रचार मंत्री, अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन के सत्र 2016-19 में नारी सशक्तिकरण समिति सुश्रिता की संयोजिका तथा अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन के 2 सिलाई केंद्र की हेड के रूप में सेवा दे रही हैं।

सेवा ने दिलाया सम्मान

श्रीमती मंत्री को वर्ष 2021-22 के सेवा सप्ताह के अंतर्गत जिला लायंस क्लब द्वारा तीन प्लेटीनम अवार्ड से सम्मानित किया गया। नेत्र ऑपरेशन के लिये वर्ष 2020-21 में लायंस क्लब द्वारा "महाराष्ट्र शासन अवार्ड", वर्ष 2002-03 में बेस्ट लायनेस प्रेसिडेंट तथा वर्ष 2002-03 में ही "चाईल्ड केयर" के लिये इंटरनेशनल अवार्ड से सम्मानित किया गया। वर्ष 2012-13 में यवतमाल माहेश्वरी संगठन द्वारा "माहेश्वरी पर्सन ऑफ द ईयर" के सम्मान से नवाजा गया। वर्ष 2016 में अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा इंदौर में आयोजित देश भक्ति गीत प्रतियोगिता (समूह) में 4थी रैंक तथा इसी वर्ष उज्जैन में आयोजित गीत प्रतियोगिता में तीसरी रैंक प्राप्त हुई। वर्ष 2016-17 में लायनेस डिस्ट्रिक्ट 323-एच-1 द्वारा नारी सशक्तिकरण के लिये "आऊट स्टैण्डिंग अवार्ड" से सम्मानित किया गया। वर्ष 2019 में लॉयन क्लब वर्धा की ओर से 8 मार्च को स्वयंसिध्दा पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अबेकस, इंग्लिश तथा साइबर सिक्योरिटी सीखने तथा सिखाने दोनों के क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व में पुष्कर की बेटी डॉ. रश्मि मंत्री एक ऐसा प्रतिष्ठित नाम बन गई हैं, जो कई महिलाओं को रोजगार भी दे रही हैं। उन्होंने एक छोटे से पौधे के रूप में प्रारम्भ कर अपने व्यवसाय को किस तरह शिखर की ऊँचाई दी आईये जानें।

BYITC SUPERMATHS BRITAIN'S की डायरेक्टर

डॉ. रश्मि मंत्री

डॉ. रश्मि मंत्री पुष्कर जैसे छोटे से कस्बे में पली बढ़ी और आज शिक्षा के क्षेत्र में अबेकस, इंग्लिश एवं साइबर सिक्योरिटी सिखाने का ऑनलाइन ऐप बना कर पूरी दुनिया में बच्चों को घर बैठे कोचिंग और महिलाओं को रोज़गार प्रदान कर रही हैं। इससे भारत की महिलाये घर बैठे भारत एवं विदेशो के बच्चों को ऑनलाइन पढ़ा रही हैं। आगे उनका भारत में 1000 नए ऑनलाइन और ऑफलाइन सेंटर खोलने का प्लान है। डॉ. रश्मि मंत्री सिर्फ एक Mompreneur या शिक्षिका ही नहीं हैं; बल्कि वह लाखो महिलाओं के लिए एक प्रेरणा हैं। एक माँ के रूप में एक नया दृष्टिकोण खोजने से लेकर युवा शिक्षा के सपने को आकार देने तक डॉ. मंत्री युवाओं के भविष्य से जुड़े मुद्दों पर काम करती रही हैं।

ऐसे हुई BYITC की शुरूआत

शिक्षा के क्षेत्र में जूनून के साथ डॉ. रश्मि ने अपने बेटे ध्रुव को अबेकस मैथ्स सिखाकर एक मैथेमैटिशन में बदल दिया। ITV, UK द्वारा ध्रुव को LITTLE BIG SHOTS शो में HUMAN CALCULATOR का खिताब दिया गया। इस ख़िताब के बाद पूरे स्कॉटलैंड से पेरेंट्स डॉ. रश्मि के पास अपने बच्चों को पढ़ाने के अनुरोध के साथ संपर्क करने लगे। इसके बाद डॉ. रश्मि ने BYITC_SUPERMATHS बनाने का फैसला किया। डॉ. रश्मि और ध्रुव को शीर्ष स्तर की शिक्षा के लिए एक 11 स्तरीय पाठ्यक्रम विकसित करने में 2 साल लग गए, लेकिन वह सफल रहे और इससे उन्हें एक छोटा शिक्षण संस्थान होने और एक वैश्विक ब्रांड बनने के बीच की खाई को पाटने में मदद मिली।

ऐसे छुआ सफलता का आकाश

UNIVERSITY OF WEST OF SCOTLAND से कंप्यूटर साइंस में मास्टर डिग्री और PhD के साथ डॉ. रश्मि ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति लाने का फैसला किया। लगातार विचार-मंथन, दृढ़ता और जुनून के साथ शिक्षा के क्षेत्र में काम करते हुए उन्होंने कई पुरस्कार और अवाड्र्स प्राप्त किये। University of West of Scotland में उच्चतम अंकों के साथ MSc उत्तीर्ण करने के लिए गोल्ड मेडल तथा डॉक्टरेट की पढ़ाई के लिए University of West of Scotland से असाधारण छात्रवृत्ति (डबल फेलाशिप) प्राप्त की। उन्हें First Port UK से स्टार्ट-अप फंडिंग के रूप में £2500 तथा फाउंडेशन स्कॉटलैंड से बच्चों की परियोजना के लिए अनुदान £2500 प्राप्त हुआ। LOANI UK द्वारा स्पेशल रिकग्निशन अवार्ड - LOANI (Ladies of All Nations International) भी प्राप्त हुआ।

सेवा ने दिलाया सम्मान

डॉ. रश्मि स्कॉटिश इंडियन कल्चरल एंड फेस्टिवल कमेटी (एसआईसीएफसी) द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता में सम्मानित न्यायाधीश भी रहीं। पुष्कर इंटरनेशनल म्यूजिक स्कूल में मुख्य अतिथि, सोफिया कॉलेज अजमेर राजस्थान में एक सेमिनार के लिए भी उन्हें आमंत्रित किया गया था। बीबीसी रेडियो शो, न्यूज़18, STV शो, द स्कॉटिश मेल, द संडे हेराल्ड, आईटीवी शो, बिजनेस वर्ल्ड एजुकेशन और सहित कई प्लेटफार्मों पर मीडिया में उपस्थिति दर्ज कराई है। उनके लेख टाइम्स ऑफ इंडिया, द पायनियर, SPOTIFI, योर स्टोरी मीडिया, दी स्टेट्समैन, दी ट्रिब्यून इत्यादि बड़े मीडिया हाउस में भी प्रकाशित होते रहे हैं। सीएसआर के अंतर्गत बच्चो की शिक्षा के उत्थान के लिए डॉ. मंत्री एक किड्स क्लब BYITC Inventors भी चलाती हैं, जो बच्चों को कला और शिक्षा से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति करने में मदद करती है। वह स्थानीय कार्यक्रमों के प्रायोजन में भी सक्रिय रूप से भाग लेती हैं और नियमित रूप से सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेकर सक्रिय रूप से योगदान देती हैं। सम्पर्कः www.byitc.org

आमतौर पर नारी की जगह सुरक्षित स्थान घर की चार दीवारी मानी जाती है लेकिन इसी अवधारणा को तोड़ते हुए सम्पूर्ण विश्व की सबसे ऊँची सातों पर्वत श्रृंखलाओं पर सफलता का ध्वज फहराने के लक्ष्य को लेकर सतत् पर्वतारोहन कर रही हैं, मानामा (बेहरीन) निवासी मधु सारड़ा। इतना ही नहीं वे अपनी पेंटिंग द्वारा कला के क्षेत्र में भी अपने सफलता के ध्वज को फहरा रही हैं।

पर्वतारोहन से विश्व विजय की यात्री

मधु सारडा

देश की सीमाओं से बाहर माहेश्वरी संस्कृति की गौरव पताका फहराने वालों में शामिल हैं, नेपाल में जन्मी तथा मानामा (बेहरीन) को अपनी कर्मभूमि बनाकर योगदान दे रहीं, मधु सारडा। मधु वहाँ अपने भारतीय पति संदीप सारडा के साथ दो बेटियों से भरे पूरे परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाती हुई भी अपनी सफलता के कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं। उनकी वहाँ पहचान भारत की ख्यात चित्रकला म्यूरल, मंडला तथा मधुबनी की विशेषज्ञ चित्रकार के रूप में है, तो वहीं एक ऐसी पर्वतारोही के रूप में भी हैं जो अपने पर्वतारोहण से पूरी दुनिया को जीत लेना चाहती हैं। योगा के प्रति उनके रूझान ने उनकी पहचान योग गुरु के रूप में भी बना दी है।

साहसिक यात्रा ही उनका शौक

आमतौर पर अकेली महिला अपने घर परिवार में आरामदायक व सुरक्षित जीवन व्यतीत करना पसंद करती हैं। लेकिन श्रीमती सारडा वह नारी हैं, जो चुनौती स्वीकार करने को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना चुकी हैं। इसके अंतर्गत पहाड़ियों व जंगलों की साहसिक यात्रा करना तथा वहाँ निवास करना उनका शौक है। इसमें उन्हें रोकने के लिये कई आवाजें उठीं लेकिन वे नहीं रूकीं। अपने इस शौक के अंतर्गत वे अभी तक 20 देशों की यात्रा कर वहाँ की संस्कृति व सभ्यता को देख चुकी हैं और उनका लक्ष्य पूरी दुनिया में भ्रमण करना है, चाहे इसमें कितनी ही चुनौतियाँ क्यों न आऐं।

पर्वतारोहण में विश्व विजय का लक्ष्य

विश्व भ्रमण की इस यात्रा में श्रीमती सारडा पूरी दुनिया के सातों महाद्वीपों की 7 सबसे ऊँची पर्वत चोटियों पर अपनी सफलता का ध्वज फहराना चाहती हैं। अपने इस लक्ष्य के अंतर्गत वे समुद्र तल से 6 हजार मीटर ऊँचाई पर स्थित हिमालयन श्रंखला की ''मैरा पिक'' तक चढ़ाई पूर्ण कर चुकी हैं। इसमें उनके कई पुरूष साथी भी मार्ग में ही हार मानकर रूक गये थे, लेकिन श्रीमती सारडा नहीं थमीं, नहीं रूकी। उनके समूह में वे एकमात्र ऐसी महिला थीं, जिन्होंने इस चोटी पर चढ़ाई पूर्ण की थी। उनकी इन साहसिक यात्रा में उनकी फिटनेस का भी योगदान है, जो वे योगा द्वारा सतत् रूप से बनाए रख रही है।

एक चित्रकार के रूप में विशिष्ट पहचान

आमतौर पर साहसिक या शारीरिक क्षमता वाला कार्य करने वालों का कला आदि से कोई सरोबार नहीं होता। लेकिन आपको जानकर आश्चर्य होगा कि श्रीमती सारडा बेहरीन की एक ऐसी ख्यात म्यूरल चित्रकार भी हैं, जिनकी चित्रकारी का मुरीद यूएई का शासन भी है। विराट नगर (नेपाल) में जन्मी श्रीमती सारडा को म्यूरल चित्रकला विरासत में मिली और जब कर्म क्षेत्र मानामा (बेहरीन) बना तो उन्होंने इसकी गौरव पताका बेहरीन में भी फहरा दी। इसके साथ पारम्परिक लोक कला मधुबनी व मिथिला आदि में भी उन्हें महारथ हासिल है।

कई प्रतिष्ठित स्थानों पर प्रदर्शन

श्रीमती सारडा के फोटोग्राफ व पेंटिंग बेहरीन की ''आर्ट गैरेली'' में प्रदर्शित होते रहे हैं। प्रसिद्ध अराड फोर्ट के समीप ''मुहर्राक द्वार'' पर आयोजित प्रदर्शनी में भी श्रीमती सारडा के फोटोग्राफ का प्रदर्शन हुआ। वहां के स्वास्थ्य मंत्री व गवर्नर ने भी उनकी म्यूरल आर्ट से प्रभावित हो उन्हें प्रशंसा पत्र भेंट कर सम्मानित किया। उनके इन योगदानों ने उनकी बेहरीन की एक सेलीब्रिटी की तरह उनकी पहचान बना दी है। इसी का नतीजा है कि व्यवसायिक रूप से तो उन्हें इसका लाभ मिल रहा है, साथ ही वे जरूरतमंदों के लिये चेरिटी के तौर पर भी अपनी प्रदर्शनियों का आयोजन कर चुकी हैं।

''समाजसेवा'' वास्तव में अर्न्तगमन से उत्पन्न हुई परम मानवीय भावना है, जिसका स्वार्थ से कोई सरोकार नहीं होता। अमरावती निवासी स्नेहा मूंधड़ा ऐसी ही सेवा भावना से ओतप्रोत हैं, जिसके चलते वे महिला होकर भी श्मशान तक को संवारने में भी पीछे नहीं हैं।

श्मशान को भी संवारती समाजसेवी

स्नेहा मूंधड़ा

अमरावती में श्री लक्ष्मीनारायण व सरस्वतीदेवी चांडक के यहाँ 1962 में जन्मी व यहीं पर निवास कर रही समाज सेवी राजू मूंधड़ा की धर्मपत्नी स्नेहा मूंधड़ा वास्तव में तो बी.एच.एम.एस. उपाधिधारी एक प्रतिष्ठित होम्योपैथिक चिकित्सक रही हैं। लेकिन इसके बावजूद श्रीमती मूंधड़ा की पहचान एक ऐसी समाजसेवी के रूप में अधिक है, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन ही मानवता को समर्पित कर दिया है। चिकित्सा के क्षेत्र में भी प्रभात कालोनी के गजानन महाराज मंदिर में करीब 8 वर्ष उन्होंने निःशुल्क होमिओपॅथी चेरिटेबल दवाखाना चलाया, जहां वे दवाईयाँ भी स्वयं के खर्च से देती थीं। वहां पर इस तरह उन्होंने बहुत से रोगियों का निःशुल्क इलाज किया। वर्तमान में उनके परिवार में 2 बेटियां हैं और दोनों का विवाह हो चुका है।

श्मशान को भी बनाया स्वच्छ स्थान

इसे आश्चर्यचकित करने वाला कार्य ही कहा जाना चाहिये कि वे श्मशान में भी सेवा दे रही हैं। आप गत सात वर्षों से अमरावती के हिंदू श्मशान में अपनी संस्था के माध्यम से प्रत्येक रविवार को जाकर वहां साफ-सफाई करती हैं। इसमें करीब-करीब दो से तीन घंटे वहां अपनी सेवाएं देती हैं। यह कार्य निश्चित ही महिलाओं हेतु अलग सा है। चुंकि महिलाओं में श्मसान नाम से ही डर बना रहता है, वहां जाना तो दूर की बात है। किंतु वे यह कार्य गत 7 वर्षों से निरंतर करती आ रही हैं। अब इस कार्य में संस्था द्वारा वेतन पर रखे कर्मचारी भी सहयोग दे रहे हैं।

पति बने सेवा पथ की प्रेरणा

वैसे तो मानवता की सेवा की कोमल भावना श्रीमती मूंधड़ा को प्रकृति प्रदत्त रूप से मिली लेकिन विवाह के बाद पति ने उनकी इस भावना को पंख लगाने में सहयोग दिया। उनके पति के रोटरी कार्यकाल में वर्धा से मेमोग्राफी बस आयी थी। उसका एक माह का संचालन उन्होंने ही किया था। यह बस अमरावती के साथ पूरे अमरावती जिले में भी गयी थी। इसको इतनी लोकप्रियता मिली कि उस एक माह की वजह से रोटरी क्लब ऑफ अमरावती मिडटाऊन द्वारा अमरावती में ही सवा करोड़ की लागत से यह बस बनाई गयी। गत 3 वर्षों से रोटरी डिस्ट्रीक्ट जो नासिक से नागपुर तक रहता है, उसकी कार्यकारिणी में वे हिस्सा हैं। साथ ही रोटरी का डायलिसिस प्रोजेक्ट जिसमें केवल 400 रुपये में डायलेसिस होता, उसमें भी उनका सक्रिय योगदान है।

सेवा के चहुँमुखी आयाम

इसी प्रकार उनके ससुर स्व. श्री कमलकिशोर मुंधड़ा की स्मृति में रितपुर आयोजित 2019 के भव्य मेडिकल कैम्प में उनका सक्रिय सहभाग रहा है। इस कैम्प में अमरावती के नामी या यूं कहे एमडी लेवल के 45 डॉक्टरों ने अपना सहयोग दिया था। यह आज तक का अमरावती जिले का सबसे बड़ा मेडिकल शिविर था। उसी प्रकार उसी समय वहां पर इनके मार्गदर्शन में आदिवासी आश्रम शाला को वॉटर कुलर, नए कपड़े, ब्लैंकेट, स्टील थालियां सहित करीबन 3 से 4 लाख की सामग्री वितरित की गयी। स्वस्तिक माहेश्वरी मंडल अमरावती में एक क्षेत्रीय मंडल है। इसमें हाल ही में उन्होने अध्यक्ष का कार्यभार संभाला। आमतौर पर इस तरह के मंडल में संस्कृति से जुड़े हुए कार्य होते हैं। किंतु उन्होंने अपने अध्यक्ष काल में हटकर प्रकल्प लिए। जिसमें महिलाओं हेतु मेमोग्राफी कैम्प, सदस्य एवं परिवार हेतु मेडिकल चेकअप कैम्प, सदस्यों में सकारात्मक सोच आए इस हेतु नागपुर, जलगांव आदि से विभिन्न वक्ता बुलाकर एक दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया।

कोई भी हर्ष का अवसर हो या अन्य कोई आयोजन यदि उसमें बधाई संदेश देने के लिये आपके पास शब्द हैं, तो आपके व्यक्तित्व को चार चांद लग जाते हैं। अन्यथा वह प्रभाव इतना प्रभावी नहीं रहता। धामणगाँव जिला-अमरावती निवासी जया लाहोटी लोगों के लिये ऐसे ही पलों की भावनाओं को शब्दों में पिरोती हैं। आईये जानें कैसे?

जीवन के यादगार पलों को शब्दों से सजाती

जया लाहोटी

वर्तमान में जिस तरह किसी भी आयोजन के लिये इवेन्ट मैनेजमेंट एक नवीन व्यवसाय बन गया है। वैसे ही धामणगाँव निवासी अनिल कुमार लाहोटी की धर्मपत्नी जया लाहोटी ने विभिन्न आयोजनों के यादगार पलों को शब्दों से सजाने की एक विशिष्ट रचनात्मकता विकसित की है। इसके अंतर्गत वे जीवन के यादगार पलों के लिये एसएमएस संदेश तैयार करती हैं और वो भी ऐसे कि सुनने-पढ़ने वाले बोल पढ़ते हैं, क्या बात है? इसके साथ वे परिवार की जिम्मेदारी भी सफलता पूर्वक निभा रही हैं। परिवार में दो बेटियाँ है, जो दोनों ही एम.बी.बी.एस कर रही हैं। बड़ी बेटी रश्मि को गोल्ड मेडल मिला है।

हर अवसर के लिये ''शब्द'' तैयार

श्रीमती लाहोटी लगभग अवसर के लिये एसएमएस तैयार करती हैं। इनमें सफलता, बर्थडे, वैवाहिक वर्षगाँठ, गृह प्रवेश, अतिथि आगमन, बच्चे के जन्म, बेबी कन्यादान, त्योहार विशेष, बहू आगमन जैसे कई शुभ अवसरों पर बधाई संदेश तैयार किये जाते हैं। इतना ही नहीं देहावसान के पश्चात शोक हो या स्वर्ण सीढ़ी आरोहण अथवा पुण्यतिथि इन अवसरों के लिये भी वे हृदय को छू लेने वाले संदेश तैयार करती हैं। अब वे सभी प्रकार के आयोजनों के लिये एंकरिंग स्क्रिप्ट भी तैयार करके ऑन डिमांड देती हैं। जरूरत पड़ने पर वे बड़ी कुशलता से एंकरिंग भी करती हैं।

कई जरूरतमंदों की मदद

एक मध्यमवर्गीय परिवार से सम्बद्ध श्रीमती लाहोटी अपनी इस एकदम नवीन कला और रचनात्मकता के माध्यम से कई अन्य जरूरतमंद महिलाओं की आजीविका में मदद भी कर रही हैं। यह एक नया पेशा है जिसे तहसील स्थान पर एक मध्यमवर्गीय परिवार में रहने वाली गृहिणी द्वारा विकसित किया गया है और पूरे क्षेत्र में इसकी सराहना की जाती है। उन्होंने इससे नए अवसर विकसित किए और उसकी कमाई का उपयोग गरीब और जरूरतमंद परिवारों के लिए किया जाता है, जहां ज्यादातर महिलाएं परिवार के लिए एकमात्र कमाने वाली हैं। इस प्रयास द्वारा श्रीमती लाहोटी नारी सशक्तिकरण के क्षेत्र में भी योगदान दे रही हैं। श्रीमती लाहोटी से मो. 8421370084 इस नम्बर पर सम्पर्क कर के आप एसएमएस का लाभ उठा सकते है।

योग-मुद्रा

पंकज मुद्रा से बढ़ती है प्रसन्नता

शिव नारायण मूंधड़ा
'वास्तु मित्र'

संस्कृत के पंकज शब्द का अर्थ है कमल। इस शब्द की व्युत्पत्ति का अर्थ होता है कि 'पंके जायते इति पंकज' - जो कीचड़ में पैदा होता है वह पंकज है, कमल है।

भारतीय संस्कृति में कमल को अलिप्त माना गया है। हम देखते हैं कमल कीचड़ में पैदा होता है, परंतु फिर भी कीचड़ के दलदल में नहीं फंसता। पंकज मुद्रा का मुख्य उद्देश्य राग से विराग, मोह से मोक्ष की ओर प्रयाण करना है।

पंकज मुद्रा बनाने के लिए अपने दोनों हाथों के अंगूठे को परस्पर मिलाएं, दोनों कनिष्ठका, दोनों छोटी अंगुलियों को परस्पर मिलाएं शेष अंगुलियों को कमल की पंखुड़ियों की तरह है किंचित झुका कर खड़ी करना ही पंकज मुद्रा है।

इस मुद्रा को कम से कम 5 मिनट जरूर करना चाहिए। गर्मियों में यह मुद्रा बहुत ही लाभदायक है। पंकज मुद्रा के अनेक लाभ है, जैसे इससे शारीरिक सौंदर्य में वृद्धि होती है, चेहरे का ओज-तेज बढ़ता है, स्नायु तंत्र शक्तिशाली बनते हैं, रक्त संबंधी विकार दूर होते हैं, बुखार के वक्त इस मुद्रा का असर होता है, अल्सर जैसे रोग मिटते हैं, सर्दी जुकाम जैसे रोगों में भी लाभदायक है, जैसे सूर्योदय होने पर पंकज खिलता है वैसे ही अग्नि तत्व का सजातीय अग्नि तत्व से मिश्रण होने पर हृदय का सूर्य कमल विकसित होता है। जैसे रात्रि में चंद्रमा निकलता है, वैसे ही जल तत्व का जल तत्व से मिलन होने पर शुद्ध आत्मा रूपी चंद्र कमल विकसित होता है

इस मुद्रा में अनामिका, मध्यमा और तर्जनी यह तीनों उंगलियां अपने-अपने तत्व के साथ एक दूसरे के सामने रहती है, जिससे उनके गुणों का परस्पर आदान-प्रदान होता है।

इस मुद्रा के अतिशय से दूसरों को प्राण शक्ति प्रदान करने की क्षमता भी विकसित होती है।

आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाए तो पंकज मुद्रा में स्थिर होकर कमलाकृति का ध्यान किया जाए तो अनासक्ति का विकास होता है, विचार पवित्र बनते हैं क्योंकि पंकज को पवित्र माना गया है। इस मुद्रा से विचार, स्वभाव सौम्य बनता है। पंकज मुद्रा से टॉन्सिल, गर्दन, हॉर्ट, लसिका ग्रंथि आदि से उत्पन्न होने वाले रोगों में भी आराम मिलता है।

भाषा तो ज्ञान प्राप्ति की वह खिड़की है, जिसके द्वारा ज्ञान का प्रकाश हम तक पहुँचता है। इन्हीं पंक्तियों को अपने जीवन का आदर्श बना अंग्रेजी भाषा में विद्यार्थियों को पारंगत करने का कार्य कर रही हैं, अंजनगाव के श्रीमती राधाबाई आर्ट्स, कॉमर्स एण्ड साईंस कॉलेज की प्राध्यापिका डॉ. बीना राठी।

अंग्रेजी ''भाषा गुरू''

डॉ. बीना विनोद राठी

अंजनगाव सुर्जी ही नही बल्कि क्षेत्र के उच्च शिक्षा क्षेत्र के लिये डॉ. बीना राठी एक ऐसी प्रेरणा हैं, जो सतत रूप से अंग्रेजी भाषा के महारथियों को तैयार कर रही है। लगभग 32 वर्षों से शिक्षा क्षेत्र से सम्बध्द होकर सहायक प्राध्यापक, फिर प्राध्यापक के रूप मे सेवा दे रही हैं। अभी तक इस शैक्षणिक यात्रा में वे हजारों विद्यार्थियों को यू.जी.सी. तथा पी.जी. तक शिक्षित कर चुकी हैं, तो वही 02 शोधार्थी उनके मार्गदर्शन में एम.फिल. तथा 12 से अधिक पी.एच.डी. की उपाधि प्रदान कर चुके हैं और 06 विद्यार्थी शोध कार्य कर रहे है। उनके शिक्षा दान की यह यात्रा अभी भी थमी नही अपितु सतत रूप जारी है। वे कल्चरल एम्बेसेडर के रूप में साऊथ अफ्रीका, कैन्या, मोजम्बिक, स्वाजिलैंड आदि देशों व इनकी 09 युनिवर्सिटियों का भ्रमण कर चुकी हैं व वहॉ पर भाषण दे चुकी हैं।

शिक्षा यात्रा में पति बने साथी

डॉ. बीना राठी का जन्म 27 मई 1964 मे अमरावती में एक सुसंस्कृत परिवार में, श्री राजकुमार झंवर के घर मे हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा एच.एस.एस.सी. तथा बी.एस.सी. माइक्रोबायोलोजी (गोल्ड मेडलिस्ट) तक ग्रहण की तथा विवाह पश्चात् अमरावती आ गई। यहॉ पति प्रो. विनोद राठी का ऐसा प्रोत्साहन व साथ मिला कि उनकी उच्च शिक्षा प्राप्ति की यात्रा सतत रूप से चल पडी। बी.ए. व एम.ए. अंग्रेजी तक शिक्षा प्राप्त कर वर्ष 1991-1992 में प्रथम श्रेणी में एम.फिल अंग्रेजी की उपाधि प्राप्त की। वर्ष 2002 मे यू.जी.सी. की टीचर्स फेलोशिप एफ.डी.पी. स्किम के अंतर्गत अवार्डी के रूप में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

शिक्षा दान की वृहद यात्रा

लगभग 32 वर्ष पूर्व ही अंगेजी विषय की सहायक प्राध्यापिका के रूप मे डॉ. बीना राठी ने अपने शिक्षादान की यात्रा प्रारम्भ कर दी थी, जो हजारो विद्यार्थियो को लाभान्वित करती हुई वर्तमान मे भी जारी है। अपनी इस सेवा यात्रा के दौरान डॉ. राठी ने मुम्बई से वर्ष 2003 मे कम्प्युटर कोर्स एम.एस.सीआईटी उत्तीर्ण किया। इतना ही नहीं भाषा सीखने की अपनी रूचि के चलते उन्होंने इंडो-एंग्लियन लिट्रेचर तथा अमेरिकन लिट्रेचर मे भी विशेषज्ञता प्राप्त की। आपके यूजीसी व्दारा मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय 17 जर्नल्स मे शोधपत्र तथा 19 पुस्तकों में चेप्टर्स प्रकाशित हुए है। लगभग 25 से अधिक कॉलेज, विवि, राज्य, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमीनारों में भी पेपर प्रेजेंटेशन दे चुकी हैं। उन्होंने 07 पुस्तक लिखी हैं, जिसमे से एक विभिन्न विश्वविद्यालयों में पाठ्यपुस्तक के रूप में भी शामिल है। उनकी संपादक के रूप में भी 11 पुस्तकें प्रकाशित हैं। यू.जी.सी. ने उनके 03 लघुप्रबंधो को प्रायोजित किया हैं। उन्हे 2001 में अमृता प्रितम साहित्याविष्कार पुरस्कार से तथा 2019 मे ए.पी.जे. अब्दुल कलाम लाईफ टाईम अचिव्हमेंट अवार्ड से नवाजा गया है।

सेवा के वृहद आयाम

डॉ. राठी की सेवा यात्रा यहीं पर नहीं थमीं अपितु वे कई रूपों में अपना योगदान दे रही हैं। वे युनिवर्सिटी की परीक्षा अधिकारी तथा प्लेसमेंट कमेटी अधिकारी के रूप में भी सेवा दे रही हैं। महाविद्यालयीन शिक्षकों के लिये आयोजित रिफ्रेशर्स कोर्सों में भी रिसोर्स पर्सन के रूप में तथा विभिन्न विवि में 'कीनोट स्पीकर' आदि के रूप में मार्गदर्शन प्रदान कर चुकी हैं। इसके साथ ही नैक पीयर टीम सदस्य के रूप में आसाम तथा नागालैंड के दो महाविद्यालयों का निरीक्षण भी कर चुकी हैं। चिखलदारा में आर्ट्स कॉलेज के एक्रेडेशन के लिये 'मॉक पीयर टीम मेम्बर' भी रही हैं। अपनी तमाम व्यस्तताओं के बावजूद आप समाजसेवा में अपना योगदान देते हुए लायंस क्लब अंजनगॉव, राजस्थानी महिला एवं नवयुवक मंडल अंजनगॉव सुर्जी तथा एनयूटीए, अंजनगॉव की अध्यक्ष के रूप में भी सेवा देती रही हैं।

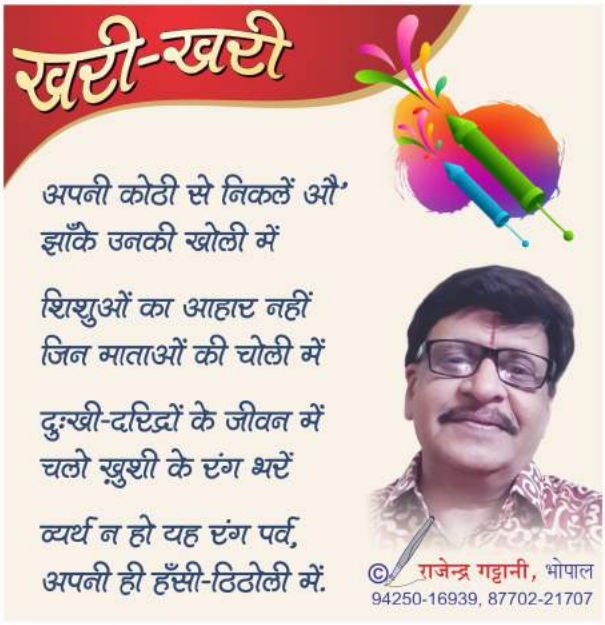

आमतौर पर सेवा संस्थाऐं अपनी गतिविधियों के लिये जो लक्ष्य तय करती हैं उन्हें हासिल करना भी बढ़ी चुनौती बन जाता है। लेकिन पूर्वी मध्यप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन एक ऐसा संगठन है जिसने हमेशा लक्ष्य से भी आगे बढ़कर अपनी सेवा गतिविधियों को अंजाम दिया है।

''संकल्प'' से आगे ''सेवा'' की मिसाल

पूर्वी म.प्र. महिला संगठन

पूर्वी मध्यप्रदेश में लगभग 2443 सदस्याओं वाला पूर्वी मध्यप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन न सिर्फ प्रदेश के सेवा संगठनों बल्कि समाज के देश भर के संगठनों के लिये भी एक मिसाल बना हुआ है। कारण है प्रदेश अध्यक्ष अनिता जावंधिया के नेतृत्व व प्रदेश सचिव रंजना बाहेती तथा कोषाध्यक्ष रेणु झंवर के मार्गदर्शन में समर्पित भाव से सभी सदस्याओं द्वारा सतत रूप से दिया जा रहा योगदान। सभी के सामूहिक प्रयासों ने असंभव को भी संभव बना कर रख दिया।

पौधारोपण में बनाया कीर्तिमान

''प्रकृति के रूप में ईश्वर का सम्मान'' अभियान के अन्तर्गत संगठन द्वारा 5 हजार पौधों के रोपण का लक्ष्य रखा गया था लेकिन सदस्याओं के उत्साह ने इस लक्ष्य को पीछे छोड़ते हुए 8 हजार पौधों के रोपण का नया कीर्तिमान स्थापित करवा दिया। पूर्वी मध्यप्रदेश प्रादेशिक महिला संगठन अध्यक्ष अनिता जावंदिया ने बताया कि वृक्षों से औषधि मिलती है, और इससे ही पर्यावरण भी खिलखिला उठता है, जिससे हमारा जीवन भी खुशहाल होता है। अतः पौधारोपण द्वारा ''प्रकृति के रूप में ईश्वर का सम्मान'' के हमारे लक्ष्य के अन्तर्गत प्रदेश में 5 हजार पौधों के रोपण का लक्ष्य रखा गया था। सम्पूर्ण प्रदेश में संगठन की सदस्याओं की संख्या 2443 है। इस अभियान में प्रत्येक घर से दो पौधे लगाने का संकल्प लिया गया था लेकिन सदस्याओं ने वह उत्साह दिखाया कि पौधारोपण की संख्या 8 हजार पौधों को पार कर गई।

लॉकडाउन भी बढ़ते कदमों को न रोक पाया

श्रीमती जावंदिया ने बताया कि जब यह संकल्प लिया गया था, तब कोरोना महामारी के कारण लॉकडाउन का दौर चल रहा था। ऐसे में 5000 पौधों के रोपण के लक्ष्य को प्राप्त करना भी अत्यंत कठिन कार्य था। इस स्थिति में संगठन की एकता ने काम किया। प्रदेश के साथ ही 4 संभाग, 22 जिला व 78 स्थानीय संगठनों ने मिलजुलकर इस पौधारोपण अभियान का व्यापक प्रचार-प्रसार किया। इसके लिये लॉकडाउन अवधि में यथासम्भव समस्त संचार माध्यमों का उपयोग किया गया। समस्त कार्यकर्ताओं ने भी पूर्ण जिम्मेदारी के साथ न सिर्फ पौधारोपण अपितु इस अभियान के व्यापक प्रचार-प्रसार में भी सहयोग दिया। इसमें सचिव रंजना बाहेती, कार्य समिति सदस्या प्रतिभा झँवर आदि के साथ ही समस्त संभाग, जिला व स्थानीय संगठन की

पदाधिकारी व सदस्याओं ने पूर्ण सहयोग दिया और अभियान को घर-घर तथा गाँव-गाँव तक पहुँचा दिया।

फिर लिया गौ संरक्षण का संकल्प

संगठन ने अब गांवों को संगठन से जोड़ने के साथ ही गौ संरक्षण का संकल्प भी लिया है। इसके लिये गाय के दूध से बने उत्पादों का ही उपयोग किया जायेगा। इसमें भविष्य में गाय के दूध से निर्मित उत्पादों को बनाना भी योजना में शामिल है। इसके साथ ही गाय के गोबर से निर्मित वस्तुओं के उत्पादन तथा उनके उपयोग का संकल्प भी लिया गया। इनके पीछे संगठन का लक्ष्य यही है कि गाय का अधिकाधिक महत्व बढ़े जिससे गौ पालन व संरक्षण में वृद्धि हो एवं इसके साथ ही पर्यावरण संरक्षण भी हो सके।

स्वास्थ्य की हर पल चिंता

प्रदेश की स्वास्थ्य एवं पारिवारिक समरसता समिति की गत 26 फरवरी को शिखा भदादा व कलावती जाजू के आतिथ्य में बैठक सम्पन्न हुई। इसमें शिखा जी ने स्वास्थ्य परीक्षण के लिए केम्प व दादी नानी के नुस्खे को बढावा देने के लिए कहा। श्रीमती जाजू ने बहू पढ़ाओ और उनका केरियर बनाओ पर वक्तव्य दिया। समिति द्वारा प्रदेश में स्वास्थ्य परीक्षण केम्प का समय-समय पर विभिन्न स्थानों पर आयोजन भी किया गया। योग दिवस पर योग क्लास एवं मैडिटेशन शिविर लगाए गए। प्रदेश में डाइटीशियन एक्सपर्ट डॉ. ममता पांडे के वर्चुअल वेबीनार का आयोजन भी हुआ। जरूरतमंदों को दवाइयां व खाद्य सामग्री प्रदान कर सहयोग किया गया। सिवनी मालवा की सुनीता सारडा ने मेजरिंग पेशेंट मॉनिटर दान किया।

भावी पीढ़ी का विकास भी लक्ष्य

गीता परिवार द्वारा महापुरुषों पर आधारित फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में चयनित बच्चों को प्रदेश अध्यक्ष ने पुरस्कृत किया। 1 मार्च को प्रदेश के अंतर्गत समिति की मीटिंग निर्मला मारू एवं ज्योति बाहेती के आतिथ्य में सम्पन्न हुई। इसमें डॉ. श्वेता जावंधिया ने गुड टच, बेड टच, सेनेटरी पैड, कोरोना में सुरक्षा कैसे करें आदि समझाया। बाल विकास समिति अंतर्गत तेजोमय मास्टर शेफ प्रतियोगिता में प्रदेश के 35 बच्चों ने भाग लिया एवं अपना स्थान निश्चित किया। संस्कार वाटिका में भी प्रदेश के बच्चों की सहभागिता रही। महेशनवमी के अवसर पर बच्चों के लिए रुद्राष्टक पाठ, मंत्र उच्चारण जैसी अनेक प्रतियोगिता रखी गयी। महेशनवमी पर बच्चों के लिए अनेक प्रतियोगिता रखी गयी, जिसमें प्रदेश में रथ सजाओ, व्रत त्योहार पर कहानी सुनाओ आदि प्रतियोगिताऐं शामिल हैं। स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी, नंद उत्सव, दिवाली मिलन समारोह, अन्नकूट आदि उत्सव मनाये गये।

तकनीकी विकास में भी बढ़े कदम

कम्प्यूटर नेटवर्किंग एवं एडवांस तकनीकी शिक्षा समिति द्वारा राष्ट्रीय समिति के अंतर्गत बढ़ते कदम में प्रदेश की सदस्याओं ने प्रशिक्षण लिया। संगठन के सभी प्रोजेक्ट का ऑनलाइन आयोजन एवं प्रचार-प्रसार किया तथा कोरोना काल में समाज बंधुओं की मदद भी की गई। प्रदेश में न्यूज़ रिपोर्टिंग एवं टेक्नोलॉजी संबंधित समस्या का निराकरण करने के लिए समिति हमेशा तत्पर है। फाग उत्सब, भजन वीडियो बनाओ प्रतियोगिता, गणगौर ऑनलाइन प्रतियोगिता एवं महेश वंदना के वीडियो बनाये गए। पूरे प्रदेश में मकर सक्रांति पर हल्दी कुमकुम, खिचड़ी वितरण, गोदा-रंगनाथ विवाह उत्सव एवं पतंग सजाओ, महिलाओं के लिए वीरांगनाओं पर फैंसी ड्रेस जैसी अनेक प्रतियोगिताऐं आयोजित हुई।

नारी जीवन की अपनी परेशानी व अपनी चुनौतियाँ भी हैं। इनमें से ही एक है, स्तन कैंसर। यह सम्भवतः महिलाओं में सबसे अधिक पायी जाती वाली सबसे खतरनाक बीमारी है। आईये जानें क्या है यह और इससे कैसे बचें?

नारी स्वास्थ्य का सबसे बड़ा शत्रु

स्तन कैंसर

डॉ. मंगल राठी, अमरावती

स्तन कैंसर वह कैंसर है जो स्तन कोशिकाओं में विकसित होता है और स्तनों की कोशिकाएं नियंत्रण के बाहर हो जाती हैं। स्तन के विभिन्न हिस्सों में स्तन कैंसर शुरू हो सकता है। स्तन कैंसर दुनिया के सबसे अधिक पाए जाने वाले कैंसर के रूप में फेफड़ों के कैंसर के आगे निकल गया है। सौभाग्य से यह कैंसर बहुत ही इलाज योग्य है अगर इसका निदान जल्द हो गया हो और वह स्तन के बाहर न फैला हो तो। एक बार जब स्तन कैंसर फैलने लगता है तो वह अधिक जटिल हो जाता है। स्तन कैंसर से मरने वाली किसी भी महिला की संख्या 38 में से लगभग 1 है। चाहे आप बेटी, मां, बहन, दोस्त, सहकर्मी, डॉक्टर या रोगी हों, कैंसर किसी को भी प्रभावित कर सकता है।

क्या हैं इसके लक्षण

वैसे तो इसकी विशिष्ट जाँच अनिवार्य हैं, लेकिन इसे सामान्य रूप से कुछ लक्षणों से पहचाना जा सकता है। इनमें स्तन में गांठ का आना, स्तन के आकार में बदलाव, पूरे स्तन या स्तन के एक हिस्से में सूजन आना, निप्पल या स्तन की ऊपरी त्वचा का रंग बदलना, त्वचा पर एक लाल पपड़ीदार परत आना, त्वचा संतरे के छिलके की तरह दिखना, सुखी होना, स्तन में या निप्पल में दर्द होना, स्तन का दर्द मासिक धर्म के बाद भी रहना, निप्पल का अंदर की ओर मुड़ना, निप्पल पर खुजली होना, निप्पल से ब्लड डिस्चार्ज होना तथा बगल में गठान का होना आदि इनमें से कोई भी लक्षण स्तन कैंसर के साथ अन्य बीमारी के भी हो सकते हैं। आपको कुछ महसूस होने पर तुरंत एक्सपर्ट डॉक्टर से जांच कराए।

क्या हैं इसके सामान्य कारण

50 से अधिक उम्र की महिलाओं में इसका प्रमाण ज्यादा होता है। यह पुरुषों की तुलना में महिलाओं में अधिक प्रमाण में होती है। इसका कारण कई बार अनुवांशिकता भी है। 12 साल की उम्र के पहले माहवारी आना, रजोनिवृत्ति की उम्र बढ़ना, 30 साल की उम्र के बाद पहला बच्चा होना, कभी भी गर्भवती न रहना, स्तनपान न कराना, पहले एक स्तन में कैंसर हुआ होना तथा मोटापा आदि इसके प्रमुख कारण हैं। इसके साथ ही भोजन में पौष्टिक तत्वों का अभाव, घने स्तन का होना, रजोनिवृत्ति के दरमियान हार्मोन की दवाइयों का प्रयोग, लम्बे समय तक गर्भनिरोधक दवाइयों का प्रयोग, शराब और धूम्रपान का सेवन आदि कारक स्तन कैंसर को निमंत्रण दे सकते हैं।

क्या है इसका उपचार

यदि खुद के हाथ से ब्रेस्ट में गठान महसूस हो तो चिकित्सकों को दिखाकर मैमोग्राफी, अल्ट्रासोनोग्राफी, एम आर आई, फाइन नीडल एस्पिरेशन साइटोलॉजी, बायोप्सी आदि जांच करवाऐं। इन जांच द्वारा स्तन कैंसर का निदान किया जाता है। स्तन कैंसर का चरण कितना दूर तक फैला है और टयूमर का आकार कितना बड़ा है, उस पर ट्रीटमेंट निर्भर रहती है। इसमें रेडियोथैरेपी, कीमोथेरेपी, हार्मोनल थेरेपी व दवाइयों से स्तन कैंसर का इलाज होता है।

बचाव के लिये सतर्कता जरूरी

स्तन कैंसर को रोकने का कोई तरीका नहीं है मगर जीवन शैली के कुछ बदलाव स्तन कैंसर के जोखिम के साथ-साथ अन्य बीमारियों को भी कम कर सकते हैं। नियमित स्तन कैंसर की जांच करवाऐं। स्वयं को भी हर महीने एक फिक्स दिन कांच के सामने खड़े होकर स्तन के आकार का व गोलाई का निरीक्षण करना है। साथ में अपनी हथेलिंयों को दोनों स्तन पर घुमाना है, ताकी गठान का पता लगे। जिनको कैंसर की पारिवारिक हिस्ट्री है, उन्हें उम्र के 30 साल से ही ख्याल रखना जरूरी है। भोजन में सब्जियों और फलों का उपयोग ज्यादा से ज्यादा करें। भोजन में नियमितता रखें। नियमित रूप से व्यायाम करें। स्वस्थ वजन रखें। नियमित मेडिटेशन व योगासन करें। जिंदगी सकारात्मक तरीके से जिऐं। अपने आसपास नकारात्मक लोगों को ना रहने दें। हरदम खुश रहे। दुखों से घिरे ना रहे। सदा हंसते रहें और दूसरों को भी हंसाते रहें। निसर्ग से प्यार करें। पर्यावरण की साफ सफाई के साथ स्वयं के शरीर की भी साफ सफाई का ध्यान रखें। शराब और धूम्रपान का सेवन ना करें। गर्भनिरोधक गोलियां और हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी अपने चिकित्सक की सलाह से ही लें। कम से कम 1 साल तक बच्चे को स्तनपान कराएं।

कविता

फागुन के आते ही,
पत्ते पत्ते की पाती-पाती पर,
पंखुड़ियों के रोचक-रोचक रंगों से,
कुंज की गलियों-गलियों में ,
बागों की कलियों-कलियों ने
शोर होती ही श्रंवर संग खेली होली,
फागुन के आते ही ।

यदुनंदन जाजू, श्योपाल

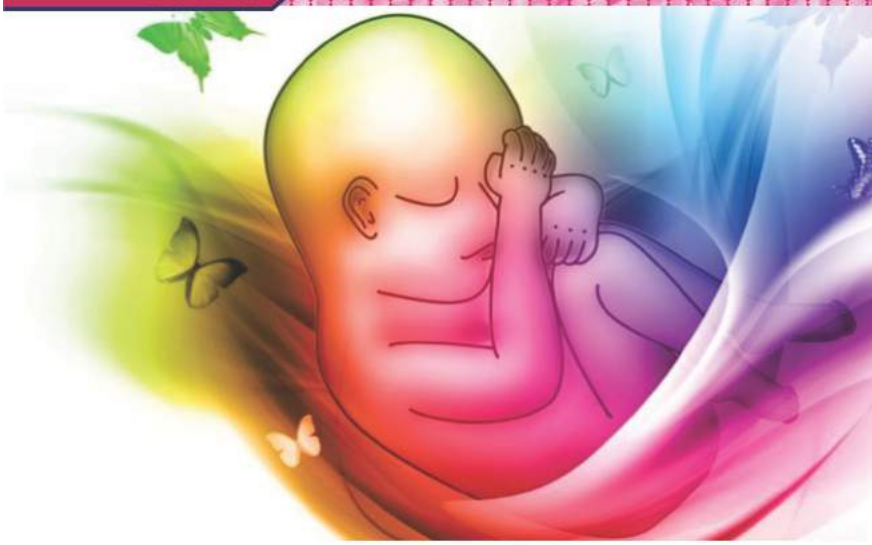

संस्कार ही मानव को पशुओं से पृथक करते हैं। हमारे देश में इन्हें 16 संस्कारों में समाहित किया है, जिनकी शुरूआत होती है, गर्भ संस्कार से। आमतौर पर लोग कुछ अन्य संस्कारों के साथ इसकी भी उपेक्षा कर देते हैं, जबकि यह पूर्ण वैज्ञानिकता पर आधारित एक अनिवार्य संस्कार है।

पूर्ण वैज्ञानिकता पर आधारित
गर्भ संस्कार

धीरा सोमानी (इंदौर)
गर्भ संस्कार कोच
81037-93561

यदि अपनी संतान को संस्कार नहीं देंगे तो आप अपनी संतति और संपत्ति दोनों को नहीं बचा पायेंगे और संतान को संस्कार देने की शुरूआत गर्भसंस्कार से ही की जानी चाहिए। गर्भसंस्कार जैसा नाम से स्पष्ट है गर्भावस्था के दौरान दिये जाने वाले संस्कार। शास्त्रों के अनुसार सौलह संस्कार में से सबसे महत्वपूर्ण है गर्भसंस्कार। वैदिक युग से आधुनिक युग तक जितने भी महान व्यक्ति हुए हैं उनके महान होने के पीछे गर्भसंस्कार ही कारणभूत हैं। हमारे प्राचीन इतिहास में गर्भसंस्कार की आध्यात्मिक सफलता के कई उदाहरण हमने देखे हैं। जैसे महान यौद्धा अभिमन्यू ने अपनी माता के गर्भ में ही चक्रव्यूह को भेदना सीख लिया था। भक्त प्रहलाद दानव कुल में जन्म लेने के बाद भी अपनी माता द्वारा गर्भावस्था में की जाने वाली प्रवृत्तियों के कारण भगवान नारायण के परम भक्त बने। शिवाजी महाराज की माता जीजाबाई का उदाहरण जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी अपनी संतान को गर्भसंस्कार देकर महान बनाया।

सफलता के पीछे गर्भ संस्कार

आधुनिक समय के भी ऐसे कई उदाहरण हमारे सामने है जहां जाने अंजाने में माता-पिता द्वारा किये गए प्रयासों का इनकी संतान पर असर स्पष्ट दिखाई देता है। उदाहरण के लिए बेडमिंटन खिलाड़ी सानिया नेहवाल, प्रसिद्ध गायक सोनू निगम, तबला वादक जाकिर हुसैन साहब इन सभी की कला कहीं न कहीं इनके गर्भसंस्कार की ही देन है। गर्भसंस्कार सिर्फ वैदिक विज्ञान ही नहीं है बल्कि ये मार्डन साइंस भी है। आधुनिक रिसर्च के बाद कई आश्चर्यजनक तथ्य सामने आए हैं। जैसे- शिशु के दिमाग का 70 प्रतिशत विकास गर्भावस्था के दौरान ही हो जाता है। गर्भावस्था के तीसरे महीने से शिशु की श्रवण शक्ति विकसित हो जाती है। शिशु गर्भ में सुन सकता है, समझ सकता है और याद भी रख सकता है। इसलिए तो वो अपनी मातृभाषा बिना सिखाए ही बोलने लगता है क्योंकि गर्भावस्था के दौरान ही वो उसे सीख लेता है। माता के विचार, प्रक्रिया और आसपास के वातावरण का शिशु पर सीधा असर पड़ता है।

गर्भसंस्कार के चमत्कारी फायदे

गर्भ संस्कार के पालन से इच्छित गुणवाली संतान प्राप्त हो सकती है, जो गुण माता-पिता में न हों परंतु वो अपनी संतान में लाना चाहते हो तो वो भी गर्भ संस्कार के पालन से संभव होता है। गर्भ संस्कार के पालन से अनुवांशिक रोगों को नियंत्रित किया जा सकता है। होने वाली संतान का मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक हर तरह से संपूर्ण विकास किया जा सकता है। उसमें अच्छी आदतें और संस्कार का सिंचन किया जा सकता है। गर्भ संस्कार के पालन से माता भी गर्भावस्था के दौरान होने वाले मानसिक तनाव से मुक्त रह सकती है और अपनी गर्भावस्था की यात्रा को आनंदपूर्ण तथा प्रसव के समय को आसान बना सकती है।

क्या है गर्भ संस्कार

गर्भ संस्कार मात्र कोई धार्मिक क्रिया नहीं है ये आचार विचार में बदलाव लाने की प्रक्रिया है। गर्भ संस्कार ये बताता है कि गर्भस्थ स्त्री को कैसी दिनचर्या का पालनकरना चाहिये ताकि श्रेष्ठ गुणों वाली संतान की प्राप्ति हो सके। गर्भसंस्कार गर्भस्थ शिशु का मानसिक आहार है। शरीर के पोषण के लिए जिस प्रकार भोजन की आवश्यकता हर रोज रहती है, ठीक उसी प्रकार गर्भस्थ शिशु के श्रेष्ठ विकास के लिए गर्भ संस्कार का पालन भी हर रोज होना चाहिए। गर्भ संस्कार द्वारा शिशु के 90 वर्षों का विकास 9 महिनों में किया जा सकता है। यदि हमें फल अच्छा चाहिए तो बीज भी अच्छा होना चाहिए क्योंकि "सुधार बीज में हो सकता है, वृक्ष में नहीं।" तो क्यों न हम मिलकर गर्भ संस्कार के इस ज्ञान को समाज के हर घर तक पहुँचायें और एक स्वस्थ और संस्कारवान समाज की नींव तैयार करें। नींव मजबूत होगी तभी तो उस पर बनी इमारत भी मजबूत बनेगी।

राह जिंदगी की...

प्रो. कल्पना गगडानी, मुंबई

मात्र शुभकामनाओं से शुभ नहीं होता

मार्च महिने की शुरुआत 'महिला दिवस' की धूम से होती है। पत्र-पत्रिकाओं, सामाजिक संस्थानों द्वारा तरह-तरह से इसे पेश किया जाने लगता है। महिलाओं के वर्चस्व पर अनेकों सवाल उठाये जाते हैं और उनके तत्कालीन हक भी दर्शाये जाते हैं। दिन रात व्हाट्सेप पर महिलाओं पर तंज करने, जोक बनाने और रील बनाने वालों के मन में भी एक दिन महिलाओं के प्रति इज्जत जाग उठती है और शुभकामना संदेशों से मोबाईल भर जाता है।

क्या इतनी मात्र ही महिला दिवस की उपलब्धि है? क्या यह एक दिवसीय समारोह महिलाओं का उत्थान कर देगा? नहीं, परंतु एक दिन एक सोच को जन्म जरूर देगा।

शुभ मात्र शुभकामनाओं से नहीं होता, शुभ मात्र दूसरों द्वारा भी नहीं किया जा सकता, शुभ के लिये अपने आप बुद्धि विवेक से तर्क संगत प्रयास चाहिये।

अपने उत्थान के लिये महिलाओं को सर्वप्रथम शिक्षित और ज्ञानी बनना होगा। शिक्षा से अर्थ मात्र क्लासरूम शिक्षा नहीं होता, यह ज्ञान व्यवहारिक भी होना चाहिये। जीवन के किसी क्षेत्र में कारगुजारी और कला को विकसित कर भी ज्ञानी बना जा सकता है। आर्थिक आत्मनिर्भरता महिलाओं को आत्मविश्वास और उचित सम्मान दिलाती है। महिला विकास की ये दूसरी और महत्वपूर्ण सीढ़ी है। इस ओर महिलाओं का बहुत अधिक ध्यान केंद्रित होगा।

सफलता की इन दो सीढ़ी के बाद महिलाओं को पुनः आत्मविश्लेषण करना होगा। सफलता के साथ जीवन की जवाबदारियां आनंद, सुख शांति को समझना भी बहुत जरूरी है। फल लगने के बाद वृक्ष नीचे को झुक जाते हैं ताकि फलों का स्वाद और आनंद समाजजन उठा सकें। रसास्वादन हो।

हमारे समाज में और पूरे देश में इस बदलाव से कुछ सवालिया निशान भी उठे हैं। अहं का टकराव, टूटते परिवार, बच्चों की परवरिश अधर में लटके वैवाहिक संबंध?

फैशन की तरह संस्कृति एक दिन में नहीं बदल जाती है। एक जवाबदारी उठाकर दूसरी जवाबदारी से पल्ला नहीं झटक सकते। सामाजिक व्यवस्था के गड़बड़ाने से सब कुछ गड़बड़ा जाता है। इस महिला दिवस पर प्रगति की दौड़ दौड़ते कुछ विचार कीजिये।

शिक्षा अर्जित कीजिये, ज्ञान को विकसित कीजिये, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनिये, स्वाभिमान से जियो पर पुरुष और परिवार के सम्मान पर चोट मत कीजिये। अपनी परम्परागत प्राथमिकताओं से मुंह मत मोड़िये।

परिवार संचालन की प्राथमिकता को समझिये। संतति विकास के वरदान को स्वीकार कीजिये। बच्चों के उचित लालन पालन की जवाबदारी स्वीकारिये।

अपने आपमें इतनी क्षमता पैदा कीजिये कि आप घर और बाहर की इन दोनों जिम्मेदारियों को बखूबी निभा सकती हैं और सहस्त्रों महिलाएं आज भी इसे बड़े ही संतुलित ढंग से निभा रही हैं।

दो नावों में सवार होने के पहले उस सवारी के लिये शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार होइये। दूसरों के अभिमान को ठेस पहुंचाये बिना अपने स्वाभिमान को रक्षित कीजिये। महिला होने का सुख आनंद, इज्जत, गर्व आप तभी बटोर पायेंगी। सर्वस्व शुभ की सहस्त्र शुभकामनायें।

माहेश्वरी समाज में सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली
अन्तर्राष्टीय स्तर की मासिक पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

को सम्पूर्ण राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक एवं गुजरात में जिला तथा तहसील स्तर पर

ऊर्जावान एवं कर्मठ प्रतिनिधियों की आवश्यकता है

आत्मविश्वास से भरपूर व पर्याप्त
शैक्षणिक योग्यता वाले उम्मीदवारों को प्रथमिकता
आकर्षक कमीशन/ वेतन एवं प्रेस कार्ड देय होगा।
इच्छुक उम्मीदवार अपना बायोडाटा पूर्ण जानकारी के साथ ई-मेल करें।

smt4news@gmail.com
मो. - 094250-91161

SMT NEWS
VIDEO NEWS BULLETIN

IS:1786
CM/L - 6943589

GBR TMT
THE STRENGTH WITHIN
www.gbrmetals.com

Manufacturers of High quality
MS Billets and TMT Bars

Works:
#295, G.N.T Road,
Peravallur Village,
Ponneri Taluk - 601 206
Tamil Nadu
Website: www.gbrmetals.com

Registered Office:
#4, Ramanan Road,
Chennai - 600 079
Tamil Nadu
Ph: +91 44 25292151
E-mail: sales@gbrmetals.com

नारी को हमारे देश में वैसे तो देवी की तरह ही पूजा जाता रहा है। लेकिन पुरातन काल से वर्तमान तक की घटनाओं को देखें तो उसके साथ कई बार अन्याय भी हुआ है। अपने साथ न्याय के लिये हमें अपने हौंसले से सफलता की उड़ान भरनी होगी। आईये हम सोचें हमें अपने आपको कैसे तैयार करना है?

हौंसले से भरनी होगी नारी को उड़ान

राजश्री राठी, अकोला

हकीकत में विश्वास रखें

पुरातन काल से आज तक नारी को देवी रूप में पूजा जाता है। उसे गृहलक्ष्मी, अन्न पूर्णा, शक्ति स्वरूपा और भी न जाने कितनी ही उच्चतम उपाधियों से नवाजा जाता रहा है। किंतु वास्तविकता में यह सारी बातें इतिहास के पन्नों और अखबारों की सुर्खियों में सिमट कर रह जाती हैं। सीता जी जैसी महान पतिव्रता के घोर त्याग, समर्पण, तपस्या की रामायण साक्षी है, राधा जी का कृष्ण प्रेम में समर्पित भाव, द्रौपदी का चीरहरण, पग-पग पर नारियों को कठिन परीक्षा देनी पड़ी। उसके अंतस की पीड़ा पर दया, सहानुभूति व्यक्त की जाती है, किंतु उसके साथ हो रहे अन्याय के विरोध में कदम नहीं उठाये जाते तो कभी बने हुये नियमों का पालन नहीं किया जाता यह न्यायोचित नहीं है। हर नारी अपने साथ हो रहे न्याय अन्याय के व्यवहार भाव को समझने में सक्षम हो।

स्वयं को जानें

पारिवारिक और सामाजिक दृष्टि से नारी की जीवनशैली में बदलाव लाने का, उसके दायित्वों को सांझा करने का प्रयास कम ही होता है। दोहरी भूमिका निभाने में नारी सक्षम है, यह कहकर उसका मान तो बढ़ा दिया जाता है किंतु उसका संघर्ष कम हो, वह स्वयं के स्वास्थ पर, रुचियों पर ध्यान दे पाये, खुशियों के हसीन लम्हों के रंग अपने जीवन में उतार पाये? इसके लिए कोई पारिवारिक सदस्य प्रयासरत नहीं रहते। महिलाओं को बड़ा लक्ष्य साधना होगा। जीवन की वास्तविक खुशी किटी पार्टियों और आधुनिक परिवेश में नहीं है, यह समझना होगा और अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाने हेतु प्रयासरत रहना होगा।

अपनी स्वतंत्र पहचान बनायें

वर्तमान दौर में कुछ परिवर्तन हुआ है बेटियों के लालन-पालन, शिक्षा में कोई कोताही नहीं हो रही लेकिन उच्चतम शिक्षित वर्ग छोड़ दिया जाये तो आज भी सामान्य और ग्रामीण भागों में बेटियां जब बहू बनकर नये घर में जाती है तो उन्हें कई कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है। हर नारी के भीतर कई तरह के कला, कौशल जैसे गुण विद्यमान रहते हैं। पारिवारिक व्यस्तता और असीमित दायित्वों के चलते नारी के भीतर छिपी प्रतिभा धूमिल हो जाती है, उसकी कल्पनाओं की उड़ान के पंख काट दिये जाते है, चौके चूल्हे में उसे अपने अनंत गुणों की आहुति देनी पड़ती है। नारी केवल परिवार की इच्छापूर्ति का माध्यम बनकर रह जाती है। अब उसे स्वयं ही अपने सपनों को साकार करने की दिशा में कदम उठाने होंगे, अपनी प्रतिभा पर जमीं धूल की परत को उसे ही साफ कर चमकाना होगा।

अपने अधिकारों के लिए जागरूक रहें

स्मार्ट युग की स्मार्ट नारी बन विज्ञान के युग से कदमताल मिलाकर चलना होगा। कोई भी क्षेत्र हमारे ज्ञान दायरे से अछूता ना रहे। चाहें बैंकों के कार्य हों, जायदाद संबंधित, बीमा पॉलिसी और भी महिलाओं के हित में अनेक अधिकार होते है जिनसे आज भी बहुत सी महिलायें अनजान हैं, इस अज्ञानता के चलते बाहरी दुनिया उनका लाभ उठाती है। अपने स्वास्थ्य और पारिवारिक दायित्वों के प्रति जागरूक जरूर रहें किंतु उसमें अपने अस्तित्व की होली न होने दें। खुशियों की पुरवाई का आनंद महिलाओं को अधिक लेना होगा। उसका खुशहाल होना, परिवार, समाज और देश की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

वर्तमान में हिन्दू उत्तराधिकार नियम के अनुसार बेटे और बेटियों को पिता की संपत्ति में समान अधिकार प्राप्त हो गया है जिसके अनुसार बेटे के होने पर भी बेटियों का पिता की संपत्ति पर अधिकार बना रहेगा। अधिकांशत: ब्याहता बेटियाँ अपने पिता की संपति पर अपना अधिकार नहीं जतातीं और अपने भाई को पिता की संपति पर पूरा अधिकार दे देती हैं। परंतु कहीं-कहीं स्थिति विपरीत होती हैं, ब्याहता बेटियां अपने पिता की संपति पर अपना हक चाहती हैं। ऐसी परिस्थिति में कभी-कभी रिश्तों में जीवनभर की खटास आ जाती है। ऐसे में विचारणीय हो गया है कि अगर बेटी के पीहर का परिवार सामर्थ्यवान ना हो तो अथवा बेटी अपने ससुराल में सुखी-सम्पन्न हो तो भी विवाह के बाद बेटियों का अपने पिता की संपत्ति पर अधिकार जताना उचित है अथवा अनुचित? आइये जानें इस स्तम्भ की प्रभारी सुमिता मूंदड़ा से उनके तथा समाज के प्रबुद्धजनों के विचार।

सामर्थ्यवान बेटी का अपने पिता की संपत्ति पर हक जमाना उचित या अनुचित ?

उत्तरदायित्व निभाने वाला ही सम्पति का उत्तराधिकारी

सामर्थ्यवान विवाहित बेटी का अपने पिता की संपति पर अधिकार मेरे दृष्टिकोण में उचित नहीं है। बेटी को विवाह के पश्चात सिर्फ और सिर्फ अपने पति के हिस्से की संपत्ति पर अधिकार रखना चाहिए। देखा जाये तो विवाह के समय बेटी को जो दहेज माता-पिता द्वारा दिया जाता है वह उनकी संपत्ति का ही तो हिस्सा होता है। बेटी को उस दहेज रूपी सम्पत्ति को पाकर संतुष्ट रहना चाहिए। अन्यथा पीहरवालों के साथ मधुर संबंध कटुतापूर्ण हो सकते हैं। वैसे भी हिन्दू विशेषकर हमारे माहेश्वरी समाज में विवाहित बेटी को विवाह से मृत्युपर्यन्त कुछ न कुछ, किसी न किसी रूप में देने की लाग बनी ही रहती है, फिर चाहे बेटी के घर में खुशी का आगमन हो अथवा दुःख का। इतना ही नहीं माता-पिता से अथवा भाई-भाभी से अथवा पीहर परिवार से विवाह के बाद बेटी को लेने की सीमा और मर्यादा रखनी चाहिए। साथ ही बहन बेटी को 'भाई द्वारा लेकर और भतीजों के देते रहना' चाहिए, इससे बेटी का पीहर में रुतबा और सम्मान बना रहता है। अगर विवाहित बेटी को ही अपने माता-पिता को संभालना है और उनकी बुढ़ापे में देख-रेख करने हेतु आवश्यक हो तो वह अवश्य उनकी संपत्ति पर अपना अधिकार जताए। उत्तरदायित्व निभानेवाले ही संपत्ति पर अधिकार जताने के उत्तराधिकारी होते हैं। हिन्दू उत्तराधिकार नियम में बेटे और बेटी को समानता का अधिकार देने के साथ जिम्मेदारियों के बाबत भी नियम बनाये दिए गए हैं जिसको हम जान-बूझकर नजरअंदाज करते हैं। सामाजिक कार्यप्रणाली को सुचारू रूप में चलाने के लिए सामाजिक कार्यकर्ताओं को परिस्थितियों के अनुरूप आवश्यक कदम उठाने चाहिए।

❐ **सुमिता मूंधड़ा,** मालेगांव, (महाराष्ट्र)

बेटी का हक उसका अधिकार

प्राचीन समय में पिता की संपत्ति पर जन्म सिद्ध अधिकार बेटे का ही होता था। लड़की पैदा होते ही उसे पराया धन कहा जाता था। उसके बड़े होते ही उसकी शादी कर दी जाती थी और उसकी शादी मे लगा हुआ धन ही बस बेटी की संपत्ति मानी जाती थी। बेटी के हिस्से की संपत्ति को लेकर हमेशा से ही विवाद रहा है। कई लोग कहते हैं कि बेटी को बेटे से कम अधिकार हैं। कई लोग कहते हैं, बेटी और बेटा में समानता का अधिकार है। समाज में अलग-अलग तरह की भ्रांतियां हैं। किये गए संशोधन के जरिए बेटियों को पुश्तैनी संपत्ति में बराबर का अधिकार दिया गया था। उत्तराधिकारी अधिनियम 2005 में कानूनन सुप्रीम कोर्ट द्वारा देश की बेटियों को उनके पिता की पैतृक संपत्ति पर पूरा हक दिया गया है। यानी विवाह के बाद भी बेटी को पिता की संपत्ति पर पूरा अधिकार है और मिलना चाहिये। अगर किसी वजह से ससुराल वाले निकाल देते हैं या पति की मौत हो जाती है अथवा ससुराल वाले उसे अपनाने से इनकार कर देते हैं तो वह मायके की संपत्ति से अपना जीवन व्यतीत कर सकती है। वर्ष 2005 से कानूनों में बदलाव आ गया जिसके तहत बेटियों को भी पैतृक संपत्ति में बराबर का हिस्सा देने की बात कही गई थी। अगर कोई बेटी अपने भाई से संपत्ति नही लेना चाह है तो वह उसकी खुशी की बात है। वैसे कानून द्वारा बेटी को अपने पिता की संपत्ति पर हक जताना उचित है।

❐ **कुमकुम काबरा,** बरेली (उ.प्र.)

हक और कर्तव्य सिक्के के दो पहलू

हिंदू उत्तराधिकार नियममें लिंग भेदभाव मिटाने का कानून का भाव निहित दिखाई देता है। बेटी के ससुराल में आर्थिक असंपन्नता की स्थिति में यह कानून बेटी को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। विपरीत परिस्थितियों में बेटी अपना हक जरूर जताए। किंतु संपन्न ब्याहता बेटी हक चाहने से पहले एक बार यह विचार अवश्य करें कि क्या उसने अपने माता-पिता की देखरेख-संभाल आदि भी की है? अगर हक बराबरी का है तो पिता के कर्ज एवं देखभाल की जिम्मेदारी भी बेटी और दामाद की होनी चाहिए। अगर कर्तव्य का वहन नहीं किया हो तो नैतिकता के आधार पर बेटियां हक ना जताए, नहीं तो मायके का जायका चला जाता है। जहां पीहर परिवार के आर्थिक कमजोर हालत में बेटियां पैतृक संपत्ति की चाहना रखती हैं, वहां टकराव की स्थिति पैदा हो जाती हैं जो सर्वथा अनुचित है। हां कहीं-कहीं उल्टी स्थिति भी देखने में आती है। बेटे अपना कर्तव्य भूल जाते हैं और बेटियां मातृ-पितृ ऋण चुकाती नजर आती हैं। वे अपनी बुजुर्ग माता-पिता का सहारा बनती हैं। ऐसे में उन बेटों को भी सोचना चाहिए कि कर्तव्यों के बाद ही हक आते हैं।

❐ **अनुश्री तरुण कुमार मोहता,** खामगांव जिला बुलढाणा

बेटियों को बनाऐं आत्मनिर्भर

बेटियों को पिता की संपत्ति में हिस्सा 'आधुनिक समाज की सोच' को इंगित करता है। प्राचीन काल से ही बेटियों को पराया धन मानते आए हैं और शादी के बाद पीहर पक्ष से बेटी के सब अधिकार गौण हो जाते हैं। पर समानता की बयार में कुछ विचारों में भी परिवर्तन हुआ है। अब लड़के व लड़की को समान अधिकार हैं तो फिर चाहे वह पैतृक संपत्ति में ही क्यों ना हो, पर इस बात से इत्तेफाक रखना कि बेटियों को सिर्फ अधिकार ही मिले गलत है। अधिकारों के साथ जिम्मेदारियों का भी समान रूप से वहन हो तो यह बात जायज है। लेकिन हमारी भारतीय संस्कृति में माता- पिता बेटी के घर ना तो रहना पसंद करते हैं ना अपनी जिम्मेदारी बेटी पर डालना। जब जिम्मेदारी बेटा अकेला उठाए तो अधिकार भी बेटे को ही मिले। अगर बेटी भी बेटे के बराबर उत्तरदायित्व निभा रही है तो बेटी को पिता की संपत्ति में अधिकार मिलना चाहिए फिर चाहे वह आर्थिक रूप से संपन्न ही क्यों ना हो। बेटियों को पढ़ा लिखा कर इतना आत्मनिर्भर व मजबूत बनाएं कि उनको किसी की भी संपत्ति की जरूरत ही नहीं पड़े।

❐ **विनीता काबरा,** जयपुर

रिश्तों की कीमती पर बंटवारा नहीं

पीहर एक लड़की के मन का ऐसा कोना है जो कभी धुंधला नहीं हो सकता। पर क्या माता-पिता के जाने से मायके की यादें-बातें भुलते हैं? नहीं, बल्कि रिश्ता और गहरा होता है। एक दूसरे के प्रति प्रेम तथा फिक्र बढ़ती है। वैसे तो पिता की संपत्ति पर कानूनन हर बच्चे का पूरा हक होता है, पर क्या वह संपत्ति भाई-बहन के प्यार को साबुत रख सकती है? नहीं, बल्कि उनमें खटास आकर कई बेटियों के मायके टूट जाते हैं। जहां पीहर की काचली और कसुंबल की हर उम्र में राह रहती है, उसकी उम्मीद ही टूट जाती है। अगर बेटी वह हक ना लेते हुए सिर्फ भाई से अपने पीहर का रास्ता अमर रखने की मांग करे तो कोई बेटी पीहर से खाली हाथ नहीं लौटेगी। पीहर में बार-बार आना-जाना रहा तो यादों का जो मेला लगेगा, चंद संपत्ति यह सब नहीं कर सकती। चाहे भाई दे भी दे पर वह संतोष प्रदान नहीं कर सकती।

❐ **मेघा अमोल,** मंडोरा (नासिक)

यह वास्तव में भावनाओं का मुद्दा

बेटियां अपने पिता की आन बान शान होती हैं। अपने पापा को वो जन्म से देखते-समझते हुए बड़ी होती हैं। जब बेटी के पास सब कुछ है तो पिता की संपत्ति से कुछ नहीं लेना चाहिए। शादी के बाद ससुराल संपन्न हो या बेटी जॉब कर रही है तो क्या बेटियां अपनी कमाई अपने पिता को देती हैं? मुद्दे की बात यह कि जरूरत ना हो तो माता-पिता भी नहीं लेना चाहेंगे। पापा, बिटिया के सुख-दुःख, रीति-रिवाज सब के लिए तैयारी करके रखते हैं। उसमें पिता सामर्थ्य अनुसार देते हैं। किसी न किसी रूप से बेटी के हिस्से का बेटी तक पहुँच ही जाता है। फिर कानून का नाम लेकर क्यों अपने पिता की संपत्ति लेना। बचपन से जो संस्कार, शिक्षा, पिता-माता से मिलती है, वहीं सब से बड़ी संपत्ति होती है जो कि पूरी की पूरी बेटियों की होती है।

❐ **नीरा मल्ल, पुरूलिया** (प. बंगाल)
अध्यक्ष-पश्चिम बंगाल प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

यह सर्वथा उचित

हिन्दू उत्तराधिकार नियम के अनुसार बेटे और बेटियों को पिता की संपत्ति में समान अधिकार प्राप्त हो गया है जो सर्वथा उचित है। यह कहने सुनने और अपनाने में उचित नहीं लगता क्योंकि हमारे पुरूष प्रधान समाज में यह बात गले से उतरती नहीं दिखती। पर यह क्रांतिकारी कदम है जो सदियों से चल रही परम्परा के विरूद्ध है। अतः अटपटा लगता है। कुछ भी नया कदम लेने में विरोध या असमंजस का सामना तो करना ही पड़ता है पर फिर कुछ समय बाद सब ठीक-ठाक हो जाता है। हमारे पास अनेक ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं। सती प्रथा, घूंघट प्रथा, स्त्री शिक्षा, कामकाजी महिलाएँ होना आदि को समाज ने हँसी-खुशी नहीं अपनाए। स्त्री समाज ने बहुत संघर्ष और विरोधों का सामना कर इन्हें अर्जित किया है। यही बात इस संदर्भ में होगी। पति चाहे कितना ही धनाढ्य क्यों न हो पर माता-पिता से मिला हुआ छोटा सा उपहार भी उसे करोड़ों का लगता है और अपना और सिर्फ अपना लगता है। अतः इस कानून को सहर्ष स्वीकार किया जाना चाहिये।

❐ **विद्या राठी,** थाणे (महाराष्ट्र)

संपत्ति के लिये रिश्ते खराब न करें

हमारी प्राचीन परंपरा रही है पिता सामर्थ्य से बढ़कर दिल खोलकर खूब लाड-प्यार एवं उपहार के साथ अपनी लाडली को स्नेह, आशीर्वाद के साथ विदा करते हैं कि उनकी पुत्री हमेशा ससुराल में राज करेगी। पिता की संपत्ति पर पुत्र- पुत्री का समान अधिकार का कानून जरूर बना है किंतु यह भी सत्य है बेटी द्वारा हक जताने पर भाई- बहनों के संबंधों में दरार आ जाती है। मेरे विचार से संपत्ति की खातिर पीहर पक्ष से आजीवन रिश्ते खराब करने से तो अच्छा है वो अपने ससुराल में सुखी, संपन्न, खुशहाल एवं संतोष से परिपूर्ण जिंदगी व्यतीत करें। खासकर यह जानते हुए भी कि उसके पीहर की स्थिति सामर्थ्यवान नहीं है, अधिकार जताना पूर्णतया अनुचित है।

❐ **भारती सुजीत बिहानी,** सिलीगुड़ी (पश्चिम बंगाल)

सामर्थ्यवान के लिये नहीं जरूरत

"पूत सपूत तो क्यों धन संचय। पूत कपूत तो क्यों धन संचय ।।" आज के समय में लड़का-लड़की दोनों कदम से कदम मिलाकर चलते हैं, इसलिए यह कथन दोनों पर चरितार्थ है। बच्चे सामर्थ्यवान व सुविचारों के हों तो वे स्वयं ही अपने माता पिता के धन पर अधिकार नहीं जताएंगे। दूसरे पक्ष पर नजर डालें, यदि लड़की समर्थ नहीं है, तो माता-पिता स्वयं ही अपनी संतुष्टि के लिए बेटी के लिए धन एकत्रित करके रख सकते हैं। बेटियां समर्थ हैं तो धन संचय करने की जरूरत नहीं है। इस पक्ष में बेटी के साथ दामाद का सुपक्ष होना भी बहुत जरूरी है। दामाद अपनी पत्नी को सहयोग दे एवं ससुराल वालों के धन पर नजर ना रखे। मेरा एक सुझाव है, जब बेटी काबिल है, तो माता-पिता अपनी संपत्ति का उपयोग समाज सेवा के कार्य में करें। विद्यालय, पुस्तकालय, अनाथालय, वृद्धाश्रम आदि किसी का भी निर्माण करा कर आने वाली पीढ़ियों को लाभ पहुंचाने में मदद कर सकते हैं। ऐसे कार्य को समाज बहुत ही सम्मान की दृष्टि से देखेगा।

❐ **अनुभि राठी,** रतलाम

संबंध बिगड़ने का बनता है कारण

हिन्दू उत्तराधिकार नियम के अनुसार पिता की सम्पत्ति पर बेटी, बेटों का समान अधिकार है। लेकिन प्रायः कम बेटियां ही इस अधिकार का उपयोग करती हैं। मेरे विचार से करना भी नहीं चाहिये। बेटी अपना भाग्य लेकर आता हैं। जिस बेटी का ससुराल पक्ष पूर्णतः सम्पन्न होता है वो बेटी इससे हमेशा दूर रहती है। वह पिता की सम्पत्ति का समस्त अधिकार अपने भाईयों को ही दे देती है। जो बेटी दूसरों की अनुचित बातों में आकर पिता की सम्पत्ति पर बराबर का अधिकार जताती है, वह अपने पीहर के परिवार से हमेशा के लिये अलग थलग पड़ जाती है। भाईयों के साथ उसका प्रेम हमेशा के लिये समाप्त हो जाता है। यदि बेटी की सुसराल में आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है तो भाईयों को स्वयं उसकी सहायता करनी चाहिये ताकि ऐसी स्थिति उत्पन्न ही ना हों और भाई-बहनों का प्यार बना रहे।

❐ **लखन माहेश्वरी,** अजमेर

यह अधिकार नही प्रसन्नता का विषय

मेरी राय में अगर बेटी की ससुराल संपन्न और पैसे वाली है तो किसी भी बेटी का अपने पिताजी की संपत्ति में हिस्सा मांगना अनुचित ही है। जब किसी बात की कमी ना हो तो फिर सम्बन्ध को समझते हुये अपने पिताजी और अपने भाई के परिवार में संपत्ति के लिये अपना हिस्सा मांगकर सम्बन्ध की दूरियां ना बढ़ने दें। उलटा उनको समय - समय पर यह जतायें कि मैं अपने घर खुश हूँ और आप भी अपने परिवार संग खुशहाल रहो। आपके बचपन से लेकर आपके शादी ब्याह तक आपके पिताजी ने आपको किसी बात की कमी नहीं रहने दी और अच्छा घर-परिवार देखकर आपको अच्छे व्यक्ति के साथ ब्याह कर अपना फ़र्ज अदा किया है। अब आपकी बारी है कि आप अगर जरुरत नहीं है तो संपत्ति के लिये ना माँग करें ना उलाहना दें। हां, अगर बेटी की परिस्थिति साधारण हो तो हर बाप अपनी क्षमता अनुसार अपनी बेटी की फ़िक्र करता ही है।

❐ **सपना श्यामसुंदर सारडा,** सुरेंद्रनगर (गुजरात)

सामर्थ्यवान बेटी के लिये हक जताना अनुचित

हिंदू उत्तराधिकार कानून में 2005 में हुए संशोधन के पश्चात पिता द्वारा अर्जित की गई संपत्ति पर पुत्र एवं पुत्री का समान अधिकार होता है। किंतु अधिकांशतः संपत्ति ही सभी विवादों की जड़ होती है। देश के कई उत्तरी एवं पश्चिमी राज्य में तो बेटियों का स्वेच्छा से संपत्ति को छोड़ने का रिवाज तक है। किंतु कई बार संपत्ति के बंटवारे को लेकर भाई और बहन के बीच का रिश्ता कटुता से भर जाता है। पुत्री के विवाह पश्चात पिता एवं भाई द्वारा उसे उपहार स्वरूप वस्तुएं, कपड़े एवं धन कभी दहेज के रूप में, कभी मायरे के रूप में तो कभी विभिन्न त्योहारों में दी जाने वाली भेंट के रूप में व कभी विदाई के रूप में समय-समय पर दिए जाते हैं। मेरा मानना है कि यदि बेटी का ससुराल पक्ष आर्थिक रूप से कमजोर हो एवं पिता पक्ष संपन्न हो तो अवश्य ही पुत्री को संपत्ति में भागीदारी दी जानी चाहिए। किंतु सामर्थ्य वान बेटी का पिता की संपत्ति पर हक जमाना अनुचित है।

❐ **मीनू नवनीत भट्टड़,** नागपुर

यह पूर्णतः परिस्थिति पर निर्भर

पिता की संपत्ति में बेटियों को बराबरी का हक़ भले ही कानून ने दे दिया हो मगर ये पूर्णतः परिस्थितियों पर निर्भर है। ऐसे ही सामर्थ्यवान या असामर्थ्यवान द्वारा हक़ जताना उसकी मानसिकता पर निर्भर है इसमें भी कानूनी अधिकार की कोई भूमिका नहीं है। सामर्थ्यवान यदि महत्वाकांक्षी है तो वो हक़ ज़रूर लेगी चाहे पीहर वाले औसत आर्थिक स्तर के हो या उच्च आर्थिक स्तर के और असामर्थ्यवान यदि संतोषी है तो वो रिश्तों को अहमियत देते हुए अपना हक़ छोड़ सकती है चाहे पीहर वाले कितने ही उच्च आर्थिक स्तर के हों। इस अधिकार के पक्ष में कई तर्क दिये जाते हैं लेकिन पैतृक अचल सम्पत्तियों और पिता की अर्जित अचल सम्पत्तियों का बँटवारा पेचीदगियों से भरा होता है जिसमें कानूनी अड़चने भी लग जाती हैं। उनमें सामर्थ्यवान बेटी तो कभी अपना समय और पैसा बर्बाद नहीं करेगी। फ़िर उचित-अनुचित कोई मायने नहीं रखता।

❐ **गायत्री नवाल,** जयपुर (राज.)

जिम्मेदारियों पर भी हक जताऐं

बेटा और बेटी को समान मानना एक बहुत ही उच्च विचारधारा है। इससे बेटियों को आगे बढ़ने का हौसला मिलता है।जहाँ तक बात बेटी के पिता की संपत्ति में अधिकार की है, तो मैं इसके पक्ष में नहीं हूं। बंटवारा अगर अधिकारों का हो तो जिम्मेदारी का भी समान रूप से होना चाहिए। बेटी अगर सक्षम नहीं है तो कुछ हिस्सा उनके नाम किया जा सकता है। सुख-सुविधा से सम्पन्न होते हुए प्रलोभन के कारण संपति के लिए कानूनी प्रक्रिया करना उचित नहीं है। अधिकार पाने की राह पकड़ते-पकड़ते रिश्तों की मर्यादा ही ना भूल जाऐं। पिता अपनी स्वेच्छा से संपति का कुछ अंश दे तो वह स्वीकार्य है। रिश्तो में विश्वास और अपनत्व खोकर जीवन बंजर सा लगता है। जिम्मेदारी के लिए अगर हम बेटों से अपेक्षा रखते है तो बेटी को समान हिस्सेदारी कैसे दे सकते है? एक तरफ हमारी सोच यह है कि बेटियों के यहाँ खाना नही चाहिये, रहना नहीं चाहिए, उन पर कैसे माता पिता अपनी जिम्मेदारी सौंपे? तो संपत्ति में हम कैसे अधिकारी बना सकते है? मेरी सोच में यह उचित नहीं है।

❐ **ज्योति माहेश्वरी,** कोटा (राजस्थान)

जरूरत हो तो अनुचित नहीं

वर्तमान में आमतौर पर हिन्दू परिवार में पिता की संपत्ति पर बेटे-बेटियों को समान अधिकार प्राप्त हो गया है। इसके अनुसार बेटे के होने पर भी बेटियों का पिता की संपत्ति पर अधिकार बना रहेगा। अधिकांशतः ब्याहता बेटियाँ अपने पिता की संपत्ति पर अपना अधिकार नहीं जताती हैं और अपने भाईयों को पिता की संपत्ति पर पूरा अधिकार दे देती हैं। परंतु कहीं-कहीं स्थिति विपरीत होती है। ब्याहता बेटियाँ अपने पिता की संपत्ति पर अपना भी हक चाहती हैं। यदि पिता की मौत बिना वसीयत बनाये हो जाऐ जिसका बंटवारा नहीं हुआ है तो इस तरह की संपत्ति में ब्याहता बेटी अपनी हिस्सेदारी लेने का दावा भी कर सकती है जिसे उसके भाई व रिश्तेदार उसको देने से मना नहीं कर सकते। ऐसी परिस्थिति में कभी-कभी रिश्तों में भी दूरियां बढ़ जाती है और जीवन भर खटास आ जाती है। यदि सामर्थ्यवान ब्याहता बेटी वृद्धावस्था में आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु मजबूरी में अपना हक पिता की संपत्ति में मांगती भी है तो वह मेरी राय में उचित है।

❐ **हेमलता गाँधी,** उज्जैन (म.प्र.)

पिछले 2 वर्षों से कोरोना महामारी से देश के जूझते रहने के बाद अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए केंद्र सरकार ने बजट 2022 प्रस्तुत किया है। इसमें कर प्रणाली अंतर्गत प्रत्यक्ष करों में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया गया है। आईये जानें क्या होंगे ये परिवर्तन?

प्रत्यक्ष करों में महत्वपूर्ण परिवर्तन करेगा

बजट 2022

सीए आर.एल. काबरा
अर्थमंत्री अ.भा.मा. महासभा

⏭ व्यापारिक या साहूकारी लोन के बारे में आयकर की पूछताछ होने पर आपको न सिर्फ़ ये साबित करना होगा कि ये लोन जेनयून है बल्कि यह भी साबित करना होगा कि लोन देने वाले के पास यह पैसा कहाँ से आया है? यदि आप यह नही साबित करवा पाए तो आपके द्वारा ली गई लोन की राशि को अघोषित मान कर उस पर टैक्स देना होगा तथा पेनल्टी भी लग सकती है। इसमें रजिस्टर्ड संस्था जैसे वेंचर कैपिटल फंड इत्यादि से लोन नही शामिल होंगे।

⏭ इस बजट के तहत करदाताओं को अगर अपने ओरिजनल इनकम टैक्स रिटर्न में कोई भी बदलाव या अपडेट करना है तो उसके पास दो साल का अतिरिक्त समय होगा। यह नियम 1-04-2022 से लागू होगा। इससे पहले के केसों पर इसका असर नहीं होगा। यदि आप प्रथम वर्ष में रिटर्न रिवाइज करते हैं तो आपको 25 पर्सेंट अतिरिक्त टैक्स देना होगा एवं दूसरे वर्ष में करने पर आपको 50 पर्सेंट अतिरिक्त टैक्स देना पड़ेगा।

⏭ गिफ़्ट सिटी में अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र को सीमा पार विवाद के निराकरण के लिए अंतरराष्ट्रीय ट्रिब्यूनल, विदेशी यूनिवर्सिटी, जहाज़ किराये से देने, और वित्तीय मदद में करों में छूट दी गई है। अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र को एवं ऑफशोर फंड मैनेजमेंट तथा ऑफशोर बैंकिंग के लिए भी करों में छूट की घोषणा की गई है।

⏭ इस बजट ने क्रिप्टो करेंसी और अन्य डिजिटल सम्पत्तियों पर30 प्रतिशत टैक्स लगाने का प्रस्ताव किया है। एक सीमा से अधिक के लेन देन पर 1% TDS लगाने का भी प्रस्ताव है। सरकार ने यह भी खुलासा किया है कि क्रिप्टो करेंसी से होने वाली इनकम पर टैक्स देने का मतलब यह नहीं है कि क्रिप्टो करेन्सी लीगल है। अगले साल से इनकम टैक्स रिटर्न फ़ॉर्म में भी क्रिप्टो आमदनी का कॉलम रहेगा। अब जल्दी ही भारत में भी डिजिटल करेंसी की घोषणा रिज़र्व बैंक करेगी। डिजिटल मुद्रा को आप नक़दी में भी तब्दील कर सकेंगे क्योंकि यह डिजिटल रुपया अभी जो हमारी फिजिकल करेंसी (भोतिक मुद्रा) है उसका ही डिजिटल स्वरूप होगा और इसे अब रिज़र्व बैंक द्वारा नियंत्रित किया जाएगा।

⏭ बोनस एवं डिविडेंड के नये स्ट्रिपिंग प्रावधानों से परिदृश्य में बड़ा बदलाव आ सकता है, क्योंकि अब भारतीय कंपनियों में मॉरिशस से निवेश करने वाले विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक बोनस अलग करने से नई कर व्यवस्था से प्रभावित होंगे। इस बजट में बोनस और डिविडेंड स्ट्रिपिंग प्रावधान जो कि अभी तक म्युचुअल फंडों के लिए लागू थे अब उन्हें रीट की यूनिट, इन्विट एवं ऐ आइ एफ के लिए भी लागू कर दिया गया है।

⏭ बजट में किसी भी तरह के लॉंग टर्म फाइनेंसियल ऐसेट के कैपिटल गेन पर सरचार्ज को 15 पर्सेंट पर सीमित कर देने का प्रस्ताव है। आसान शब्दों में कहें तो लंबे समय के बाद किसी फ़ाइनेंशियल ऐसेट को बेचने पर जितनी भी रक़म का फ़ायदा हो अब उस पर 15 पर्सेंट ही सरचार्ज देना होगा जो कि अभी तक केवल लिस्टेड इक्विटी शेयरों, यूनिटों और बिज़नस ट्रस्ट के यूनिट्स पर ही ये फ़ायदा मिलता था। अन्य तरह के अनलिस्टेड लांग टर्म कैपिटल गेन पर सरचार्ज अभी 37 पर्सेंट तक चले जाते थे, अब ये 15 पर्सेंट पर ही सीमित हो जाएंगे। ESOP धारकों के लिए यह बदलाव अच्छा है एवं इससे स्टार्टअप को बढ़ावा मिलेगा और भारत के स्टार्टअप की परिस्थिति सुधरेगी ।

⏭ इनकम टैक्स की रेड या सर्च की स्थिति में पिछले सालों के बकाया लॉस का अब आप फ़ायदा नहीं उठा सकेंगे।

⏭ अभी तक अगर आप इग्ज़ेम्प्ट आय कमाते है तो उसके लिए खर्चा मंजूर नहीं होता था। अब अगर आपके पास इग्ज़ेम्प्ट ऐसेट है एवं आपको इनकम नही भी मिल रही है तो भी वर्ष दौरान किया खरचा पर आपको डिडक्शन नहीं मिलेगा।

⏭ ब्याज देय को अगर आप अब डिबेंचर या कोई भी दूसरे इंस्ट्रूमेंट में कन्वर्ट कर देते हैं तो उसका खर्चे में मजरा नहीं मिलेगा।

⏭ अगर आप व्यवसाय के लिए कोई खर्चा करते हैं जो कि दूसरे ऐक्ट के तहत अवैधानिक या मना है तो आपको उस खर्चे का डिडक्शन नहीं मिलेगा। जैसे कि फ़ार्मा कंपनी के लिए अगर डॉक्टर को कोई सुविधा या कमीशन दिया जाए तो चूंकि यह अवैधानिक है इसलिए इसका डिडक्शन आपको नहीं मिलेगा।

⏭ अगर आप किसी विदेशी कम्पनी में 26 पर्सेंट से ज़्यादा के भागीदार हैं एवं अभी तक आपके विदेश में किये हुए इन्वेस्टमेंट से अगर कोई डिविडेंड आय होती है तो उस पर सिर्फ़ 15 पर्सेंट टैक्स लगता था अब इसको हटा दिया गया है एवं आपको पूरा टैक्स देना होगा। कई औद्योगिक घरानों का विदेश में होल्डिंग कंपनी के ज़रिए व्यवसाय रहता है अतः उन्हें अब पूरा टैक्स देना होगा। आप अपना हेडक्वार्टर विदेश में रखकर टैक्स प्लानिंग कर सकते हैं ।

⏭ कोविड के दौरान मृत्यु होने पर उनके परिवार को मिलने वाला हर्ज़ाना या कोई सहायता चाहे कंपनी से हो (जहाँ मृत्यु होने वाला आदमी काम करता हो) तो 10 लाख रुपये तक कोई टैक्स नहीं लगेगा बशर्ते मृत्यु के 12 महीने के अंदर आपको ये राशि मिल गयी हो ।

⏭ आयकर विभाग अब हाईकोर्ट एवं सुप्रीम कोर्ट में किसी law पाइंट पर अगर कोई मौजूदा अपील पेंडिंग है तो नया केस नही फ़ाइल करेगा जब तक कि पुराने केस का फ़ैसला नहीं आ जाता। इसमें आयकरदाता की भी स्वीकृति लेनी होगी।

⏭ मैक इन इंडिया को बढ़ावा देने के लिए कुछ वर्ष पूर्व सरकार ने नई कंपनियों के लिये जो मैन्युफैक्चरिंग के लिए प्लांट लगाती है उनकी आय पर सिर्फ़ 15 पर्सेंट टैक्स देने का प्रावधान किया था बशर्त कि वो प्लांट 31/3/2023 के पहले चालू हो जावे अब इस अवधि को बढ़ाकर 31/03/2024 कर दिया गया है ।

⏭ फ़ेस लेस असेसमेंट स्कीम में अगर आपका केस जटिल है तो अब वर्चुअल हीयरिंग का प्रावधान दिया गया है इससे करदाताओं की परेशानियां कम होगी ।

⏭ बजट में अब एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है जिसके हिसाब से अगर आप आपकी कंपनी में किसी को केश या काईड रेस्ट के रूप में (शायद वो आपका एम्प्लोयी हों या बाहर वाला व्यक्ति) 20,000 रुपये से ज़्यादा पर्क्वेज़िट देते हैं तो उस पर 10% से TDS काटना पड़ेगा तथा पाने वाले के हाथ में इसे व्यावसायिक इनकम गिनी जाएगी। इस बदलाव के कारण काफ़ी वाद विवाद खड़े हो सकते है ।

जब कैरियर चुनने का अवसर आता है तो बहुत बड़ी चुनौती सामने खड़ी होती है, सही कैरियर चयन की। आखिर हम चुनें तो क्या चुनें और क्यों चुनें? क्या है जिसमें हमें मिल सकती है, विशिष्ट सफलता।

डॉ. एस.एन. चांडक
नई दिल्ली

युवाओं के लिए तीन आकर्षक

कैरियर CAREER

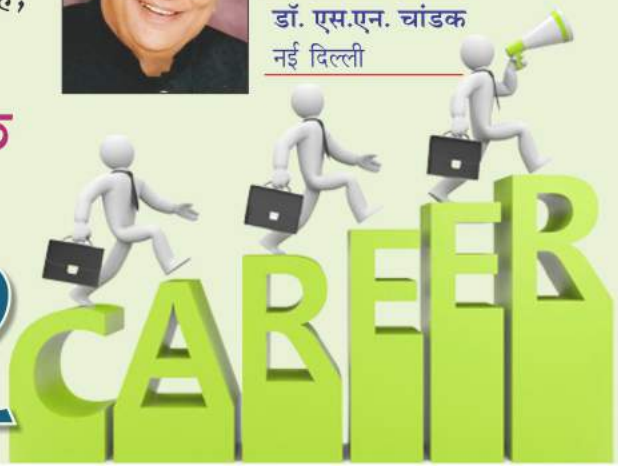

माहेश्वरी समाज को विश्व में अपनी योग्यता, सूझ-बूझ, कार्यकुशलता, ईमानदारी एवं संस्कारों के लिए जाना जाता है। माहेश्वरी समाज के लोगों ने स्वतंत्रता आन्दोलन, देश के औद्योगिक विकास, देश के लोगों के कल्याण के लिये स्कूल, हॉस्पीटल एवं शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करने में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। इन्हीं योग्यताओं के साथ माहेश्वरी समाज की युवा पीढ़ी भी उद्योग-व्यवसाय के साथ-साथ अपना केरियर बनाने की ओर चल पड़ी है। जब हम केरियर की बात करते हैं तो कुछ प्रमुख कैरियर हमारे सामने आते है इनमें राजनीति एवं सिविल सर्विस आदि भी शामिल है, जहाँ पर हमारे बच्चे देश की नीति निर्धारण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है।

❐ राजनीति

राजनीति में जाने के लिए संख्या बल बहुत आवश्यक है। ऐसे सुझाव कई तरफ से आ रहे है कि सब माहेश्वरी अपने नाम के आगे माहेश्वरी लिखें जैसे माहेश्वरी अनिल राठी, माहेश्वरी सुनील भुतड़ा इत्यादि इत्यादि। इन सब से जब जनगणना होगी तो जाति वर्ग की संख्या उठायी जायेगी एवं सारे माहेश्वरी एक जगह होने से हम एक बडे समूह में नजर आएंगे एवं पोलिटिकल पार्टीज को हमारे संख्या बल का टिकट वितरण में ध्यान रखना होगा। माहेश्वरी कैंडिडेट के साथ पूरा समाज वैश्य समुदाय से भी जुड़ा हुआ है क्योंकि हमारे कई माहेश्वरी भाई वैश्य समुदाय के संस्थानों से जुड़े हुए हैं।

❐ सिविल सर्विस

नौकरी में सिविल सर्विस के मुकाबले में कोई नौकरी नहीं गिनी जाती, क्योंकि सिविल सर्वेंट का मान-सम्मान और इसकी पावर अतुलनीय रहती है। प्रति वर्ष करीब 6 लाख से 8 लाख बच्चे सिविल सर्विस में अपीयर होते हैं और करीब 1000-2000 बच्चे सिविल सर्विस में चुने जाते है और इनमें भी आईएएस में आने वालों की संख्या तो 160 - 200 के बीच ही रहती है। आइएएस में आना मुश्किल होता है लेकिन असंभव नहीं होता। श्रीकांत बालदी से लेकर अनेकों नाम हमारे सामने हैं जिन्होंने आईएएस बनकर समाज का एवं देश का गौरव बढ़ाया है। इसी उद्देश्य को लेकर मेरे पोते दिव्य चांडक की दिल्ली में मुखर्जी नगर में यूथ डेस्टिनेशन के नाम से आईएएस की कोचिंग पिछले 3 वर्षों से कार्यरत है। मुझे बताने में खुशी है कि दिव्य माहेश्वरी युवाओं में जो कोचिंग करना चाहते हैं उनको फीस में 25 प्रतिशत की रियायत (छूट) देने के लिए तैयार हैं। इच्छुक युवा उनसे सम्पर्क कर सकते हैं।

❐ फिल्म

युवाओं को कैरियर के बहुत ऑप्शन हैं जैसे-आईटी, आईएम, मॉस कम्युनिकेशन, पत्रकारिता, आईआईटी एवं अन्य, जिन पर विस्तृत चर्चा की जा सकती है। पर विशेषकर मेरा ध्यान एक अन्य उद्योग की तरफ गया जहाँ नाम है एवं पॉपुलैरिटी है। पिछले दिनों में इसी संदर्भ में मेरी मुलाकात राजस्थान के मेडता के रहने वाले हमारे अपने प्रिय के. सी. बाकोडिया जी से हुई जो कि बहुत सीनियर फिल्म प्रोड्यूसर एवं डायरेक्टर हैं। उनके बारे में कहते हैं वे जिसके ऊपर हाथ रख देते है वो देश का महानायक एवं कलाकार बन जाता है। जब मैंने हमारे माहेश्वरी युवाओं के बारे में जिक्र किया तो उन्होंने सहर्ष मेरे प्रस्ताव को स्वीकार किया एवं बताया कि जिन माहेश्वरी युवा में अभिनव की या गाने की विलक्षण क्षमता हो उन्हें आप मेरे पास भेज सकते है। हालांकि इस उद्योग में भी सफलता पाना बहुत मुश्किल होता है पर जिन युवाओं में दृढ़ निश्चय, संकल्प शक्ति और जज्बा हो तो वो बच्चे अपनी मंजिल पर पहुंच सकते हैं।

भारतीय संस्कृति के मनीषियों ने नारी का कई रूपों में वर्णन किया है। ऐसे में वर्तमान दौर में भी नारी का महत्व प्रतिपादित होना अनिवार्य है और वह भी निष्पक्ष रूप से। नारी के संदर्भ में इस कार्य को अंजाम दे सकती है, तो सिर्फ नारी, क्योंकि न तो उसमें स्वार्थ होता है और न ही नारी के प्रति दया भावना। तो आईये वर्तमान दौर के परिप्रेक्ष्य में देखें नारी की स्थिति ख्यात चिंतक मधु बाहेती की जुबानी।

मैं अपने पति की सहधर्मिनी और संतान की जननी हूं। मुझसा संसार में और कौन है? सारा जगत मेरा कर्म क्षेत्र है, मैं स्वाधिनी हूं, क्योंकि मैं अपनी इच्छानुरूप कार्य कर सकती हूँ। मैं दुनिया में किसी से नहीं डरती, मैं महाशक्ति की अंश हूं। मेरी शक्ति पाकर ही मनुष्य शक्तिमान है। मैं स्वतंत्र हूं पर उच्छृंखल नहीं हूं। मैं शक्ति का उद्गम स्थान हूं परन्तु अत्याचार के द्वारा अपनी शक्ति को प्रकाशित नहीं करती। मैं सिर्फ कहती ही नहीं करती भी हूं, मैं काम ना करूं तो संसार अचल हो जाए। सब कुछ करके भी मैं अहंकार नहीं करती।

मेरा कर्म क्षेत्र बहुत बड़ा है। वह घर के बाहर भी है और अंदर भी। घर में मेरी बराबरी की समझ रखने वाला कोई है ही नहीं। मैं जिधर देखती हूं उधर अपना कर्तव्य पाती हूँ। मेरे कर्तव्य में बाधा देने वाला कोई नहीं है क्योंकि वैसा शुभ अवसर मैं किसी को देती ही नहीं। पुरुष मेरी बात सुनता है क्योंकि मैं गृह स्वामिनी जो हूं, मेरी बात से गृह संसार उन्नत होता है। इसीलिए पति के संदेह का तो कोई कारण है ही नहीं और संतान, वह तो मेरी है ही। उसके लिए तो हम दोनों व्यस्त हैं। इन दोनों को पति को और संतान को अपने वश में करके मैं जगत में अजय हूं। डर किसको कहते हैं यह मैं नहीं जानती। मैं पाप से घृणा करती हूं अतएव डर मेरे पास नहीं आता।

संसार में मुझसे बड़ा और कौन है? मैं तो किसी को भी नहीं देखती, जगत में मुझसे छोटा भी कौन है उसको भी कहीं नहीं खोजती हूं। पुरुष दंभ करता है कि मैं जगत में प्रधान हूँ, बड़ा हूं। मैं किसी की परवाह नहीं करता। वह अपने दम्भ और दर्प से देश को कँपाना चाहता है। वह कभी आकाश में उड़ता है, कभी सागर में डुबकी मारता है और कभी रणभेरी बजाकर आकाश - वायु को कँपा कर दूर-दूर तक दौड़ता है परन्तु मेरे सामने तो वह सदा छोटा ही है क्योंकि मैं उसकी मां हूं। उसके उग्र रूप तो हजारों लाखों हैं परंतु मेरे उंगली हिलाते ही वह चुप हो जाने के लिए बाध्य है। मैं उसकी मां केवल बचपन में ही नहीं सर्वदा और सर्वत्र हूँ। जिसका दूध पीकर उसकी देह पुष्ट हुई है, उस मातृत्व के इशारे पर सर झुका कर चलने के लिए बाध्य है।

मैं पढ़ती हूं संतान को शिक्षा देने के लिए, पति के थके मन को शांति देने के लिए। मेरा ज्ञान जीवन में विवेक का प्रकाश फैलाने के लिए है। मैं गाना-बजाना सीखती हूं शौकीनों की लालसा पूर्ण करने के लिए नहीं वरन नर-हृदय को कोमल बनाकर उसमें पूर्णता लाने के लिए। पुरुष की सोई संवेदना जगाने के लिए मैं स्वयं नहीं नाचती, वरन जगत को नचाती हूँ।

मैं सीखती हूँ सिखाने के लिए, शिक्षा के क्षेत्र पर मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। मैं सृजन करती हूं आदर्श का। बनाती हूं मानव को महामानव। मैं दूसरी भाषा सीखती हूं पर बोलती अपनी ही भाषा हूं और मेरी संतान उसे गौरव के साथ मातृभाषा कहती है। क्या मुझे पहचान लिया है? नहीं तो फिर पहचान लो मैं नारी हूं।

मैं खड्गधारिणी काली हूं पाखंडी का वध करने के लिए, मैं दस भुजाओं वाली दुर्गा हूं संसार में नारी शक्ति को जगाने के लिए। मैं लक्ष्मी हूं संसार को सुशोभित करने के लिए। मैं सरस्वती हूं विद्या वितरण के लिए।

रामायण और महाभारत में मेरी ही कथाएं हैं। इनमे मेरा ही गान हुआ है। यही कारण है कि जगत का और जगत के लोगों को जीवन विद्या का शिक्षण देने में इनके समान अन्य कोई भी ग्रंथ समर्थ नही हुआ है।

माहेश्वरी समाज के मूल संस्कारों और रीति रिवाजों से करायेगी पहचान

ऋषि मुनि प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

हमारे संस्कार हमारे रीति रिवाज

जिसमें पाऐगें आप माहेश्वरी समाज में प्रचलित रीति-रिवाजों के साथ ही जन्म संस्कार, मृत्यु संस्कार और विवाह संस्कार तथा माहेश्वरी परम्पराओं के विशिष्ट पर्वों गणगौर, सातुड़ी तीज तथा ऋषि पंचमी पर केन्द्रीत विशिष्ट जानकारी।

विशेष छूट के साथ उपलब्ध
Rs. 125/-
Rs. 100/-

*महिला संगठनों के लिए विशेष छूट के साथ उपलब्ध

ऋषिमुनि प्रकाशन
90, विद्या नगर, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.)
94250 91161, 91799-28991
rishimuniprakashan@gmail.com

amazon पर उपलब्ध

खुश रहें - खुश रखें

अपने मूल पर टिके रहें, जड़ों से नहीं कटें

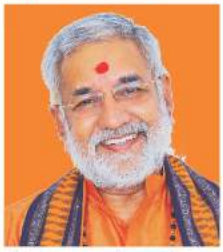

पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबन्धन गुरु)

हर मनुष्य के दो जन्म हुए हैं, एक शरीर के तल पर, दूसरे आत्मा के तल पर। हमने जन्म देने वाली स्त्री को माँ और जिस धरती के खंड पर जन्म लिया गया उसे मातृभूमि कहा है। अपने मूल पर टिके रहना, अपनी जड़ों से न कटना यह एक नैतिक दायित्व, मूल्य है। वर्षों में सब कुछ बदल जाता है, मूल्य नहीं बदलते। मातृभूमि के साथ-साथ आपका परिवार भी आपकी जड़ें हैं, आपकी पहचान है, इसलिए प्रेमपूर्वक उससे जुड़े रहें।

अपनी मातृभूमि से प्रेम करने के भाव का अर्थ है, जहां हमारा जन्म हुआ, उससे जुड़े रहना। आध्यात्मिक भाषा में यूं कहा जाए कि आत्मा के तल पर जन्म हुआ है तो आत्मा से जुड़े रहें, अपने भीतर उतरें, थोड़ें स्वयं के निकट बैठें। सारी दुनिया घूमें परंतु अपनी मातृभूमि, अपने परिवार को नहीं भूलें। वैसे ही शरीर पर टिकें, संसार में घूमें पर अपनी आत्मा को विस्मृत नहीं करें।

अमीर खुसरो ने फारसी में नुह सिपिहर नामक मस्नवी में लिखा है कि हिंदुस्तान मेरी मातृभूमि है। इसलिए इससे मुझे बहुत प्रेम है। हजरत पैगंबर ने भी फरमाया है, देश प्रेम धार्मिक निष्ठा का ही अंग है। अमीर खुसरो तो यहां तक लिख गए कि दिल्ली हजरते देहली है। देहली की खूबसरती यदि मक्का शरीफ सुन ले तो वह भी आदरपूर्वक हिंदुस्तान की तरफ अपना रुख मोड़ ले। इस्लामी दीन में मक्का शरीफ का रुतबा दुनिया जानती है। इसकी तुलना दिल्ली से करने की हिम्मत अमीर खुसरो ने इसलिए की थी कि वे मातृभूमि के प्रेम को दर्शाना चाहते थे।

भारत में इस्लाम की नींव मोहम्मद गौरी ने डाली थी। कई मुसलमान शासकों ने भारत के सांस्कृतिक, धार्मिक दृश्य को तहस-नहस किया तो कई मुस्लिम बादशाहों ने इसे संवारा भी। इसीलिए बहुत कुछ गुजर जाता है पर जो रह जाता है, वह है मूल्य। खुसरो जैसे लोग उन्हीं मूल्यों पर अपनी कलम चलाते हैं। मातृभूमि से प्रेम का एक ऐसा भी अर्थ है कि अपने भीतर उतरो, यहीं खुदा है, ईश्वर है और वह सब कुछ है जैसा हम होना चाहते हैं।

जल देवता

वेद-पुराण-कुरान-बायबिल सहित सभी धर्मग्रन्थों ने भी कहा है- 'जल है तो कल है'। इन्हीं सन्दर्भों से सन्दर्भित **डॉ. विवेक चौरसिया** के जल पर केन्द्रित लेखों का संग्रह 'जल देवता'.

जिनमें आप पायेंगे न सिर्फ भारतीय संस्कृति बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकारी है जल की महत्ता.

Rs. 150/-
डाक खर्च सहित

खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद

55 के बाद की जिन्दगी सपनों का अन्त नहीं बल्कि उन्हें साकार करने का स्वर्णिम समय है. बस इसके लिए जरूरी है खूबसूरती से जीना कैसे जीएँ... इसी के सूत्र बताती है

डॉ. एच.एल. माहेश्वरी की पुस्तक "खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद".

Rs. 120/-
डाक खर्च सहित

आपसे कहा जाता है -

- संकट निवारण हेतु पानी में नारियल बहा दें।
- सांप दिखे तो काम टालें।
- नल को पानी टपकता न छोड़ें।

... और भी बहुत कुछ **तो फिर...**

ऐसा क्यों?

aisa kyon

जिसमें छुपा है आपके हर क्यों का जवाब

प्रश्न उठना स्वाभाविक है - "**ऐसा क्यों?**" लेकिन इसका उत्तर देगा कौन? **इसका उत्तर देगी गहन अध्ययन से संजोई पुस्तक**

Rs. 100/-
डाक खर्च सहित

ऋषि मुनि प्रकाशन

90, विद्यानगर, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 0734-2526561, 2526761, मो. 094250-91161

फ्रूटस डिलाइट सेंडव्हिच

बिना ओवन, न पकाने का झंझट, सिर्फ 10 मिनट मे तैयार खाने में लज़ीज और बच्चों और बडो का फेवरेट ये सैडविच। होली खेलते समय खाने का भी आंनद लिजीए सबको अच्छा लगेगा। ताजे फलों के स्वाद और गुणों से भरपूर फटाफट सैडविच बनाते हैः-

सामग्रीः तीन स्लाइस सैंडविच ब्रेड, एक कप व्हिप्ड क्रीम, एक कप बारीक कटे फल (सेव,स्ट्रॉबेरी, पाइनएप्पल, ऑरेंज, प्लम, कीवी इत्यादि) एक चम्मच चीनी, एक चम्मच पानी, 1 चम्मच मिक्स फ्रूट जेम

विधिः सबसे पहले ब्रेड के किनारे काट ले। पानी में चीनी मिलाकर पतला घोल तैयार कर लें हमारा शुगर सिरप तैयार हो जाएगा। व्हिप्पड़ क्रीम को कोण मे भर ले। अब एक ब्रेड लेकर पहले उस पर थोडा शुगर सिरप लगाये अब दूसरी पर जैम की पतली लेयर लगाये। अब इस पर व्हिप्पड़ क्रीम लगाये और बारीक कटे फल फेला दे। एक ब्रेड से ढक दे। फिर से शुगर सिरप, जेम, क्रीम व फल फैलाये व तीसरी ब्रेड से ढ़क दे। अब ब्रेड के चारो तरफ व्हिप्पड़ क्रीम लगाये। किनारो पर क्रीम से डिज़ाइन बनाये व बीच में फल भर दे। थोड़ी देर के लिए फ्रीज़ मे रख दे। हमारा फ्रूट सैडविच तैयार हैं।

शेफ पूनम राठी, नागपुर
विविधा कुकिंग क्लासेस
9970057423

आपणी बोली

- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

ईर्ष्या सूं बचो

खम्मा घणी सा हुकम आज आपा बात कर रियाँ हा... ईर्ष्या री... हुक्म ईर्ष्या करण वाळा लोग कदैई खुशहाल जीवन नहीं जी सकें... वे मनुष्य खुद रे जीवन ने तो तहस नहस करें ही औरों रे जीवन मे भी खलबली मचा देवे ।

हुकम, अक्सर आपा समाज में देखा कोई आगे बढ़ रियो है किन्ही रो अच्छो हूँ रियो है तो अधिंकाश लोग एड़ा देखण ने मिली जो पेला या सोची की उण शख्स ने निचो किकर दिखाणों.. किकर समाज में ऊनि मज़ाक बणा ने ऊनि खुशियाँ किकर छीननी। बहुत कम लोग हुवें जो किनेही आगे बढ़ता देख वाणी उन्नति देख आंनद रो अनुभव करें और खुश हुवें।

हुकम ,आपने नहीं लागे आपाणी ईर्ष्या ही आपाने जलावें बाद में सामने वाळे रो नुकसान हुवें क्योंकि... ईर्ष्या करता टाइम आपाणे दिमाग री नसा सिकुड़ जावें जिनो प्रभाव अंतर्मन पर पड़े.. आपा चिड़चिड़ा हूँ जावा। घर रे लोगा रे साथे गलत व्यवहार हूँ जावें और हुकुम झगडालूँ लोग किनेही भी अच्छा नहीं लागें.. सही है न ..

म्हारो मानणों है यदि आप कीन्हे भी खुशियां में खुश हुने और आगे बढ़ावण में प्रोत्साहन देवोला तो इना दो फायदा हुवेला एक तो समाज मे आपरी छवि अच्छी बणी दूसरी आपने अंदरुली खुशी रो अहसास हुवेला। एक सकारात्मक ऊर्जा रो विकास आपरे अंदर आवेला ।

ईर्ष्या मनुष्य ने उन्ही तरह खा जावे ज्यों कपड़े ने कीड़ों ।

ईर्ष्या रा विकार अंतर्मन में बैठ जावे तो आसानी सूं नहीं जावें उणमें स्वार्थ और अहंकार बढने सब कुछ नाश कर देवे .. सच कहूं हुकम क्रोध ने मन मे स्थान देवणों कई तरह रा मानसिक क्लेशों ने तथा रोगों ने मोल लेवणों है। अतः इणसूं हमेशा सावधान रेवणों।

मुलाहिजा फ़रमाइये

▸▸ ज्योत्सना कोठारी
मेरठ

- नाज नखरे काश कलम के भी होते
  लिखते-लिखते नीभ टूट जाये करती
  तो एक मिसाल बनती कलम भी
- शक न कीजिये हमारी कलम पर
  हम लिखते नही है हुनर बिखेरते हैं लोगो के दिलो पर
- खुद से लड़ना, इतना आसान नहीं, दुनिया में।
  जिगर भी सख्त और जमीर भी, जिंदा चाहिए।।
- मुसीबतों से निखरती है शख्सियत यारों,
  जो चट्टानों से ना उलझे, वह झरना किस काम का।
- कभी खुशहाल, कभी उदास, कभी जीत तो कभी हार होगी,
  यह जिंदगी की सड़क है धीरे-धीरे पार होगी।
- वो गलतियां बहुत दर्द देती है,
  जिनकी माफी मांगने का वक्त निकल चुका हो !
- मैं अपने दुश्मनों के वास्ते भी काम आता हूँ,
  कोई इल्जाम देना हो तो वे मुझे ही याद करते है !!

कार्टून कौतुक

राशिफल
संकेत सितारों के

पं. विनोद रावल
(ज्योतिर्विद)
फोन : 0734-2515326

मेष

यह माह आपके लिए कुछ परेशानी से युक्त रहेगा परंतु स्वास्थ्य में सुधार होगा। संतान एवं परिवार का स्नेह तथा सहयोग प्राप्त होगा। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। आर्थिक कष्ट निवारण होगा। आय के साधनों में वृद्धि के योग प्रबल रहेंगे। भूलना स्वभाव में बना रहेगा। भूमि भवन से संबंधित कार्यों में सफलता मिलेगी। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। पद प्रतिष्ठा एवं सम्मान में वृद्धि के योग प्रबल रहेंगे। मित्रों से वैचारिक मत अंतर हो सकते हैं। व्यय की अधिकता बनी रहेगी। संतान के कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।

वृषभ

यह माह आपको सफलता प्रदान करने वाला होगा। विरोधी परास्त होंगे। राजकीय कामों में सफलता मिलेगी। खर्च की पूर्ण व्यवस्था हो जावेगी। नौकरी की प्राप्ति होगी। पद एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नवीन कार्य व्यवसाय के योग प्रबल रहेंगे। भगवान के प्रति आस्था बढ़ेगी। लंबी यात्रा के योग रहेंगे। राजकीय पक्ष की अनुकूलता होने से समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। धार्मिक यात्रा के योग रहेंगे। किसी शुभ एवं मांगलिक कार्यों में भाग लेंगे। भूमि भवन से संबंधित प्रकरण में सफलता मिलेगी। परिवार में विवाह संबंध का निर्धारण होगा। अपनी सूझ बूझ से एवं युक्ति युक्त तरीके से किसी उलझे हुए कार्यों में सफलता मिलेगी।

मिथुन

यह माह आपको सामाजिक एवं पारिवारिक कार्य में सफलता प्रदान करने वाला होगा। कार्य व व्यवसाय में भी आर्थिक संपन्नता में वृद्धि होगी किंतु अनायास खर्च के भी आने की संभावना प्रबल बनी रहेगी। लंबी यात्रा के योग रहेंगे। मन हर्ष उल्लास से परिपूर्ण रहेगा। संतान के कार्यों को लेकर चिंतित तो रहेंगे परंतु सफलता मिल जाएगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। भूमि भवन से संबंधित प्रकरणों में सफलता मिलेगी। विरोधी परास्त होंगे। धार्मिक यात्रा के योग रहेंगे। शुभ एवं मांगलिक कार्य में भाग लेंगे। मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। तेजी मंदी से संबंधित व्यवसाय में लाभ होने के योग प्रबल रहेंगे।

कर्क

यह माह आपके लिए विरोधी पर विजय प्राप्ति के लिए उत्तम रहेगा। मित्रों एवं परिवारजनों का सहयोग प्राप्त होगा। आर्थिक रूप से संपन्नता में वृद्धि करेगा। यात्रा में खर्च के योग प्रबल रहेंगे। प्रेम प्रसंग में सफलता मिलेगी। दांपत्य जीवन में अनुकूलता रहेगी। जमीन से जुड़े एवं संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में सफलता मिलेगी। किसी गूढ़ रहस्य ज्ञान प्राप्ति में अनुकूलता प्राप्त होगी। शिक्षा के क्षेत्र में भी विद्यार्थियों को श्रेष्ठ सफलता प्राप्ति के योग रहेंगे। राजनीतिक संपर्क का लाभ मिलेगा। हड्डी एवं दांतों से कष्ट के भी योग रहेंगे। पाचन तंत्र से परेशानी उत्पन्न हो सकती है।

सिंह

यह माह आपके लिए सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदान करने वाला रहेगा। संतान के कार्य में सफलता मिलेगी। विरोधियों को कब कहां और कैसे परास्त करना इसमें आपकी दक्षता रहेगी। मौज मस्ती एवं आनंद में समय व्यतीत होगा। स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद उठाएंगे। गुप्त शत्रु आपके विरुद्ध व्यू रचना रखेंगे किंतु सफलता नहीं मिल पाएगी। विवाह संबंध, धार्मिक, शुभ व मांगलिक कार्य के आयोजन के प्रबल योग बने रहेंगे। मानसिक तनाव जरूर रहेगा। बड़ों के प्रति मन में श्रद्धा आस्था, निष्ठा भाव रहेंगे। राजनीतिक संपर्क का लाभ मिलेगा। संपत्ति में वृद्धि के योग रहेंगे।

कन्या

यह माह आपके लिए श्रेष्ठ फलदाई रहेगा। संपत्ति से संबंधित विषयों में सफलता अर्जित होगी। वाहन सुख, मकान सुख में वृद्धि के योग प्रबल रहेंगे। किसी कला के क्षेत्र में सफलता अर्जित होगी। संतान से संबंधित रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। आय में वृद्धि के योग प्रबल रहेंगे। विरोधी डरे-डरे से रहेंगे एवं विजय प्राप्ति के योग प्रबल रहेंगे। हर्ष उल्लास का वातावरण निर्मित होगा। विवाह संबंध निर्धारण के योग प्रबल रहेंगे। दांपत्य जीवन श्रेष्ठ एवं अनुकूलता रहेगा। हर्षोल्लास का वातावरण निर्मित होकर मनोरंजन एवं आमोद-प्रमोद के साधनों का लुफ्त उठाएंगे। व्यय अधिकता तो रहेगी परंतु आपूर्ति भी हो जाएगी।

तुला

यह माह आपके लिए लेखन प्रकाशन की दृष्टि से श्रेष्ठ फल प्रदान करेगा तुरंत एवं श्रेष्ठ जवाब देने में आप की दक्षता रहेगी। संतान के रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। व्यस्तता अधिक रहेगी। स्वादिष्ट व्यंजनों का लुफ्त उठाएंगे। वाहन सुख, मकान सुख में वृद्धि के योग प्रबल बने रहेंगे। वाणी पर नियंत्रण रखना भी आवश्यक रहेगा। स्पष्टवादीता की वजह से किसी से मनमुटाव होने की संभावना अधिक रहेगी। शुभ, धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेंगे। पत्नी के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। अनावश्यक तनाव न पालें तो अधिक श्रेष्ठ रहेगा। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी।

वृश्चिक

यह माह आपको श्रेष्ठ वक्ता के रूप में पहचान कराएगा। इसके कई लाभ भी मिलेंगे। विभिन्न प्रकार के लोगों से मुलाकात होगी। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। न्यायालय के प्रकरण में बाधा तो आएगी परंतु अंत में सफलता मिल जाएगी। पद एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मनचाहा स्थान परिवर्तन होगा। भाई परिवारजनों का स्नेह तथा सहयोग प्राप्त होगा। चुनौतीपूर्ण कार्य को युक्तियुक्त तरीके से करने में सफलता अर्जित होगी। कार्य व्यवसाय में कुछ तनावपूर्ण कार्य आएंगे परंतु आप अपनी कार्य दक्षता से उसे पूर्ण कर लेंगे। समय की बर्बादी होगी। संतान के कार्य में सफलता मिलेगी। विरोधी परास्त होंगे।

धनु

यह महा आपको शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाला होगा। पुराने रोग से मुक्ति मिलेगी। संतान तथा जीवनसाथी का सहयोग प्राप्त होगा तथा उनके कार्यों में सफलता भी अर्जित होगी। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। शासन में रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। इच्छित कार्य के पूर्ण होने से मन प्रसन्न एवं प्रसन्नता का वातावरण निर्मित होगा। स्थाई संपत्ति में वृद्धि के योग प्रबल रहेंगे। भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च करेंगे। धार्मिक यात्रा के योग रहेंगे। भाई से वैचारिक मतांतर उभर सकते हैं। बड़ी नौकरी के योग रहेंगे। अचानक आय प्राप्ति के योग प्रबल रहेंगे।

मकर

यह माह आपको प्रशासनिक दृष्टि से श्रेष्ठ रहेगा। नेतृत्व क्षमता में वृद्धि होगी। भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च करेंगे। संपत्ति में वृद्धि के योग प्रबल रहेंगे। आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आगामी कुछ ही महीनों में आर्थिक संपन्नता के योग प्रबल रहेंगे। विरोधी परास्त होंगे। आपके द्वारा दी गई सलाह सभी लोगों को कारगर सिद्ध होगी। स्पष्टवादीता के कारण मित्रों से/अपनों से वैचारिक मतांतर हो सकते हैं। गूढ़ रहस्यमय ज्ञान की प्राप्ति के योग रहेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में अनुकूलता रहेगी। जीवनसाथी का सहयोग प्राप्त होगा। चुनौतीपूर्ण कार्यों में सफलता अर्जित होगी।

कुम्भ

यह माह आपके लिए शुभ फलदाई रहेगा। मानसिक तनाव एवं चिंता तो रहेगी परंतु कार्यों में अधिक परिश्रम के उपरांत सफलता अर्जित हो जाएगी। शुभ एवं मांगलिक कार्यों में भाग लेंगे। धार्मिक यात्रा के योग रहेंगे। संतान के कार्य में सफलता मिलेगी। शिक्षा के क्षेत्र में अनुकूलता रहेगी। संपत्ति से संबंधित प्रकरण में व्यवधान उपस्थित होगा। चुनौतीपूर्ण कार्य को युक्तियुक्त तरीके से करने में आपको सफलता प्राप्त होगी। भाग्य रो-रोकर साथ देगा। राजकीय पक्ष से परेशानी के साथ सफलता मिलने के योग प्रबल रहेंगे। व्यय की चिंता बनी रहेगी। भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च करना होगा।

मीन

यह माह आपके लिए जान पहचान के क्षेत्र में बढ़ोतरी करने वाला होगा। राजकीय पक्ष से अनुकूलता मिलेगी एवं रुके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। शत्रु आपके नाम से भयभीत होंगे तथा आर्थिक संपन्नता में सुधार होगा। कार्य व्यवसाय में वृद्धि होगी। नवीन नौकरी एवं पद प्रतिष्ठा में वृद्धि के साथ-साथ इच्छित स्थानांतरण के योग प्रबल रहेंगे। धार्मिक यात्रा शुभ काम मांगलिक कार्य में भाग लेंगे। प्रशासनिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। भूमि भवन से लाभ मिलेगा। स्थाई संपत्ति में वृद्धि के योग रहेंगे। भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च करेंगे।

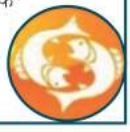

सुंदर बालोंसे ये खेल कैसा,
बाल चमके नहीं वह तेल कैसा!
धूतपापेश्वर
१८७२ से आयुर्वेद सेवा
धूतपापेश्वर
कांचन®
केश तेल
॥ शिरोभ्यंगार्थ ॥
Kanchan HAIR OIL
स्वस्थ केश एवं उनकी जडों के लिए
आयुर्वेद उपाय
F22KHOAJ6.5x9.5H002
श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड शास्त्रोक्त • मानकीकृत • सुरक्षित • उत्तम गुणवत्ता • १४५+ वर्षोंकी आयुर्वेद परंपरा
For Health & Trade Enquiries Tollfree: 1800 22 9874 | Buy online at www.sdlindia.com/consumerayurved

Aditya Birla Group: Making a life changing difference

We work in 7,000 villages. Reach out to 9 million people. A glimpse:

HEALTHCARE

Over 100 million Polio vaccinations

5,000 Medical camps / 22 Hospitals: 1 million patients treated

Over 75 deaf and mute children moved from the world of silence to the sound of music through the cochlear implant.

Reach out to over 4,000 children. Extending financial support for the chemotherapy sessions. Encouraging them in a holistic manner to get back quickly on the road to recovery.

Engaged in prevention of cervical cancer through the administration of the HR-HPV vaccine in Maharashtra. Over 4,000 girls have been vaccinated.

More than 6,600 persons had their vision restored through the Vision Foundation of India

100,000 persons tested on 32 health parameters through HealthCubed

EDUCATION

Our 56 schools accord quality education to 46,500 students

Mid-day meals provided to 74,000 children

Solar lamps given to 4.5 lakh children in the hinterland

Foster the cause of the girl child through 40 Kasturba Gandhi Balika Vidyalayas

SUSTAINABLE LIVELIHOODS

100,000 people trained in skill sets

45,000 women empowered through 4,500 SHGs

200,000 farmers on board our agro-based training projects

And much more is being done through the Aditya Birla Centre for Community Initiatives and Rural Development, spearheaded by Mrs. Rajashree Birla. Because we care.

NUMBERS MEAN A LOT
BUT A SMILE MEANS EVERYTHING!

ADITYA BIRLA GROUP
Engage. Uplift. Empower

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2020-2022
Despatch Date - 02 March, 2022

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com